04 - पटका सदस्यता राजनीति का अधः पतन

05 - भारत में विकसित किशोर न्याय प्रणाली और पुणे प्रकरण

06- बंटाधार योजना बनकर रह गई है हरदौली जल आवर्धन योजना

07- प्रकृति मित्र जीवनशैली से घटेगा धरती का ताप

A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 3 जून, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 266 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

एग्जिट पोल : आक्रामक प्रचार के बाद भी कांग्रेस की संभावनाएं क्षीण

मौसमी दास गुप्ता

शनिवार को जारी ज्यादातर एग्जिट पोल के मुताबिक एनडीए 2024 के लोकसभा चुनाव में भारी बहुमत से जीतने वाली है। इस तरह से संभावना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बन सकते हैं। इसके मुताबिक जोरदार प्रचार करने के बावजूद, कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडिया ब्लॉक के दूसरे स्थान पर रहने का अनुमान है, हालांकि एनडीए की तुलना में इसकी सीटें काफी कम हैं। हालांकि, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि एग्जिट पोल हमेशा सटीक नहीं होते हैं और पहले भी यह गलत साबित हो चुके हैं। लोकसभा चुनावों के आधिकारिक नतीजे 4 जून को घोषित किए जाएंगे।

हमने पांच एग्जिट पोल देखे- इंडिया टुडे-माईएक्सिस, न्यूज 24-टुडेज चाणक्य, इंडिया टीवी-सीएनएक्स, एबीपी-सीवोटर और टाइम्स नाउ-ईटीजी। ये सभी संकेत दे रहे हैं कि एनडीए को 350 से अधिक सीटें मिलने की संभावना है, जिनमें से तीन ने तो 400 से अधिक सीटें मिलने का भी अनुमान लगाया है। इनमें से न्यूज 24-टुडेज चाणक्य ने एनडीए को 400 सीटें, इंडिया ब्लॉक को 107 सीटें और अन्य दलों को 33 सीटें मिलने का अनुमान लगाया है। इंडिया टीवी-सीएनएक्स के पूर्वानुमान में एनडीए को 371-401 सीटें, इंडिया ब्लॉक को 109-139 सीटें और अन्य को 28-38 सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया है।

इसी तरह इंडिया टुडे-माई एक्सिस के एग्जिट पोल में एनडीए को 361-401 सीटें, इंडिया अलायंस को 131-166 सीटें और अन्य को 8-20 सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया है। एबीपी-सीवोटर ने एनडीए को 353-383 सीटें, भारत को 152-182 सीटें और अन्य को 4-12 सीटें मिलने का अनुमान लगाया है। टाइम्स नाउ-ईटीजी के अनुमानों में एनडीए को 358 सीटें, भारत को 152 सीटें और अन्य को 33 सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया है। बीजेपी ने 2019 में 303 सीटें जीती थीं।

लगभग सभी पांच एग्जिट पोल यूपी में बीजेपी की जीत का अनुमान लगा रहे हैं। लेकिन बिहार और राजस्थान में पार्टी कुछ सीटें खो सकती है। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश में, सभी पांचों ने एनडीए की शानदार जीत का अनुमान लगाया है, जिसमें बीजेपी को 60 से अधिक सीटें मिलने की उम्मीद है। पार्टी ने 2019 में राज्य की 80 में से 62 सीटें जीती थीं। न्यूज24-टुडेज चाणक्य के अनुसार, भाजपा राज्य की 80 सीटों में से 68 और कांग्रेस-समाजवादी पार्टी गठबंधन 12 सीटें जीतेगी, जबकि इंडिया टीवी-सीएनएक्स ने भाजपा को 62-68 सीटें और सपा को 10-16 सीटें मिलने का अनुमान लगाया है।

टाइम्स नाउ-ईटीजी ने भाजपा को 69 और सपा को 11 सीटें जीतते हुए दिखाया है। इसी तरह बिहार में भी पोलस्टर भाजपा की बढ़त का अनुमान लगा रहे हैं, हालांकि 2019 की तुलना में उनकी संख्या कम होगी। इंडिया टुडे-मायएक्सिस सर्वे के अनुसार, भाजपा को 13-15 सीटें और उसके सहयोगी जनता दल (यूनाइटेड) को 9-11 सीटें मिलने का अनुमान है। बिहार में कुल 40 सीटें हैं। 2019 में एनडीए ने 39 सीटें जीती थीं, जबकि कांग्रेस को सिर्फ एक सीट मिली थी।

हालांकि, विपक्षी गठबंधन की स्थिति 2019 के मुकाबले बेहतर होने की संभावना है। इंडिया टुडे-माय एक्सिस सर्वे के अनुसार, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) को 6-7 सीटें मिलने की संभावना है, जबकि कांग्रेस को सिर्फ 1-2 सीटें मिलने की संभावना है। एग्जिट पोल ने भविष्यवाणी की है कि भाजपा उत्तर में अपनी खोई सीटों की भरपाई दक्षिण में होने वाली बढ़त से करेगी। केरल में, न्यूज 24-टुडेज चाणक्य ने कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) को 15 सीटें, लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) को 1 और भाजपा को 4 सीटें मिलने का अनुमान लगाया है।

तमिलनाडु में टाइम्स नाउ-ईटीजी का अनुमान है कि राज्य की 39 सीटों में से 34-35 सीटें सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) को मिलेंगी, 2-3 सीटें भाजपा को और 2 सीटें अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (एआईएडीएमके) को मिलेंगी। न्यूज 24-टुडेज चाणक्य ने डीएमके को 29 सीटें और भाजपा को 10 सीटें दी हैं। आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में भी भाजपा के 2019 के मुकाबले बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है।

जबकि कुछ एग्जिट पोल भाजपा और एन. चंद्रबाबू नायडू की तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) और पवन कल्याण की जन सेना के गठबंधन के लिए शानदार जीत की भविष्यवाणी कर रहे हैं, वहीं टाइम्स नाउ-ईटीजी जैसे अन्य एग्जिट पोल का अनुमान है कि आंध्र प्रदेश की 25 सीटों में से 14 सीटें युवजन श्रमिक रायथू कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) को और 11 सीटें भाजपा को मिलेंगी। कर्नाटक में भी भाजपा को बड़ी बढ़त मिलती दिखाई देगी। पांचों में से, न्यूज 24-टुडेज चाणक्य सबसे आशावादी है, जिसने 28 में से 24 सीटों पर भाजपा की जीत और 4 पर कांग्रेस की जीत की भविष्यवाणी की है। इंडिया टुडे-मायएक्सिस ने भाजपा को 23-25 सीटें और कांग्रेस को 3-5 सीटें दी हैं।

अधिकांश एग्जिट पोल ने महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए और इंडिया ब्लॉक के बीच कड़ी टक्कर की भविष्यवाणी की है। जबकि एबीपी-सीवोटर सर्वेक्षण एनडीए के लिए कुल 48 सीटों में से 22-26 पर जीत की भविष्यवाणी कर रहा है, इंडिया गठबंधन के लिए, यह 23-25 सीटों का अनुमान लगा रहा है। बंगाल में, एबीपी-सीवोटर ने भाजपा को 42 सीटों में से 23-27 सीटें जीतने का अनुमान लगाया है, जबकि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस को 13-17 सीटें मिलेंगी। यह दर्शाता है कि कांग्रेस-सीपीआई (एम) को 1-3 सीटें मिलने की संभावना है।

ओडिशा में भी एग्जिट पोल भाजपा के लिए बड़ी बढ़त की भविष्यवाणी कर रहे हैं। न्यूज 24-टुडेज चाणक्य ने पार्टी को राज्य की 21 सीटों में से 16 सीटें दीं, जो कि 2019 में 8 सीटों से अधिक है, और मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के नेतृत्व वाली बीजू जनता दल (बीजेडी) को सिर्फ 4 सीटें दी हैं। दिल्ली में ज़्यादातर एग्जिट पोल भाजपा के लिए जीत की भविष्यवाणी कर रहे हैं। इंडिया टुडे-मायएक्सिस एग्जिट पोल ने भाजपा को कुल 7 सीटों में से 6-7 सीटें और आम आदमी पार्टी (आप)-कांग्रेस गठबंधन को सिर्फ़ एक सीट दी है। टाइम्स नाउ-ईटीजी ने भी सभी 7 सीटों पर भाजपा के जीतने का अनुमान लगाया है, जबकि आप-कांग्रेस गठबंधन को कोई सीट नहीं मिली।

हालांकि, सभी पोलस्टर्स ने जम्मू-कश्मीर में इंडिया ब्लॉक के लिए अच्छी बढ़त की भविष्यवाणी की है। इंडिया टुडे-मायएक्सिस सर्वे ने जम्मू-कश्मीर की 6 में से 3 सीटें जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस और 2 सीटें भाजपा को मिलने की भविष्यवाणी की है। 6 सीटों में से एक लद्दाख में है। लद्दाख की सीट कांग्रेस के जीतने की संभावना है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

‘5 दांव’ ने तय किया ‘मिशन 2024’ का टारगेट

एग्जिट पोल से मिल गया बड़ा इशारा, मोदी के खेल में विपक्ष हो गया चारों खाने चित

बड़ी आबादी को मिला पीएम मोदी की स्कीम का लाभ, राशन योजना भी बनी ‘गेम चेंजर’

पटना (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव परिणाम के बारे में पहले से जो अनुमान लगाए जा रहे थे, एग्जिट पोल ने उसकी पुष्टि कर दी है। ज्यादातर लोग नरेंद्र मोदी की तीसरी बार सत्ता में वापसी का अनुमान लगा रहे थे। फर्क सिर्फ सीटों की संख्या को लेकर था। नरेंद्र मोदी ने ‘400 पार’ का नारा देकर विपक्ष को सस्पेंस में डाल दिया था। पूरे चुनाव के दौरान विपक्ष मोदी के दावे की हकीकत बताने में ही लगा रहा। विपक्षी नेता इसी में लगे रहे कि मोदी को उतनी सीटें आने से रहीं, जितनी वे दावा कर रहे हैं। कोई एनडीए को 200 सीटों से नीचे जाता देख रहा था तो कई 150 पर सिमट जाने के दावे कर रहे थे। एग्जिट पोल के अनुमान में विपक्ष के दावे पर पानी फिरते दिखा। यह अलग बात है कि

वास्तविक परिणाम से एग्जिट पोल का मेल खाना जरूरी नहीं।

कई बार एग्जिट पोल के अनुमान ध्वस्त भी हुए हैं। पर, अधिकतर अनुमान वास्तविक नतीजों का संकेत तो देते ही रहे हैं। पहली जून की शाम एग्जिट पोल के अनुमान आए तो दिन में ‘इंडिया’ ब्लॉक ने बैठक कर अपना अनुमान बता दिया। खरगे ने दावा किया कि विपक्षी गठबंधन को 295 से ज्यादा सीटें मिलेंगी।

उज्जवला योजना से 10 करोड़ तक पहुंच

मोदी सरकार ने उज्जवला योजना के तहत 10 करोड़ से अधिक लोगों तक अपनी पहुंच बनाई है। पीएम आवास योजना के तहत तीन करोड़ मकान बने हैं। आम बजट में इसे पांच करोड़ तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। किसानों को सालाना 6000 रुपये मोदी दे रहे हैं। सालाना तीन किस्तों में सम्मान निधि का भुगतान पाने वाले 11 करोड़ किसान हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र की क्रांतिकारी आयुष्मान भारत योजना मोदी ने 2018 में शुरू की।

मोदी सरकार की मुफ्त राशन योजना

नरेंद्र मोदी की सरकार ने लोक कल्याण की कई ऐसी योजनाएं अपने दो कार्यकाल में शुरू कीं, जिनका फल उन्हें मिलना पहले से ही तय माना जा रहा था। मोदी ने इन योजनाओं के जरिए दूसरी पार्टियों की मुफ्त योजनाओं की हवा निकाल दी है। पांच किलो मुफ्त राशन योजना के जरिए मोदी ने 81 करोड़ लोगों तक अपनी सीधी पहुंच बनाई है। इस योजना की लोकप्रियता का विपक्षी गठबंधन को पहले अंदाजा नहीं था। विपक्ष इसके लिए मोदी की आलोचना करता था। जब इसके असर का इंडिया ब्लॉक को इल्म हुआ तो बीच चुनाव में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पांच किलो के बजाय लोगों को 10 किलो मुफ्त राशन देने की घोषणा की।

पंजाब में वोटिंग के बाद एमएलए ने वापस लिया इस्तीफा

- चुनाव से पहले एएपी छोड़कर भाजपा में गए थे, सोशल मीडिया से मोदी का परिवार हटाया

जालंधर (एजेंसी)। पंजाब के जालंधर वेस्ट से विधायक शीतल अंगुराल ने रविवार को अपना इस्तीफा वापस ले लिया। अंगुराल 2022 में हुए विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी की टिकट से चुनाव लड़कर विधायक बने थे। लोकसभा चुनाव से पहले 27 मार्च को वह भाजपा में शामिल हो गए थे। इसके बाद उन्होंने विधायक पद से इस्तीफा दे दिया। विधानसभा अध्यक्ष ने वेरिफिकेशन के लिए 3 जून को शीतल अंगुराल को बुलाया था। लोकसभा चुनाव की वोटिंग के अगले दिन ही शीतल ने विधानसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर कहा- अगर अब तक उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया जाता तो पश्चिम हलके में दोबारा चुनाव करवाने पड़ेंगे, जिससे सरकार का चुनाव खर्च भी बढ़ जाता। यही वजह है कि वह अपना इस्तीफा वापस ले रहे हैं। फिलहाल इस पर शीतल अंगुराल की कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है लेकिन उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट से मोदी का परिवार हटा दिया है। उनके भाई राजन अंगुराल ने एक पोस्ट शेयर किया है।

सुप्रभात

मैं पिघले हुए दिन का मालिक हूं
जिसमें बहुत कुछ टूट कर गिर गया
जैसे कि मेरी कुछ यादें
और एक फूल
एक रास्ता था जिस पर कुछ लोगों
के पैरों के निशान थे
जो खुद क्रांति के लिए जा रहे थे
कांच जैसे पैरों से
अपनी जड़ताओं के खिलाफ
वे कोई नया रास्ता नहीं खोज रहे थे
और उजड़ कर कहीं और बसना
नहीं चाहते थे
मैं उन सब पर पिघले
हुए दिन की तरह
गिरता जा रहा हूं।

- रविन्द्र स्वप्निल प्रजापति

अरुणाचल में बीजेपी का डंका

सिक्किम में एसकेएम की वापसी

- तस्वीर साफ होते ही शुरू हुआ जश्न, राज्यपाल से मिले दोनों सीएम
- अरुणाचल में कांग्रेस को एक सीट, भाजपा के 10 विधायक निर्विरोध

ईटानगर/गंगटोक (एजेंसी)। अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में विधानसभा चुनाव की मतगणना पूरी हो गई है। सिक्किम में सत्ताधारी सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा (एसकेएम) 32 में से 31 सीट जीतकर फिर से सरकार बना रही है। विपक्षी दल सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट (एसडीएफ) को एक सीट मिली है। पूर्व सीएम पवन कुमार चामलिंग भी चुनाव हार गए हैं। उधर, अरुणाचल प्रदेश में भाजपा फिर सरकार बना रही है। भाजपा को 60 में से 46 सीट पर जीत मिली है। भाजपा पहले ही 10 सीटें निर्विरोध जीत चुकी है। यहां कांग्रेस को 1, नेशनल पीपुल्स पार्टी को 5, एनसीपी को 3, पीपीए को 2 और निर्दलीयों को 3 सीटें मिली हैं। अरुणाचल में भाजपा ने सभी 60 सीटों पर चुनाव लड़ा था, जबकि कांग्रेस ने केवल 19 सीटों पर

कैंडीडेट्स उतारे थे। वहीं, सिक्किम में एसकेएम और एसडीएफ ने 32-32, वहीं एनसीपी ने 31 उम्मीदवार उतारे थे। कांग्रेस ने 12 सीटों पर चुनाव लड़ा था। सिटिजन एक्शन पार्टी-सिक्किम ने 30 सीटों पर कैंडीडेट उतारे थे। अरुणाचल और सिक्किम विधानसभा के लिए 19 अप्रैल को एक चरण में वोटिंग हुई थी। दोनों ही राज्यों में कांग्रेस का खाता नहीं खुला है।

फुटबाल टीम के पूर्व कप्तान बाइचुंग भूटिया चुनाव हारे

- 10 साल के राजनीतिक सफर में छठवीं बार मिली पराजय

नई दिल्ली (एजेंसी)। सिक्किम विधानसभा के चुनावी नतीजे सामने आ गए हैं। इस चुनाव में सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा को भारी बहुमत मिला है, लेकिन भारतीय फुटबाल टीम के पूर्व कप्तान बाइचुंग भूटिया चुनाव हार गये हैं। उन्हें बारफंग सीट पर सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा के रिक्षल दोरजी भूटिया ने 4336 वोटों से पराजित किया। बाइचुंग भूटिया सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट पार्टी से उम्मीदवार हैं। वह इस पार्टी के उपाध्यक्ष है। उनकी पार्टी को राज्य में भारी हार का सामना करना पड़ा है। राज्य विधानसभा के लिए मतदान 19 अप्रैल को हुए थे। 2018 में बाइचुंग भूटिया ने अपनी पार्टी ‘हमारो सिक्किम पार्टी’ की स्थापना की थी, हालांकि बाद में उसे राज्य की मुख्य विपक्षी पार्टी सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट में विलय कर दिया।

भड़के राहुल बोले- ये मोदी जी का पोल है

तोड़ी चुप्पी, बताया-इंडिया गठबंधन को आ रही 295 सीटें

नई दिल्ली (एजेंसी)। एग्जिट पोल पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने चुप्पी तोड़ी है। उन्होंने इन एग्जिट पोल को मोदी मीडिया पोल कहा है। राहुल गांधी ने कहा कि ये मोदी जी का पोल है, फैंटेसी पोल है उनका। वहीं उनसे जब पूछा गया कि विपक्षी गठबंधन को कितनी सीटें आ रही तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि 295 सीटें आएंगी। राहुल गांधी रविवार को कांग्रेस अध्यक्ष खरगे की बुलाई बैठक में शामिल होने के लिए पहुंचे थे। उन्होंने पार्टी प्रमुखों के साथ बैठक की।

श्योपुर में आंधी की वजह से भंवर बना, डूबी नाव, 5 बच्चों समेत 7 की मौत

सरकार ने 4-4 लाख रुपए की आर्थिक सहायता देने का आश्वासन दिया

श्योपुर (नप्र)। श्योपुर जिले में मानपुर थाना क्षेत्र के सरोदा गांव में शनिवार शाम करीब 4 बजे यात्रियों से भरी नाव सीप नदी में डूब गई। हादसे में 5 बच्चों समेत 7 लोगों की मौत हो गई। इनमें से 4 लोग एक ही परिवार के थे। 4 लोगों ने किसी तरह तैरकर अपनी जान बचाई। श्योपुर में नाव हादसे में परिजन को खोने वाले रामावतार सुमन की इस दर्द को बयां करते-करते सिसकियां बंध जाती हैं। हमने मौत को बेहद करीब से देखा है। अपनों को खोया है। वह हादसा बार-बार आंखों के सामने आ रहा है। उस मंजर को जिंदगीभर नहीं भूल सकते।

पुलिस, प्रशासन और एसडीईआरएफ की टीम ने 4 घंटे चले रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद 7 शवों को नदी से निकाला। मृतक बडौदा, विजयपुर और करेरिया गांव के रहने वाले थे।

रविवार को ऊर्जा मंत्री प्रदुम्न सिंह तोमर पीड़ित परिवार से मिलने सरोदा गांव पहुंचे। 4-4 लाख रुपए की आर्थिक सहायता देने का आश्वासन भी दिया। करीब 11 बजे सातों अर्थियां उठीं। नम आंखों के साथ अंतिम संस्कार किया गया।

आंधी से लड़खड़ाई नाव, भंवर में फंसकर डूब गई- नदी से तैरकर बाहर आए रामावतार सुमन (27) और हनुमान सुमन (25) से मीडिया को बताया। हनुमान सुमन ने कहा, हम अपने गांव बड़ौदा से सरोदा गांव की माली बस्ती में रिश्तेदारों के यहां गए थे।

मुख्यमंत्री डॉ.यादव के निर्देश पर श्योपुर पहुँचे ऊर्जा मंत्री तोमर, मृतकों के परिजनों के साथ खड़ी है सरकार

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देश पर ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युमन सिंह तोमर ने नाव दुर्घटना में काल कवलित हुए मृतकों के परिजनों से श्योपुर पहुँच कर मुलाकात की। उन्होंने शोकाकुल परिजनों को सांत्वना देकर ढांढस बंधाया। मंत्री श्री तोमर अंतिम संस्कार में भी शामिल हुए। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने मध्यप्रदेश के श्योपुर जिले में रिश्तेदारी में शामिल होने जा रहे 11 लोगों से भरी नाव सीप नदी में डूबने से हुए हादसे में सात लोगों की मृत्यु की हृदय विदारक घटना पर गहन दुख व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार की ओर से दुर्घटना में सभी मृतकों के परिजनों को नियमानुसार अनुग्रह राशि प्रदान कर आर्थिक सहायता दी जायेगी। श्री तोमर ने पीड़ित परिजनों को भरोसा दिलाया कि दुख की इस घड़ी में मध्य प्रदेश सरकार उनके साथ खड़ी है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के निर्देशानुस और ऊर्जा मंत्री अपने पूर्व निर्धारित सभी कार्यक्रम स्थगित कर शनिवार की रात को ही श्योपुर के लिए रवाना हो गए थे। मंत्री श्री तोमर घटना स्थल का निरीक्षण करने के बाद श्योपुर के जिला अस्पताल पहुंचे। उन्होंने जिला अस्पताल के शव परीक्षण गृह (पीएम हाउस) पहुंचकर नाव हादसे पर कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड़ और श्री पुलिस अधीक्षक अभिषेक आनंद से पूरे हादसे की जानकारी ली तथा पीड़ित परिजनों को तत्काल आर्थिक सहायता प्रदान करने के निर्देश दिए।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 44.5 °c | न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 3 जून 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

हूती विद्रोहियों का लाल सागर-हिंद महासागर में बड़ा हमला

- अमेरिकी जहाजों के खिलाफ 6 ऑपरेशन चलाए

सना (एजेंसी)। यमन के ईरान समर्थक हूती विद्रोही लाल सागर और हिंद महासागर में अमेरिकी जहाजों को निशाना बना रहे हैं। हूती विद्रोहियों के प्रवक्ता याह्या सारी ने शनिवार को बताया कि एक अमेरिकी एयरक्राफ्ट कैरियल, एक युद्धपोत समेत तीन और जहाजों को निशाना बनाकर छह ऑपरेशन चलाए गए। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक, याह्या ने आगे बताया कि लाल सागर के उत्तर में अमेरिकी एयरक्राफ्ट कैरियर आइजनहावर पर हूती विद्रोहियों ने मिसाइल और ड्रोन से

अटैक किया। उन्होंने कहा कि एयरक्राफ्ट पर पिछले 24 घंटे में दो बार अटैक किया गया। इसके अलावा लाल सागर में एक युद्धपोत और अबलियानी जहाज को निशाना बनाया गया। साथ ही मैना नाम के एक और जहाज को भी लाल सागर और अरब सागर में दो बार निशाना बनाया गया। अबलियानी जहाज एक ऑयल टैंकर है और मैना जहाज में पैसेंजर के साथ सामान एक देश से दूसरे देश भेजा जाता है। हूती विद्रोही लगातार जहाजों को निशाना बनाकर इजराइल पर युद्ध को खत्म करने दबाव बना रहे हैं। हूती विद्रोहियों ने अलोराइक नाम के जहाज को निशाना बनाया है।

एलओसी पर घुसपैठ की फिराक में दर्जनों आतंकी

डीजीपी ने बताई पाकिस्तान की ड्रोन वाली साजिश

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) रश्मि रंजन स्वैन के अनुसार नियंत्रण रेखा (एलओसी)

के पार स्थित लॉन्च पैड पर सक्रिय लगभग 60 से 70 आतंकवादी भारत में घुसपैठ की फिराक में हैं। इसके साथ ही स्वैन ने बताया कि पाकिस्तान की क्षमता दिन पर दिन कम हो रही है, लेकिन इसके बावजूद ये देश जम्मू-कश्मीर में लोगों और सामग्री को भेजने से बाज नहीं आ रहा है।

जम्मू-कश्मीर पुलिस और अपराध जांच विभाग (सीआईडी) का दोहरा कार्यभार संभाल रहे स्वैन ने एक साक्षात्कार में कहा कि सुरक्षा सलाहकारों के साथ बैठकों में हम आम तौर पर ये बात सामने आई है कि प्रतिद्वंद्वी या दुश्मन ने भारतीय सीमा के अंदर लोगों और सामग्री भेजने पर लगाम नहीं लगाई है। सीमा से सटे इलाके में ड्रोन के जरिए इस तरह की गतिविधियों को अंजाम देना अब भी जारी है। विदेशी आतंकवादियों की मौजूदगी का भी जिक्र किया।

4 जून को शहजादे भी करेंगे साधना, तलाश रहे हैं गुफा

- एग्जिट पोल को लेकर प्रमोद कृष्णम का राहुल पर तंज

नई दिल्ली (एजेंसी)। एग्जिट पोल के अनुमान सामने आने के बाद कांग्रेस पार्टी के पूर्व नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने राहुल गांधी पर तंज कसा है। उन्होंने कहा है कि वह गुफा की तलाश में जुटे हैं। आचार्य कृष्णम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखते हैं, 4 जून की शाम को शहजादे भी साधना करने जाएंगे। गुफा की तलाश जारी है। आपको बता दें कि 4 जून को मतों की गिनती होनी है। आचार्य प्रमोद कृष्णम ने राहुल गांधी, अखिलेश यादव और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को टैग कर तंज कसा है।

चांद के सबसे अंधेरे हिस्से में चीन की हो गई लैंडिंग

बीजिंग (एजेंसी)। चीन के स्पेस मिशन ने रविवार को बड़ी कामयाबी हासिल की है। 3 मई को लॉन्च किए गए चांग ई-6 मून लैंडर ने लगभग एक महीने बाद रविवार

- 23 दिन में सैंपल लेकर लौटेगा चांग ई-6 लैंडर
- सफल हुआ तो ऐसा करने वाला पहला देश बनेगा

सुबह चांद के अंधेरे वाले हिस्से पर सफल लैंडिंग की। ये लैंडिंग चीन के मून मिशन के लिए काफी अहम मानी जा रही है। इसके जरिए चीन चांद के अंधेरे हिस्से से सैंपल लाने वाला पहला देश बनना चाहता है। चीन की स्पेस एजेंसी के मुताबिक चांग ई-6 लैंडर चांद के दक्षिणी ध्रुव-ऐटकेन बेसिन में उतरा। यहां से चंद्रमा की सतह के नमूने इकट्ठा करना शुरू करेगा। यह चीन का अब

तक का सबसे मुश्किल मून मिशन है। हालांकि, चीन के लैंडर ने पहले भी चांद के सुदूर हिस्से में लैंडिंग की थी। पहली बार चीन ने ही 2019 में ऐसा किया था।

बद्रीनाथ धाम में भक्तों को अब नहीं मिलेगी वन तुलसी

औषधीय गुणों से है भरपूर यह औषधि, अब विलुप्ति के कगार पर

देहरादून (एजेंसी)। बदरीनाथ धाम में दर्शन करने को जा रहे तीर्थ यात्रियों को जोरदार झटका लग सकता है। उत्तराखंड में मौसम के बदलाव का असर अब ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भी साफतौर से देखने को मिल सकता है। मौसम में आ रहे बदलाव से औषधीय गुणों से भरपूर बदरीनाथ धाम में स्वतः उगने वाली वन तुलसी अब विलुप्ति के कगार पर है। प्रसाद बेचने वाले अब लामबगड़, हनुमान चट्टी, पांडुकेश्वर, बडागांव और उदगम घाटी से वन तुलसी के पत्ते मंगवाकर माला तैयार कर रहे हैं। 10500 फिट की ऊंचाई पर स्थित बदरीनाथ धाम में पाई जाने वाली वन तुलसी की माला से भगवान बदरी विशाल का श्रृंगार किया जाता है। इस वर्ष भी बदरीनाथ धाम और आस

पास के जंगलों में तुलसी काफी कम मात्रा में उगी है। यहां पर वन तुलसी धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है। बदरीनाथ में कई दशकों से तुलसी माला बेच रहे विनोद डिमरी का कहना है कि इस वर्ष धाम में तुलसी काफी कम मात्रा में उगी है। तुलसी माला बेचने वाले जोशीमठ क्षेत्र से तुलसी मंगवा रहे हैं। बदरीनाथ मंदिर के पूर्व धर्माधिकारी आचार्य भुवन उनियाल का कहना है कि भगवती वृंदा ही बदरीनाथ धाम में तुलसी के रूप में विराजमान हैं। वृंदा ही महालक्ष्मी हैं। बदरीनाथ उपवन सरक्षक सर्वेश कुमार दुबे कहना है कि जिस समय तुलसी उगनी शुरू होती है उस समय धाम में भारी बर्फबारी हुई थी। जिसके चलते इस वर्ष अभी तक तुलसी काफी कम उगी है। जबकि इससे पूर्व वर्षों में बर्फबारी दिसंबर-जनवरी माह में होती थी तो वन तुलसी के उगने का अवसर मिलता था लेकिन इस वर्ष फरवरी-मार्च माह में बर्फबारी हुई है। विदित हो कि 10 मई से शुरू चारधाम यात्रा में भारी संख्या में तीर्थ यात्री दर्शन करने को उत्तराखंड पहुंच रहे हैं। केदारनाथ-गंगोत्री समेत चारों धामों में भक्तों की भारी भीड़ देखने को मिल रही है।

श्रीमती रामबाई दीक्षित स्मृति लेखक सम्मान-2024 हेतु पुस्तकें आमंत्रित

शिक्षा, संस्मरण और यात्रा वतांत विधा की पुस्तकें शामिल

नवम्बर, 2024 में होगा भव्य सम्मान समारोह

अतर्रा (बांदा)। शैक्षिक मुद्दों पर आधारित पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कृत करने हेतु वर्ष 2022 में श्रीमती रामबाई दीक्षित स्मृति लेखक सम्मान की स्थापना की गई थी। इस सम्मान अंतर्गत लेखक को शॉल, सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न, लेखनी, अलंकृत मेडल और 1100/रुपये की मानद राशि भेंट की जाती है। वर्ष 2024 हेतु शिक्षा के साथ संस्मरण एवं यात्रा वृतांत विधा की पुस्तकें आमंत्रित की जाती हैं। लेखक या प्रकाशक पुस्तक की तीन प्रतियां 10 अगस्त तक प्रेषित कर सकते हैं।

उक्त जानकारी देते हुए श्रीमती रामबाई दीक्षित स्मृति लेखक सम्मान के संस्थापक शिक्षक एवं साहित्यकार प्रमोद दीक्षित मलय ने बताया कि उन्होंने 2022 में अपनी माता जी की स्मृति में उनके नाम पर 'श्रीमती रामबाई दीक्षित स्मृति लेखक सम्मान' की स्थापना की थी। यह सम्मान प्रत्येक वर्ष शैक्षिक मुद्दों पर आधारित ऐसी पुस्तकों के लेखकों को प्रदान किया जायेगा जिन्होंने शिक्षा क्षेत्र के जमीनी अनुभवों को लेखन का आधार बनाया हो, जिनमें समस्या के साथ समाधान के सूत्र भी सुझाये गये हों। चयनित लेखक को यह सम्मान नवम्बर, 2024 में आयोजित शैक्षिक-साहित्यिक संगोष्ठी एवं शिक्षक-लेखक सम्मान समारोह में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से पधारे नवाचारी शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं साहित्यकारों के सम्मुख प्रदान किया जायेगा। सम्मान अंतर्गत लेखक को शॉल, सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न, लेखनी, अलंकृत मेडल और 1100/रुपये की मानद राशि भेंट की जायेगी। लेखकों एवं प्रकाशकों से अनुरोध है कि 2023 तक प्रकाशित शिक्षा, संस्मरण एवं यात्रा वृत्तांत विधा की पुस्तकों की तीन-तीन प्रतियां 10 अगस्त तक समिति के कार्यालय शास्त्री नगर, अतर्रा -210201, जिला- बांदा (उ.प्र.) के पते पर रजिस्टर्ड डाक या कुरियर से प्रेषित कर दें। अन्य जानकारी हेतु 9452085234 और 8299447274 पर संवाद कर सकते हैं। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2022 हेतु श्रीमती रामबाई दीक्षित स्मृति लेखक सम्मान दिनेश कर्नाटक की पुस्तक 'शिक्षा में बदलाव की चुनौतियां' और आलोक मिश्रा की कृति 'बच्चे मशीन नहीं हैं' को तथा वर्ष 2023 का सम्मान भाषाविद् कमलेश कमल की पुस्तक 'भाषा शंषय-शोधन' हेतु प्रदान किया गया था। वर्ष 2024 हेतु शिक्षा के साथ संस्मरण एवं यात्रा वृत्तांत विधा को भी शामिल किया हैं।

शाह के 'मिशन 120' ने किया बीजेपी को बम-बम

हर संभावित नुकसान की भरपाई! बीजेपी के चाणक्य ने कर दिया 'खेला

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव को लेकर एग्जिट पोल्स के आंकड़े जारी कर दिए गए हैं। ज्यादातर एग्जिट पोल्स ने एक बार फिर मोदी सरकार की भविष्यवाणी कर दी है। सिर्फ जीत दर्ज नहीं हो रही है, बल्कि अनुमान तो प्रचंड बहुमत का लगाया गया है। इस बार तो पीएम मोदी का 400 पार वाला लक्ष्य भी सही साबित होता दिख रहा है। अब जब एग्जिट पोल्स के आंकड़े सामने आ गए हैं, उसका विश्लेषण भी शुरू कर दिया गया है। इसी विश्लेषण का एक आधार है अमित शाह का बीजेपी के लिए रहा मिशन 120। असल में 2017 में अमित शाह ने 2019 के लोकसभा चुनाव के लिए एक रणनीति तैयार की थी। उसी रणनीति के तहत पार्टी ने कुल 120 ऐसी सीटों को टारगेट किया जहां पर उसे हार मिली, लेकिन जीतने की उम्मीद भी दिख गई। इसी वजह से अमित शाह ने तब प्लान तैयार कि ऐसी तमाम सीटों पर केंद्र के मंत्री लगातार दौरा करेंगे, कार्यकर्ताओं से संवाद स्थापित किया जाएगा और सरकार की योजनाओं को जमीन पर अमलीजामा भी पहनाने की कोशिश होगी। इन 120 सीटों में दक्षिण भारत की सीटें शामिल थीं और पूर्वोत्तर को भी टारगेट किया गया था। लेकिन 2019 के चुनाव में बीजेपी ने अपना आंकड़ा तो बढ़ाया, लेकिन इन 120 सीटों पर उसकी स्थिति कुछ खास नहीं सुधरी, दक्षिण में विस्तार करने का उसका सपना अधूरा रह गया था और पूर्वोत्तर में भी वो क्षेत्रीय पार्टियों के सहारे आगे बढ़ती रही लेकिन अब पांच साल बाद वही मिशन 120 वाली रणनीति जमीन पर अपना असर दिखा रही है।

रवीना का मारपीट के आरोप लगाने वाली महिला से समझौता

- दावा-ड्राइवर को भीड़ से बचाने के दौरान हाथापाई हुई, एक्ट्रेस नशे में नहीं थीं

मुंबई (एजेंसी)। शनिवार रात को हुई एक घटना में एक्ट्रेस रवीना टंडन और उनके ड्राइवर पर शराब के नशे में एक बुजुर्ग महिला से मारपीट करने के आरोप लगे थे। पुलिस के सूत्रों की मानें तो दोनों पक्षों के बीच अब समझौता हो गया है। दोनों पक्षों की तरफ से यह लिखित में दिया गया है कि उन्हें अब एक-दूसरे से कोई शिकायत नहीं है। यह भी जानकारी मिली है कि घटना के वक्त रवीना नशे में नहीं थीं। सीसीटीवी फुटेज में भी साफ नजर आ रहा है

कि रवीना की कार से किसी को कोई चोट नहीं लगी है। बल्कि भीड़ रवीना के घर के अंदर तक घुसी थी और वहां दोनों पक्षों में हाथापाई हुई। बताया जा रहा है कि रवीना और उनके ड्राइवर के ऊपर भीड़ आक्रामक हो गई थी जिसके बाद रवीना ने अपने ड्राइवर को बचाने की कोशिश की और इसी दौरान दोनों पक्षों के बीच हाथापाई हुई। इससे पहले पीड़िता के बेटे ने दावा किया था कि मुंबई के बांद्रा में कॉलेज के पास उनकी मां को रवीना की गाड़ी से चोट लग गई।

विदेश में हिंदी पत्रकारिता पुस्तक का लोकार्पण संपन्न

भोपाल। सुप्रसिद्ध लेखक एवं वक्ता डॉ. जवाहर कर्नावट द्वारा लिखित एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तक विदेश में हिंदी पत्रकारिता का लोकार्पण इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली में संपन्न हुआ। इस पुस्तक में 120 वर्षों की 27 देशों की हिंदी पत्रकारिता का विस्तार से वर्णन किया गया है तथा इसकी विशिष्ट सामग्री को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी शामिल किया गया है। लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश तथा अध्यक्षता राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष पद्मश्री राम बहादुर राय ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में माधवराव सप्रे राष्ट्रीय समाचार पत्र संग्रहालय के संस्थापक श्री विजयदाश्त श्रीधर उपस्थित रहे। पुस्तक की विषय वस्तु पर वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी एवं लेखिका अलका सिन्हा ने प्रकाश डाला। समारोह में दिल्ली ,हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के अनेक गणमान्य महानुभाव ,लेखक एवं साहित्यकार उपस्थित रहे।

गांधी को नमन, मंदिर में पूजा, माता-पिता का आशीर्वाद

अब तिहाड़ पहुंचे केजरीवाल, किया सरेंडर

आधे घंटे बाद कोर्ट ने 5 जून तक न्यायिक हिरासत में भेजा; बोले-पता नहीं कब वापस आऊंगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार की शाम 5 बजे तिहाड़ जेल में सरेंडर किया। इससे पहले वे आम आदमी पार्टी के दफ्तर गए और कार्यकर्ताओं से मिले। उन्होंने कहा, मैं देश बचाने के लिए जेल जा रहा हूं। मुझे नहीं पता कब वापस आऊंगा। वहां मेरे साथ क्या-क्या होगा, मुझे नहीं पता। दिल्ली सीएम ने कहा, 2024 लोकसभा चुनाव के एग्जिट पोल कल सामने आए। लिखकर ले लीजिए, ये सभी एग्जिट पोल फर्जी हैं। एक एग्जिट पोल ने राजस्थान में बीजेपी को 33 सीटें दी थीं, जबकि वहां सिर्फ 25 सीटें हैं। असली मुद्दा यह है कि उन्हें ऐसा क्यों करना पड़ा।

उन पर दबाव बनाया गया होगा। वहीं, सरेंडर करने के करीब 30 मिनट बाद ही कोर्ट ने ईडी की ज्यूडिशियल कस्टडी में भेज दिया।

मैं देश के लिए फांसी पर चढ़ने के लिए भी तैयार हूं

पार्टी दफ्तर पहुंचे केजरीवाल ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा, मैं आज इसलिए जेल नहीं जा रहा कि मैंने कोई भ्रष्टाचार किया है। मैं इसलिए जेल रहा हूं क्योंकि मैंने तानाशाही के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत की है। मैंने इन 21 दिनों में एक मिनट भी जाया नहीं किया। मुझे नहीं पता कि अब मैं कब वापस आऊंगा, लेकिन मुझे कोई परवाह नहीं है। मेरे खून की एक एक बूंद इस देश के लिए है। मैं देश के लिए फांसी पर चढ़ने के लिए भी तैयार हूं। उन्होंने आगे कहा, 4 तारीख को मंगलवार है। भली करेंगे बजरंगबली।

पंजाब में टल गया बालासोर जैसा रेल हादसा

एक गाड़ी दूसरी से टकराई, बोगियां ऊपर चढ़ीं, तीसरी गाड़ी को चपेट में लिया

खन्ना (एजेंसी)। पंजाब के फतेहगढ़ साहिब में रविवार सुबह करीब 4 बजे दो मालगाड़ियां टकरा गईं। इनमें से एक का इंजन पलट गया और बाजू वाले ट्रैक से गुजर रही पैसेंजर ट्रेन से टकराया। हादसे में मालगाड़ी के 2 लोको पायलट घायल हुए हैं, जिन्हें पटियाला के राजिंद्रा अस्पताल रेफर किया गया। यह हादसा कुछ वैसा ही था, जैसा बीते साल ओडिशा के बालासोर में हुआ था। उस हादसे में रेलवे ट्रैक पर पहले से खड़ी ट्रेन को दूसरी ट्रेन ने आकर टक्कर मारी थी। इस टक्कर के दौरान तीसरी गाड़ी वहां से गुजर रही थी, वह भी हादसे का शिकार हुई। इस रेल

हादसे में 293 से ज्यादा लोगों की मौत और 1,000 से ज्यादा लोग घायल हुए थे। फतेहगढ़ साहिब में हुए इस हादसे की रूपरेखा कुछ वैसी ही है, लेकिन गति धीमी होने के कारण एक बड़ा हादसा होने से टल गया है। जानकारी के अनुसार, डेडीकेटेड फ्रंट कॉरीडोर के न्यू सरहिंद स्टेशन पर कोयले से भरी गाड़ी खड़ी थी, जिसे रोपड़ भेजा जाना था। इसी ट्रैक पर पीछे से एक अन्य कोयले से भरी गाड़ी आई, जिसकी टक्कर पहले से खड़ी कोयले की मालगाड़ी के साथ पीछे से हुई। इससे मालगाड़ी का इंजन पलट गया। इसी बीच कोलकाता से जम्मू तवी को जाने वाली स्पेशल समर गाड़ी (04681) अंबाला से लुधियाना की तरफ जाने के लिए निकली। जब यह ट्रेन न्यू सरहिंद स्टेशन के पास पहुंची तो इसकी रफ्तार धीमी थी। इसी दौरान दो मालगाड़ियों की टक्कर हुई। टक्कर लगने के बाद जब इंजन पलटा तो वह पैसेंजर ट्रेन से टकराया। पैसेंजर ट्रेन की रफ्तार धीमी थी तो ड्राइवर ने फौरन गाड़ी रोक ली और बड़ा हादसा टल गया। हालांकि, गाड़ी को आंशिक रूप से नुकसान पहुंचा है। वहीं, ट्रैक का बुरा हाल है।

सतना समेत कई जिलों में तेज बारिश, जबलपुर-हरदा में बादल

भोपाल में गर्मी के चलते डॉक्टर्स की छुट्टियां रद्द; ग्वालियर-रीवा में भीषण गर्मी

भोपाल (नप्र)। नौतपा के आखिरी दिन 2 जून रविवार को भी मध्यप्रदेश में मौसम के दो रंग देखने को मिले। नर्मदापुरम के सिवनी-मालवा में 20 मिनट तक बारिश हुई। हरदा में बूंदाबांदी हुई। सतना में तेज हवा के साथ पानी गिरा। जबलपुर और उमरिया में सुबह से बादल छाए हैं।

इधर, ग्वालियर, रीवा, अशोकनगर, उज्जैन, रतलाम, शाजापुर और निवाड़ी में भीषण गर्मी है। भोपाल में गर्मी के चलते अस्पतालों में डॉक्टर्स की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं।

मौसम विभाग, भोपाल के वैज्ञानिक अभिजीत चक्रवर्ती ने बताया कि 30 मई को केरल में मानसून ने दस्तक दे दी है। 1 जून को यह और आगे बढ़ा है। इसके चलते मध्यप्रदेश में यह निर्धारित तारीख 15 से 20 जून के बीच आ सकता है।

अभी प्रदेश में साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम एक्टिव है। ट्रफ लाइन भी गुजर रही है। इसकी वजह से शनिवार को कई जिलों में गर्मी का असर रहा। वहीं, कई जिलों में बारिश भी हुई। रविवार को भी ऐसा ही मौसम बना रहेगा।

अमरकंटक में तेज बारिश, उमस से मिली राहत- नौतपा के आखिरी दिन रविवार को अनूपपुर जिले के अमरकंटक में दोपहर में अचानक तेज बारिश होने लगी। इससे उमस और गर्मी से लोगों को राहत मिली।

हरदा में बादल छाने से पारा गिरा - हरदा में नौतपा के आखिरी दिन सुबह से ही बादल छाए हुए हैं। यहां तेज हवा चल रही हैं। इससे तापमान में गिरावट दर्ज की गई है।

उमरिया में तेज हवा से पारा गिरा - उमरिया में नौतपा के आखिरी दिन सुबह से ही बादल छाए हुए हैं। यहां तेज हवा चल रही हैं। इससे तापमान में गिरावट दर्ज की गई है।

छिंदवाड़ा में पारा गिरा, लेकिन उमस बढ़ी - नौतपा के आखिरी दिन तापमान गिरावट दर्ज की गई है। रविवार सुबह हल्की बूंदाबांदी हुई।

सतना में मौसम बदला, तेज हवा के साथ बारिश- सतना में नौतपा के आखिरी दिन मौसम बदल गया। यहां तेज हवा के साथ बारिश हुई। सड़कों पर पानी जमा हो गया। बारिश के चलते तापमान में भी कमी आई।

भोपाल में दोपहर 2.30 बजे टेम्प्रेचर 38.8 डिग्री, आंधी-बारिश का ऑरेंज अलर्ट

भोपाल में भीषण गर्मी को देखते हुए डॉक्टर्स की छुट्टियां अगले आदेश तक रद्द कर दी गई हैं। ओपीडी शुरू होने का समय भी अब सुबह 8 बजकर 45 मिनट से हो गया है।

अगले 2-3 दिन भोपाल में आंधी का ऑरेंज अलर्ट

नौतपा की भीषण गर्मी के बाद अब प्रदेश में प्री मानसून गतिविधि का दौर शुरू होगा। मौसम केंद्र द्वारा शनिवार को जारी किए गए पूर्वानुमान में अगले दो-तीन दिन भोपाल सहित प्रदेश के लगभग आधे हिस्से में गरज चमक होने और आंधी चलने का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।

कैबिनेट ने दी थी मंजूरी

लाल फीते में फंस गया पटवारियों का भत्ता, 3 माह से नहीं मिल रहा भत्ता

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के 25 हजार से ज्यादा पटवारियों को भत्ता देने वाला कैबिनेट का फैसला सरकारी प्रक्रिया में उलझ गया है। इस उलझन के चलते बीते 3 महीने से प्रदेश के पटवारियों को भत्ता नहीं मिल रहा है। यह भत्ता विधानसभा चुनाव के पहले कैबिनेट से मंजूर हुआ था। इस भत्ते में एग्री स्टेट, स्टेशनरी, अन्य और डीए शामिल है। पटवारियों ने तीन माह में कई बार अफसरों से बात की, लेकिन उन्हें हर बार आश्वासन मिला कि अगले महीने से शुरू हो जाएगा।

दो दिन पहले इसी मामले में आयुक्त लैंड रिकार्ड ने वीडियो कॉन्फ्रेंस करके सभी जिला अधीक्षक भू- अभिलेख को निर्देश दिए कि बजट की कमी के कारण भत्ते नहीं दिए जा रहे हैं, लेकिन पटवारियों का वेतन नहीं रोका जाए। मामले में पटवारी संघ ने जब प्रमुख सचिव से बात की थी तो उन्होंने तकनीकी दिक्कत बताई थी और कहा कि अभी भत्ता ग्लोबल बजट में जा रहा है।

इस कारण समस्या आ रही है। इसका अलग हेड बनाएंगे, इसके बाद दिक्कत नहीं आएगी। दूसरी तरफ आयुक्त लैंड रिकार्ड की तरफ से बजट की कमी बताई जा रही है। पटवारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष उपेंद्र सिंह बघेल ने बताया कि वे 4 जून के बाद सीएम से मिलकर अपने भत्ते को नियमित दिए जाने की मांग करेंगे।

वेतन के हिसाब से अलग-अलग भत्ता दिया जाता है- मप्र में कुल 25 हजार 500 पटवारी हैं। इनमें 19 हजार पुराने और 6700 नए हैं। पुराने पटवारियों को महीने का 6500 रुपए भत्ता मिलता है। इसमें एग्री स्टेट यानी कृषि कार्य के लिए करीब 4000 रुपए, 1000 रुपए स्टेशनरी का, 1000 रुपए अतिरिक्त और 500 रुपए डीए शामिल है। जबकि नए पटवारियों को उनके वेतन अनुसार यह भत्ता कम मिलता है।

भोपाल में मिलन रेस्टोरेंट के चौथे फ्लोर पर लगी आग

ढाई घंटे की मशक्कत के बाद 10 दमकलों ने पाया काबू

भोपाल (नप्र)। भोपाल के एमपी नगर स्थित भामाशाह टॉवर के चौथे फ्लोर पर एक कंपनी के ऑफिस में आग लग गई। शनिवार रात करीब 11 बजे लगी आग पर ढाई घंटे की मशक्कत के बाद रात 1.30 बजे पूरी तरह काबू पाया गया। आग इतनी भीषण थी कि कुछ ही देर में आग की लपटें उठने लगी। सूचना पर गोविंदपुरा, फतेहगढ़, माता मंदिर समेत आसपास के फायर स्टेशनों से 10 दमकलें मौके पर पहुंची थी।

प्रारंभिक जानकारी में शार्ट-सर्किट से आग लगना सामने आया है। जहां आग लगी थी उस बिल्डिंग में ग्राउंड फ्लोर पर मिलन रेस्टोरेंट है। जब आग लगी तब वह बंद था। आग लगने की सूचना पर रेस्टोरेंट के डायरेक्टर प्रदीप सोनी मौके पर पहुंच गए।

भोपाल में महिला डॉक्टर की एक्टिवा चोरी

मैट्रिमोनियल साइट पर मिले युवक से मिलने पहुंची थी, बुके लाने का कहकर हो गया रफू-चक्कर

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक महिला डॉक्टर की एक्टिवा चोरी हो गई। डॉक्टर मैट्रिमोनियल साइट पर मिले एक युवक से बोट क्लब मिलने पहुंची थी। उसी दौरान वह युवक बुके (गुलदस्ता) लाने का कहकर एक्टिवा ले गया। फिर नहीं लौटा। डॉक्टर 9 दिन तक उसका इंतजार करती रही। लेकिन, जब वह नहीं लौटा तो थाने में शिकायत दर्ज करा दी। पुलिस के मुताबिक महिला डॉक्टर गुलमोहर कॉलोनी शाहपुरा निवासी होम्योपैथिक डॉक्टर हैं। कुछ दिन पहले मैट्रिमोनियल साइट पर महिला डॉक्टर की मुलाकात खुद को दिल्ली का कारोबारी बताने वाले सत्यप्रकाश शर्मा से हुई थी। दोनों के बीच बातचीत हुई और फिर शादी को लेकर बात होने लगी। जिसके बाद दोनों ने मिलने का प्लान किया। कई दिनों बाद फिर तय किया कि 22 मई को वह भोपाल महिला से मिलने आएगा।

23 मई को बोट क्लब पहुंचे- 23 मई की शाम सत्यप्रकाश शर्मा महिला डॉक्टर घूमने निकले। घूमते हुए दोनों एक्टिवा से बोट क्लब आ गए। कुछ देर बोट क्लब पर घूमने के बाद सत्यप्रकाश ने महिला से कहा कि मैंने आपके लिए बुके (गुलदस्ता) बुक किया था। डिलीवरी ब्वाय गुलदस्ता लेकर आ गया है। वह सीएम हाउस के पास खड़ा है, वह यहां तक नहीं आ सकता है। इसलिए आपकी गाड़ी की चाबी दीजिए ताकि मैं आपके लिए गुलदस्ता ला सकूं। इस बहाने उसने महिला डॉक्टर से उनकी एक्टिवा स्कूटी ले ली और गुलदस्ता लेने चला गया।

कई दिन तक किया इंतजार- इसके बाद काफी देर तक इंतजार करने के बाद महिला डॉक्टर ने युवक को फोन किया और उसका फोन लगातार स्विच ऑफ आता रहा। जिसके बाद वह वापस अपने घर लौट आई। करीब 8 दिन तक इंतजार करने के बाद भी जब आरोपी जालसाज का पता नहीं चला तो उन्होंने श्यामला हिल्स थाने जाकर एक शिकायती आवेदन दिया।

भोपाल में बड़े तालाब में कूदा सॉफ्टवेयर इंजीनियर, मौत

मॉर्निंग वॉक पर निकले थे; होम लोन की इंस्टॉलमेंट ड्यू होने के चलते थे परेशान

भोपाल (नप्र)। भोपाल में रविवार को एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर ने तालाब में कूदकर सुसाइड कर लिया। उन्हें सुबह 7 बजे भदभदा स्थित बड़े तालाब के किनारे देखा गया था। कुछ देर टहलने के बाद उन्होंने तालाब में छलांग लगा दी। परिजनों के मुताबिक होम लोन की कुछ इंस्टॉलमेंट ड्यू होने के चलते वे डिस्टर्ब चल रहे थे।

कमला नगर थाने के प्रधान आरक्षक मिलन सिंह ने बताया कि देवेंद्र तोमर (43) चूना भट्टी इलाके में रहते थे। वे एक प्राइवेट कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर थे। एक साल से वर्क फ्रॉम होम पर थे। रविवार की सुबह मॉर्निंग वॉक पर जाने का कहकर घर से निकले थे। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि सुबह करीब 7 बजे देवेंद्र को तालाब किनारे देखा था। कुछ देर वह कुछ सोचते रहे। इसके बाद अचानक पानी में छलांग लगा दी। नगर निगम के गोताखोरों की मदद से शव को बरामद किया है।

14 साल पहले हुई थी शादी- देवेंद्र की शादी 14 साल पहले हुई थी। उनके दो बच्चे एक लड़का और एक लड़की हैं। पुलिस का कहना है कि परिजनों के डिटेल बयानों में खुदकुशी के सही कारणों का खुलासा होने की उम्मीद है। फिलहाल बॉडी को पीएम के बाद परिजनों को सुपुर्द कर दिया है।

परोसे जाएंगे गुजरात, ओडिशा और एमपी के जनजातीय व्यंजन

महुआ महोत्सव में मिलेगी महुआ गुलाब जामुन, पेठा और महुआ पूड़ी-चटनी

भोपाल (नप्र)। अगर आप जनजातीय खानों का शौक रखते हैं तो आप 6 जून से होने जा रहे मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय के स्थापना दिवस कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। कई कार्यक्रमों के अलावा यहां पर देश के कुछ खास प्रदेशों के जनजातीय फूड भी सर्व किए जाएंगे। निदेशक, जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी डॉक्टर धमेंद्र पारे ने बताया कि मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय की स्थापना का 11वां वर्षगांठ समारोह हैं, इस समारोह में मणिपुर तेलंगाना उड़ीसा, मध्य प्रदेश गुजरात राज्य के विभिन्न तरह के व्यंजन उपलब्ध रहेंगे। इस समारोह को महुआ महोत्सव का नाम दिया गया है।

यह डिशेज रहेंगी खास

जनजातीय संग्रहालय में होने वाले इस फूड फेस्टिवल में खास तौर पर ओडिशा की खास महुआ पीठा जिसे आम भाषा में पेठा भी कहा जाता है। सर्व किया जाएगा। इसके अलावा मणिपुर की चहऊ जो कि चावल की खीर होती है। गुजरात की करी खिचड़ी और बाजरे का रोटला आदि सर्व किया जाएगा। इसके अलावा मध्य प्रदेश के कई ट्राइब्स के खाने भी यहां मौजूद रहेंगे। जिसमें मक्का की रोटी, चटनी, दाल पतिया, महुआ के जलेबी, महुआ के लड्डी, महुआ के गुलाब जामुन, महुआ की पूड़ी चटनी आदि सर्व की जाएगी।

300 कलाकार देंगे प्रस्तुतियां

इस पांच दिवसीय समारोह में फूड फेस्टिवल के अलावा, कठपुतली डांस और जनजातीय नृत्य प्रस्तुतियां भी शामिल रहेंगी। इसमें पहली बार सांस्कृतिक विभाग द्वारा बैंड तैयार किया गया है, जिसकी तैयारियां संग्रहालय के सभागार में शुरू हो गई है। इस बैंड में निमाड़, बघेलखंड और बुंदेलखंड के गायक अपनी तैयारियां इन दिनों संग्रहालय में कर रहे हैं। इस समारोह में पांच दिन में 300 कलाकार अलग-अलग दिन प्रस्तुति देंगे। इसके अलावा यहां शिल्प बाजार भी लगेगा। वहीं कठपुतली डांस का भी आयोजन किया जाएगा।

यह है 5 दिन का शेड्यूल

- 6 जून : मालवा का लोक संगीत पर आधारित गाने का कार्यक्रम होगा इसमें उज्जैन के कलाकार स्वाति उखले और अजय गांगोलिया एवं साथी कलाकारों की बैंड प्रस्तुति होगी। इसी दिन रामचंद्र सिंह के निर्देशन में 'वीरांगना रानी दुर्गावती' की प्रस्तुति होगी।
- 7 जूनः इसमें बुंदेलखंड के कलाकार लोकसंगीत की प्रस्तुति देंगे। इसके अलावा शाम को अतिथि राज्य गुजरात के कलाकारों का सिद्धीधमाल, होली हुडोरास, मणियारोरास और ढोलोराणो-टिटोडो नृत्य की प्रस्तुतियां होंगी।
- 8 जूनः कार्यक्रम की शुरुआत बघेलखंड लोक संगीत की प्रस्तुति होगी। इसके बाद अतिथि राज्य में ओडिसा के कलाकारों का छाऊ, शंखध्वनि, गोटीपुआ और पाइका नृत्य होगा।
- 9 जून : इस दिन गायन की शुरुआत निमाड़ गायन से होगी। इसके बाद अतिथि राज्य तेलंगाना के कलाकारों का ओगूढोलू, कोमूकोया, बोनालू और लांबड़ी नृत्य होगा।
- 10 जूनः इस दिन मणिपुर राज्य का लोक संगीत, लाई हरोबा, थांग-टा, पुंग चोलम, ढोल-ढोलक चोलाम, बसंत रास की प्रस्तुतियां देंगे।

जानवर खा जाएंगे सोचकर कर दिए टुकड़े-टुकड़े

पति बोला-गर्म पानी में गिरने से 2 माह की बेटी की मौत हो गई, पत्नी गलती नहीं मानती थी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के ईंटखेड़ी में एक महिला की सनसनीखेज हत्या का खुलासा हुआ है। वह 21 मई से लापता थी। पुलिस ने 12 घंटे सर्चिंग कर 16 अधजले अवशेष बरामद किए हैं। जिसमें गर्दन, पसली, पैर शामिल हैं। महिला के लापता के 12वें दिन 1 जून को खुलासा हुआ कि हत्या उसी के पति नदीम उद्दीन ने की थी। वह भी इसलिए की पत्नी दो माह की बेटी की गर्म पानी में गिरने से हुई मौत में खुद की गलती नहीं स्वीकारती थी।

पूछताछ में नदीम उद्दीन ने पत्नी के गायब होने से लेकर शव ठिकाने लगाने तक की कहानी बताई। कहा- बेटी की मौत के बाद हुए विवाद के चलते पत्नी सानिया 2 महीने से अलग रह रही थी। एक दिन मैंने उसे घर लाने का सोचा। कॉल कर बात करने के लिए मनाया। फिर बाइक से उसे घर ले आया। उसे अपनी गलती मानकर पहले की तरह साथ रहने के लिए कहा तो उसने इंकार कर दिया। दोनों के बीच बहस होने लगी। गुस्से में आकर मैंने उसका गला घोंट दिया। बाद में आंटो से शव लेकर 2 किमी दूर अरवलिया खंती पहुंचा। घर से निकलते वक्त साथ में चाकू और फावड़ा भी रख लिया था।

पहले शव को कचरा खंती में जलाने की कोशिश की। नहीं जल सकी तो दफनाने का प्रयास किया। फावड़े से गड्ढा खोदना शुरू किया। लेकिन, खोद नहीं पाया। ऐसे में शव को चाकू से कई टुकड़े में बांट दिया। पहले गर्दन काटी। फिर हाथ-पैर और शरीर के दूसरे हिस्से अलग किए। सभी हिस्सों को यह सोचकर अलग-अलग फेंक दिए कि जंगली जानवर और कुत्ते खा जाएंगे। जिससे वह कभी पकड़ में नहीं आएगा, और पत्नी हमेशा के लिए गुमशुदा रह जाएगी।

बाइक सवार दोस्तों को कार ने टक्कर मारी

हादसे में नूर-उस-सबाह होटल के कर्मचारी की मौत, एक की हालत गंभीर

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बाइक सवार 2 दोस्तों को एक स्विफ्ट कार ने टक्कर मार दी। हादसे में एक की मौत हो गई, जबकि एक गंभीर घायल है। घटना शनिवार रात 9:30 बजे श्यामला हिल्स थाने के नजदीक की है।

मृतक के परिजनों का कहना है कि टक्कर मारने वाली कार ने भागते वक्त दो अन्य वाहन चालकों को भी टक्कर मारी थी। पुलिस का कहना है कि दूसरे वाहनों को टक्कर मारने की जानकारी नहीं है। किसी ने थाने में फिलहाल शिकायत भी दर्ज नहीं कराई है। मृतक युवक नूर-उस-सबाह होटल का कर्मचारी है।

पुलिस के मुताबिक समीर अहमद उर्फ अली (20) बुधवारा में रहता है। उसका दोस्त रेहान कुरैशी (25) बैंड मास्टर चौराहा पर रहता था। दोनों बुधवारा से एक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए निकले थे। शनिवार की रात करीब 9:30 बजे थाना श्यामला हिल्स के करीब सफेद रंग की तेज रफ्तार स्विफ्ट कार ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। दोनों को राहगीरों ने एम्बुलेंस की मदद से अस्पताल पहुंचाया गया। जहां रेहान को मृत घोषित कर दिया। जबकि समीर की हालत नाजुक है। उसका इलाज जारी है।

श्यामला हिल्स थाने के हेड कॉन्स्टेबल नेपाल चौहान ने बताया कि सीसीटीवी कैमरे को खंगाला जा रहा है। फरार आरोपी कार चालक को ट्रैस करने सर्विलांस सेंटर के कैमरों की भी मदद ली जा रही है। हादसे में रेहान की मौत हो गई। वह 5 साल से होटल नूर-उस-सबाह में जॉब कर रहा था।

दो साल पहले हुई थी शादी

रेहान की दो साल पहले शादी हुई थी। उसकी आठ महीने की बेटी है। पति की मौत की खबर सुनते ही पत्नी की तबीयत बिगड़ गई। उनके रिश्तेदारों ने बताया कि देर रात पत्नी को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। वह बेहद सदमे में हैं, और लगातार रेहान को लाने की जिद कर रही हैं। रेहान करीब 5 साल से होटल नूर-उस-सबाह में जॉब कर रहा था। परिवार में रेहान दूसरे नंबर का भाई था। उससे बड़ा एक भाई है, जबकि एक छोटी बहन है।

बॉडी बिल्डिंग के शौकीन थे दोनों दोस्त

रेहान और समीर दोनों बॉडी बिल्डिंग के शौकीन थे। एक साथ जिम किया करते थे। हेल्थ को लेकर बेहद संजीदा रहते थे। दोनों को बाइकिंग का शौक भी था। अकसर रेहान अपनी बुलेट से ऑफ रोड बाइकिंग के लिए भी जाया करता था। दोस्त गुलजार खान ने बताया कि रेहान कुरैशी के शव को पोस्टमॉर्टम के बाद पुलिस ने परिजनों को सौंप दिया है।

डू द बेस्ट, बीट द बेस्ट, डू द नेक्स्ट अपनाएं

देश विकसित बनाने के लिए ज्ञानशक्ति, अर्थ शक्ति और सैन्य शक्ति चाहिए : बी. आर.शंकरानंद

भोपाल(नप्र)। भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय संगठन मंत्री बी. आर. शंकरानंद ने कहा है कि वही व्यक्ति श्रेष्ठ बनता है जो कठिन मार्ग पर चलकर चुनौतियों का सामना करता है। लक्ष्य तय करना श्रेष्ठ बनने का पहला लक्षण है। युवाओं को गांव जाना चाहिए। इससे वे भारत को, यहां की समस्याओं को समझ सकेंगे और समाधान भी खोज पाएंगे। विश्वविद्यालयों को भी इसे अपने पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए।

'सशक्त, सांस्कृतिक एवं विकसित भारत के निर्माण की ओर' विषय पर एक विश्वविद्यालय के सभागार में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शंकरानंद ने युवाओं से डू द बेस्ट, बीट द बेस्ट और डू द नेक्स्ट का सूत्र देते हुए आह्वान किया कि भारत

को 2047 से पहले विकसित बनाने के संकल्प को पूरा करना चाहिए। आईईएस विश्वविद्यालय भोपाल एवं भारतीय शिक्षण मंडल मध्य भारत प्रांत के द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी में बीआर शंकरानंद ने कहा कि देश विकसित बनाने के लिए ज्ञानशक्ति, अर्थशक्ति और सैन्य शक्ति चाहिए। इसके लिए हमारे सामने एक विजन होना चाहिए जिसे मिशन बनाकर कार्य करेंगे तो अवश्य भारत को विकसित बनाने में सफल होंगे। हम सभी को 1922 से 1947 तक का इतिहास अवश्य पढ़ना चाहिए क्योंकि यह स्वाधीनता संग्राम का इतिहास है। यह हमें इतिहास में की गई गलतियों से बचाने और नया भविष्य गढ़ने में सहायक होगा क्योंकि इतिहास को भूल जाने वाले भविष्य का निर्माण नहीं कर सकते। शंकरानंद ने कहा कि विज्ञान के साथ अध्यात्म न होने से निर्मित होने वाला तंत्र विनाश की ओर ले जाता है।

संपादकीय

एग्जिट पोल : मोदी 3.0 के संकेत

लोकसभा चुनाव के अंतिम दिन आए लगभग एग्जिट पोल्स में बीजेपी और एनडीए की बंपर जीत के दावे इसी ओर संकेत करते हैं कि देश में मोदी 3.0 की पूरी संभावना है बशर्ते कि वास्तविक नतीजों में कोई बड़ा हेरफेर देखने को न मिले। इस बात की भी संभावना जताई गई है कि भाजपा अपने दम पर 2019 के आंकड़े को भी पार कर सकती है। विपक्ष ने इन तमाम एग्जिट पोल्स को प्रायोजित और सरकारी बताते हुए खारिज कर दिया है तो भाजपा इसे अपनी जीत का सही पूर्वानुमान करार दे रही है। उधर कांग्रेस का दावा है कि चुनाव में इंडिया गठबंधन 295 सीटें जीतकर सरकार बनाने जा रहा है। हालांकि ये सीटें कहां से रही हैं, इसका कोई डिटेल उसने नहीं बताया। कांग्रेस के दावे का आधार मुख्य रूप से प्रत्याशियों और कार्यकर्ताओं से मिली जानकारी है। कुछ और विपक्षी पार्टियों ने इन एग्जिट पोल्स के बारे में कहा है कि ये जमीनी सच्चाई से मेल नहीं खाते और 4 जून को पता चलेगा कि हकीकत में कौन जीत रहा है। यह बात सही है कि एग्जिट पोल्स कितने भी सटीक क्यों न हों, अंततः हैं एग्जिट पोल ही। इनका आधार सर्वे होता है और इस सर्वे का सेम्पल साइज कितना बड़ा है, इस पर भी पोल की प्रामाणिकता निर्भर करती है। हालांकि एग्जिट पोल सौ फीसदी सही होते हैं, यह दावा तो खुद पोल्सटर भी नहीं करते। इसलिए आजकल वो सीटों की सही संख्या के बजाए उसकी रेंज देना बेहतर समझते हैं। ऐसे में किसका एग्जिट पोल सही निकलता है, यह वास्तविक नतीजों के मिलान से तय होता है। कई बार एग्जिट पोल पूरी तरह गलत भी साबित हुए हैं तो कई बार वास्तविक नतीजों के आसपास भी बैठे हैं। यही कारण है कि इन पोल्स को लेकर राजनेताओं को लेकर सामान्य मतदाताओं तक में गहरी जिज्ञासा रहती है। बहरहाल जो एग्जिट पोल बता रहे हैं, उसके हिसाब वर्तमान में केन्द्र में सत्तारूढ़ एनडीए गठबंधन तीसरी बार सत्ता में लौट रहा है। अगर चुनाव में मोदी लहर और राम मंदिर के मुद्दे ने अंडर करंट की तरह काम किया तो तय मानिए कि एनडीए चार सौ पार भी हो सकता है। लेकिन फिर भी ज्यादातर राजनीतिक प्रेक्षक इस बात से सहमत हैं कि सरकार तो बीजेपी की ही बन रही है। सीटें भले कितनी ही आएं। एक और अहम बात है कि बीजेपी को उन राज्यों में कुछ नुकसान होता दिख रहा है, जहां वह मजबूत स्थिति में है। लेकिन इस नुकसान की भरपाई वह दक्षिण और पूर्व के राज्यों में करती दिख रही है। अगर दक्षिण में भी भाजपा कुछ सीटें जीतने में कामयाब हो गई तो कांग्रेस के बाद दूसरी ऐसी पार्टी होगी, जिसे पूरे देश की राष्ट्रीय पार्टी कहा जाएगा। एग्जिट पोल को लेकर दूसरी दिलचस्पी इंडिया गठबंधन की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस के प्रदर्शन को लेकर है। अगर केन्द्र में इंडिया गठबंधन की सरकार बनने को लेकर कोई संभावना है तो कांग्रेस कम से कम सौ से ज्यादा सीटें जीतनी होंगी। जिसकी संभावना दूर तक नजर नहीं आती। ज्यादातर एग्जिट पोल कांग्रेस को 60-70 सीटों से ज्यादा नहीं दे रहे। इसी तरह उसकी सहयोगी पार्टियों में डीएमके के अलावा कोई भी पार्टी 20 से ज्यादा सीटें जीतती नहीं दिखाई पड़ती। कोई भी एग्जिट पोल इंडिया गठबंधन को पौने दो सौ से ज्यादा सीटें नहीं दे रहा। मुख्य मुकाबला इन दो गठबंधनों में ही है। जहां तक नतीजों को लेकर भाजपा में जो आत्मविश्वास दिखाई दे रहा है, वैसा कांग्रेस व इंडिया गठबंधन में नहीं दिख रहा है। यह भी नतीजों को लेकर कुछ संकेत तो देता ही है।

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

पटका सदस्यता राजनीति का अधः पतन

भारतीय राजनीति के राजनैतिक संस्कृति में निरंतर गिरावट हो रही है। आजादी के समय में कांग्रेस पार्टी जो देश की प्रमुख पार्टी थी, की सदस्यता के बारे में जो नियम थे वह काफी कड़े थे और जो लोग सदस्य बनते थे उनमें से सभी तो नहीं पर अधिकांश लोग अपनी पार्टी की सदस्यता को स्वीकार करते समय वचन पत्र पर हस्ताक्षर करते थे और नीति व सिद्धांतों को स्वीकार करते थे। कांग्रेस पार्टी के सदस्यता के प्रारूप में खादी पहनना अनिवार्य था और अधिकांश कांग्रेसजन इसका पालन भी करते थे। पार्टी की सदस्यता को लेकर जो स्वअनुशासन और जो निष्ठा थी उसका एक उदाहरण तत्कालीन सी.पी. एंड वरार के सागर जिले के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी स्व. केशवराव खांडेकर थे। खांडेकर जी पक्के गांधीवादी थे और उन्हें महाकौशल का गांधी कहा जाता था। यह भी पुराने कांग्रेसजनों के द्वारा बताया जाता रहा है कि महात्मा गांधी चाहते थे कि सी.पी. एंड बरार के मुख्यमंत्री खांडेकर जी बने, परंतु खांडेकर जी ने एक सिद्धांत के तौर पर बयान दिया कि अगर मुझे सर्वसम्मति से चुना जायेगा तभी मैं मुख्यमंत्री का पद स्वीकार करूंगा और इसके बाद कांग्रेस के कुछ लोगों ने सुनियोजित ढंग से एक अन्य हरिजन विधायक का नाम उछाल दिया तथा श्री खांडेकर जी ने मुख्यमंत्री बनने से इंकार कर दिया। बाद में स्व. पं. रविशंकर शुक्ला मुख्यमंत्री बने। इस घटना की पुष्टि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. मोरारजी देसाई ने की थी। जब वे प्रधानमंत्री बने और मैं उनसे मिलने गया तो वह मुझसे बोले कि मैंने तय कर लिया था कि एक भी व्यक्ति मेरा विरोध करेगा तो मैं प्रधानमंत्री नहीं बनूँगा। परंतु मैंने यह किसी को बताया नहीं था वरना लोग किसी न किसी को खड़ाकर देते और तब उन्होंने स्व. खांडेकर जी की घटना मुझे सुनाई थी। स्व. खांडेकर जी का गांव सागर शहर से लगभग 18 किमी दूर था और आज से लगभग 70-80 वर्ष पूर्व वहां की स्थिति क्या रही होगी इसकी कल्पना आज नहीं की जा सकती। तब न पक्की सड़कें थीं और न वाहन होते थे और वाहनों के नाम पर ग्रामीण क्षेत्रों में बैलगाड़ियां/घोड़ागाड़ियों का प्रयोग होता था। खांडेकर जी जिस तारीख को कांग्रेस के सदस्य बने थे उसी तारीख को वर्ष पूरा होने पर वे सदस्यता का नवीनीकरण कराने सागर आते थे यहां तक कि कई बार तो मूसलाधार बारिश होने पर भी वह गाँव पैदल चलकर आते थे और अपनी सदस्यता का नवीनीकरण कराते थे।

कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी यद्यपि कांग्रेस का अनुषांगिक संगठन जैसा था परंतु जो लोग कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य बनते थे वे भी अपनी सदस्यता, वैचारिक प्रतिबद्धता, नीति प्रतिबद्धता के प्रति संकल्पित होते थे। उस समय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की सदस्यता भी कैडर आधारित होती थी और जिसे हासिल करने के लिये अनेकों शर्तों को पूरा करना पड़ता था। इसी प्रकार कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता भी कैडर आधारित थी और जिसे हासिल करने के लिये वैचारिक कसौटियों को स्वीकार करना होता था।

आजादी के बाद जब सोशलिस्ट पार्टी अलग बनी तब भी पार्टी की सदस्यता की पवित्रता और कार्यकर्ताओं के आचरण का ध्यान रखा जाता था। मुझे याद है कि जब 1963-64 में मैं डॉ. लोहिया के नेतृत्व वाली सोशलिस्ट पार्टी का सदस्य बना तब भी हम लोग अपनी संस्था के प्रति बहुत गहरा सम्मान रखते थे। पार्टी का सदस्य बनना उसके लिये सदस्यता फार्म पर हस्ताक्षर करना संविधान व नीति वक्तव्य को पढ़कर उसकी स्वीकृति देना अनिवार्य था, बाद में संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी बनी तब कुछ नियम और भी कड़े बनाये गये थे। यानि सक्रिय सदस्य बनने के लिये न्यूनतम निर्धारित सदस्यों को सदस्य बनाना, जन आंदोलन में जेल जाना, पार्टी के प्रशिक्षण शिविरों में शामिल होना अनिवार्य शर्त होती थी और इसका हम लोग कड़ाई से पालन भी करते थे और अपनी सदस्यता के लिये गर्व महसूस करते थे। परंतु 1959 के बाद कांग्रेस पार्टी में सदस्यता का संबंध केवल सदस्यता शुल्क की राशि जमा करना हो गया। और पैसे वाले लोग, उद्योगपति लोगों ने या कहीं के भी राजे रजवाड़ों ने पैसा जमाकर थोक में सदस्यता लेना शुरू कर दिया। उस समय अंग्रेज के मित्रों को यह बड़ा सुखद लगता था कि उनकी तरफ्से कोई सेठ हजार दो हजार, पांच हजार का शुल्क जमा करने के लिये पैसा दे रहा है। उन्हें किसी के पास जाने की तकलीफ करने की जरूरत नहीं है और उस राशि के आधार पर वे संगठन के ऊपर काबिज होने लगे। यहीं से पार्टी की गिरावट शुरू हुई और अब इस अधः पतन की स्थिति में है कि उसकी शुरुआत 1960 से शुरू हो गई थी। 60 के दशक में जनसंघ भी सदस्यता आधारित पार्टी थी उनका संगठन बंद जैसा संगठन था परंतु सदस्य उनकी पार्टी के विचारों पर प्रतिबद्ध व खरा उतरता था। उस समय जनसंघ में पैसे या धन की फर्जी सदस्यता का स्थान नहीं था, यह बात जरूर है कि उनकी पार्टी के प्रत्याशियों के चुनाव के लिये व्यापारी वर्ग के लोग भरपूर सहयोग करते थे क्योंकि वह व्यापारियों की पार्टी मानी जाती थी। कालान्तर में केवल कम्युनिस्ट पार्टी को छोड़कर जो यद्यपि बंद संगठन की पार्टी थी परंतु कैडर बेस पार्टी थी और उसकी सदस्यता संख्या में भले ही कम हो परंतु नियम, कायदों व गुणवत्ता में प्रमाणित थी। 1962-67 के बाद तो लगभग सभी राजनैतिक दलों में खुली मेम्बरशिप का काम शुरू हुआ और सदस्यता की नीतिगत प्रतिबद्धता, सदस्यों की वैचारिक प्रतिबद्धता लगभग पीछे छूट गई। बंद सदस्यता के संगठनों में कुछ बुराईयां आईं, उनका राजनैतिक पतन भी हुआ, श्जैसे प. बंगाल में सी.पी.एम.। परंतु उनका एक वैचारिक ढांचा आज भी बरकरार है, भले ही वह देश और समाज में प्रभावकारी न रहा हो परंतु मूल ढांचा तो कम से कम बचा हुआ है। जनता पार्टी तो एक बगैर संगठन के शुरू हुई थी और लगभग वैसे ही समाप्त भी हो गई थी। लोकदल और कुछ अन्य पार्टियां यथः उ.प्र. की समाजवादी पार्टी, बिहार की आरजेडी आदि कोई भी सदस्यता आधारित पार्टियां नहीं हैं। बल्कि कुछ जातियां ही इन पार्टियों की समानार्थी बन गई। भाजपा का मूल ढांचा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नियंत्रण में रहा और इस पार्टी को बनाने में उनकी ही भूमिका है। जनता पार्टी को तोड़कर भाजपा बनाना यह संघ की अपनी जरूरत भी थी और रणनीति भी थी। पार्टियों में खुली सदस्यता शुरू होने के बाद दल के पुराने वफादार साथियों का जिन्होंने कठिन समय में पार्टी को चलाया, उनकी पूछ क्रमशः घटती गई। मूल ढांचे के लोग अपने आपको उपेक्षित और अपमानित महसूस करने लगे। वे क्रमशः पीछे हटते गये और सत्ता के सहारे उपजे नव धनाढ्य तबके जो अपराध, भ्रष्टाचार व कालेधन से संपन्न बना है उसने अपने भ्रष्ट पैसे की चकाचौंध, विज्ञापनों से पार्टियों के ढांचे पर कब्जा कर लिया जो पार्टियां व्यक्ति केन्द्रित रही उनमें भी आतंरिक लोकतंत्र या परिवार की प्राइवेट कंपनियां जैसी बन गई। जहां कोई विधान, नियम कायदे नहीं हैं, बल्कि जो शीर्ष पर बैठा हुआ है वही सर्वोपरि है। उसका कहा ही पार्टी का नीति व संविधान है। 1990 के दशक तक लगभग 10 वर्ष भाजपा व संगठन के फैसले उनके मातृ संगठन आरएसएस द्वारा लिये जाते थे। परंतु 1997-98 के बाद क्रमशः भाजपा भी व्यक्ति केन्द्रित पार्टी तथा धन आधारित या उद्योगपतियों, औद्योगिक संचालित पार्टी में बदल गई और अब तो स्थिति किस चरम पतन पर पहुंची है इसकी कल्पना भी कठिन है। अन्य दलों के समान भाजपा में भी आंतरिक लोकतंत्र नहीं है, संविधान या नीति नहीं है, बल्कि सत्ता के शीर्ष पर बैठे हुये महाप्रभु जो फतवा जारी कर दें वही पार्टी का नियम, नीति बन जाती है। 2014 में चुनाव के पूर्व संघ ने अपनी बैठक में तय कर श्री नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री का प्रत्याशी घोषित किया था परंतु अब स्थिति इतनी उलट है कि संघ की भाजपा के संगठन के भीतर दखल, पकड़, अनुशासन आदि सभी कुछ समाप्त हो चुका है। अब चाहे मुख्यमंत्रियों का चयन हो, चाहे नीतियों का निर्णय हो संघ का काम केवल महाप्रभु के आदेश का समर्थन करना और उसका पालन करना है। बताया जाता है कि अब संघ के संगठनात्मक ढांचे को चलाने के लिये जो विपुल राशि चाहिये, वह तो सत्ता व कारपोरेट के बैक डोर से ही मिल रही है। संघ व जनसंघ के बड़े-बड़े पदाधिकारी जो बसों या छोटे मोटे वाहनों से चलते थे, कार्यकताओं के यहां खाना खाते थे, पर अब स्थिति इतनी उलट है कि वे तीन या पांच सितारा होटलों में रुकते, बड़े-बड़े कीमती वाहनों में चलते हैं, उनके कपड़े पर सिकुड़न नजर नहीं आ सकती, कई तो दिन में तीन-तीन बार कपड़े बदलते हैं और कुछ चारित्रिक पतन भी इनके कारणों से हुआ है। कितने ही संघ के और भाजपा पदाधिकारी के, पिछले 10 वर्षों में बड़े-बड़े महल उद्योग धंधे हजारों के पट्टे, जमीन की मालकियत बढ़ी है। यह थोड़ी सी ही आंख खोलकर देखा जा सकता है। अब तो संघ के पदाधिकारी भी आमतौर पर संघ कार्यालयों में हीं ठहरते, कार्यकर्ताओं के घर पर अब उन्हें खाने पर भी नहीं बुलाया जाता। क्योंकि उनकी जीवनशैली के परिवर्तन ने कार्यकर्ताओं के मन में आदर्श, त्याग की आस्था को समाप्त कर दिया है।

श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद उनके इशारे पर अमित शाह को राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित किया गया और श्री शाह ने पार्टी के दफ्तरों और कार्यकर्ताओं को तकनीक व मशीन से लैस किया। जिलों से लेकर राजधानियों तक सत्ता के सहारे दफ्तर खड़े हो गये। ऐसे ही दफ्तर एक जमाने में याने 70 से 88 के बीच कांग्रेस पार्टी के सत्ता के सहारे उसने भी बनाये थे। और प. बंगाल, केरल एवं दिल्ली आदि में वामपंथी पार्टियों ने भी बनाये। परंतु एक बात स्पष्ट है कि ज्यों पार्टियों के मकान, महलों में तब्दील हो रहे, त्यों-त्यों पार्टियां सिकुड़कर ताबूत में बंद हो रही हैं। हो सकता है कि भाजपा के वह दिन आ जायें।

श्री अमित शाह ने अध्यक्ष बनने के बाद सदस्यता का आवेदन, पार्टी के नीति सिद्धांत, चरित्र आदि के सभी कालम बंद कर दिये और एक नये प्रकार की सदस्यता शुरू की वह थी मिस कॉल सुविधा। बस आप एक मिस कॉल कीजिये व पार्टी के सदस्य बन जायेंगे। पार्टी के पदाधिकारियों ने आपको जाना, पहचाना, न पृष्ठभूमि को जाना बस मिस कॉल से सदस्य बन गये। इस मिस कॉल के तरीके ने पार्टी के संगठनात्मक ढांचे को ही लगभग पैसा, अवसर में तब्दील कर हास्यास्पद बना दिया। 2019 तक इस मिस कॉल का दौर भी समाप्त हुआ और अब एक प्रकार की नई सदस्यता शुरू हुई है पर पटका सदस्यता। याने आपको एक पार्टी के चिन्ह वाला पटका गलों डाल दिया जायेगा व आप पार्टी के सदस्य बन जायेंगे। जैसे एक जमाने में वरमाला विवाह होते थे कि वरमाला डालो और विवाह हो गया। वही स्थिति आजकल राजनैतिक दलों में हो गई और लगभग सभी बड़े संसद के दलों में यही चलन हो गया। चाहे भा.ज.पा. हो, चाहे कांग्रेस, चाहे स.पा., चाहे रा.ज.द., चाहे जद(यू), शिवसेना, या टी.एम.सी. बस एक पटका डालने की आवश्यकता है। इस बार के लोकसभा के चुनाव के पहले बड़ी संख्या में दल बदल हुये हैं और वह सभी पटका सदस्यता के आधार पर हो गये। कुछ लोगों ने महीने-पंद्रह दिन में ही दो-दो बार पटके डाल दिये, याने आने व कहीं और जाने का पटका। भाजपा ने जहां एक तरफअपने राष्ट्रीय अधिवेशन में एवं स्वतः प्रधानमंत्री के मुख से अबकी बार 400 पार का नारा लगवाया वहीं दूसरे दलों को हतोत्साहित करने के लिये दूसरे दलों के लोगों को भाजपा में शामिल करने का अभियान चलाया। श्री अमित शाह के नेतृत्व में यह अभियान शुरू हुआ और भाजपा के संगठन में राज्य स्तर पर नई भर्ती प्रकोष्ठ खोल दिये गये। जिनके बाकायदा संयोजक भी बना दिये गये। मप्र में पूर्व गृहमंत्री श्री नरोत्तम मिश्रा को इस भर्ती प्रकोष्ठ का मुखिया बनाया गया। तथा कुछ दिनों पहले उन्होंने यह जानकारी दी कि लगभग 4 लाख लोग कांग्रेस व अन्य दलों को छोड़कर भाजपा में शामिल हो गये। इस पटका सदस्यता से जहां एक तरफ यह वातावरण बना कि सारे दल समाप्त हो रहे हैं केवल भाजपा ही बच रही है और दूसरी तरफ इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि भाजपा के मूल संगठन के लोग भयभीत हो गये और अपने अस्तित्व को लेकर निराश हो गये। जब लोकसभा के प्रथम चरण 19 अप्रैल को हुए मतदान का प्रतिशत 6 से 8 प्रतिशत तक घटा तब इस पटका सदस्यता और उसके दुष्परिणाम पर ध्यान दिया गया व चर्चा शुरू हुई कि अगर 4 लाख लोग इस पटका सदस्यता से सदस्य बने हैं तो यदि एक व्यक्ति मात्र 50 वोट भी गिरवाये तो लगभग 2 करोड़ वोट याने 25 प्रतिशत से अधिक वोट पिछले चुनाव से अधिक गिरना चाहिये। अगर पटका सदस्यों ने अपने परिवार के ही वोट डलवाये होते तो लगभग 25 लाख से अधिक वोट गिरते, याने मत प्रतिशत का लगभग 1 प्रतिशत या हो रहे मतदान का लगभग 2 प्रतिशत। प्रथम व द्वितीय चरण के मतदान ने जहां इस पटका सदस्यता की असलियत सामने ला दी है वहीं संगठन के पुराने ढांचे की पूछ-परख कुछ बढ़ी है।

मैं भाजपा कांग्रेस या अन्य किसी दल को कोई सलाह नहीं देना चाहता व अधिकारी भी नहीं हूं परंतु इतना अवश्य कहूंगा कि मिस कॉल से लेकर पटका सदस्यता तक राजनीति को विचारहीनता, सैद्धांतिक प्रतिबद्धता, संगठनात्मक वरिष्ठता व नीति विमुखता का जो नया दौर पैदा हुआ है। ये मैं देश में राजनैतिक दलों व लोकतंत्र का माखौल बनाकर छोड़ेगा व अंततः राजनैतिक दल भी नीतिविहीन, आचारविहीन, पतनोन्मुख समूह बनकर रह जायेंगे।

आम चुनाव 2024

बादल सरोज

लेखक लोकजतन के संपादक हैं।

एग्जिट पोल्स : सिर्फ धंधा है या कुछ और इरादे भी हैं?

मतदान पूरा होते ही - जैसा कि आशंका था - सारा मीडिया एग्जिट पोल्स से बजबजाने लगा। कथित सर्वे के आधार पर निकाले गए अनुमानों को सचमुच के परिणामों की तरह दिखाया जाने लगा। इतने अधिकारपूर्वक सीटों का एलान किया जाने लगा कि जैसे गिनती पूरी हो चुकी है और निर्वाचित सांसद भी घोषित किये जा चुके हैं। करीब चार दशक पहले भारत में इस बीमारी की शुरुआत हुई थी, तब से लेकर आज तक इनके सटोरिया अनुमान कितनी कम बार सही और कितने ज्यादा बार गलत साबित हुए इसका लेखाजोखा याद दिलाना इन पंक्तियों के लिखे जाने का मकसद नहीं है। जब-जब प्रायः हमेशा ही - ये गलत साबित हुए तब तब इसे करने वाले क्या क्या बहाने बनाने आये, कई, बार तो मुड़कर झाँकने भी नहीं आये यह सब जानते हैं इसलिए इसे बताने की भी जरूरत नहीं। यहाँ सिर्फ इससे जुड़े कुछ पहलुओं पर नजर डाल लेना काफी है।

जिस तरह झूठ अर्धसत्य, असत्य से कई गुना खतरनाक होता है उसी तरह साफ़ साफ़ दिखने वाले अज्ञान और अंधविश्वास से ज्यादा घातक होता है छद्म विज्ञान; यही छद्म विज्ञान था जिसने कोरोना में थाली बजाने से बनने वाली झनझनाहट और मोमबत्ती जलाने से होने वाले प्रकाश से कोरोना वायरस के खत्म हो जाने के 'वैज्ञानिक' दावे किये, नतीजा यह निकला कि 40 से 45 लाख भारतीय बिना समुचित इलाज के मर गए। यही छद्म विज्ञान है जो जाति श्रेणीक्रम की जघन्यता को सही ठहराने के लिए 'विज्ञान सम्मत तर्क' ढूंढकर लाता है। एग्जिट पोल का धंधा- यह छोटा मोटा नहीं हजारों करोड़ का कारोबार है - करने वाले भी अपनी कयासबाजी के समर्थन में इसी तरह का दावा करते हैं, इसे सेफोलोजी बताते हुए कहते हैं कि यह भी एक विज्ञान है। प्रसंगवश बता दें कि सेफोलोजी यूनान से आया शब्द है - इसका शाब्दिक अर्थ कंकड़शास्त्र होगा, क्योंकि ग्रीक सभ्यता में चुनाव का काम कंकड़ (पत्थर का छोटा सा टुकड़ा) डालकर किया जाता था। बहरहाल इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि यूनानियों ने कभी इसे विज्ञान माना हो। सिर्फ कंकड़ के आगे 'लोजी' लगा देने से यदि इसे विज्ञान मानने का दावा किया जाता है तब तो फिर फेंकोलोजी को भी वैज्ञानिक मानना होगा! लिहाजा पहले तो इस गलतफहमी को दूर कर लेना चाहिए कि इस धंधे का कोई वैज्ञानिक या तार्किक आधार है; अब तक इस तरह का न कोई विज्ञान आया है ना ही ऐसा कोई त्रुटिहीन 'फूलप्रूफ' गणितीय फ़ॉर्मूला ही बना है जिसके आधार पर मतदान के बाद नतीजों के अनुमान लगाने का कोई मोड्यूल बनाया जा सके।

दूसरी बात मतदाता चावल का बोरा या रंधता हुआ भात नहीं है कि दो चार चावलों को देखकर सबके बारे में अंदाज लगाया जा सके। मतदाता कोई खत भी नहीं है कि उस पर 'ख़त का मज़मूँ भाँप लेते हैं लिफ़ाफ़ा देख कर' के मिसरे को शब्दशः लागू किया जा सके। हालाँकि ऐसा कहने से पहले खुद इसके शायर ने अपनी बात साफ़ करते हुए इसी शेर में कहा है कि 'आदमी पहचाना जाता है क़याफ़ा देख कर' मतलब हर आदमी एक सा नहीं होता उसकी पहचान उसके कयाफा (शक्लोसूरत, बनावट, व्यक्तित्व) को देखकर की जानी चाहिए। क्या एग्जिट पोल का पोलियो फैलाने वाले एग्जिट-पोलिये हर आदमी के कयाफे, उसकी भिन्नता, विशिष्टता को आधार बनाते हैं। नहीं। ज्यादातर पोलिये तो सर्वेक्षण में कहाँ, कितने और कैसे लोगों से बात की उसकी जानकारी ही नहीं देते। जो देते हैं उनके सर्वे का सैंपल सीटों का 10 प्रतिशत और कुल मतदाताओं का 0.0000001 प्रतिशत भी नहीं होता। कोई आधी सदी से वोट डाल रहे इन पंक्तियों के लेखक से आज तक किसी सर्वे कम्पनी ने पूछताछ नहीं की। आज तक किसी पोलिंग बूथ पर किसी से पूछताछ होती हुई भी नहीं देखी।

क्या इतने छोटे से सैंपल के आधार पर दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के जनादेश का समीकरण निकाला जा सकता है? इस खालिस सट्टेबाजी की हिमायत करने वाले अक्सर अमरीका और यूरोप के देशों में इस तरह के पोल्स का जिक्र करते हैं - बिना यह बताये कि उन देशों में भी वे कितने सही और कितने गलत साबित हुए हैं। वहां भी अब लोग एग्जिट पोल के झमेले को छोड़ चुके हैं और पोस्ट-पोल पर आ चुके हैं; पोस्ट-पोल यानि मतदाता जैसे ही वोट डालकर मतदान केंद्र से बाहर निकलता है वैसे ही बाहर भी उससे उसी तरह गोपनीय वोट लिया जाता है। इसके कुछ हद तक, कुछ ही हद तक, सही निकलने की संभावना होती भी है। मगर अभी भारत में सर्वे उद्योग की कंपनियों का टेसू एग्जिट पोल पर ही अड़ा हुआ है।

इसके अलावा भारत भारत है यूरोप नहीं है। यहाँ का मतदाता एक मतदान केंद्र, एक बसाहट में रहने वाला बराबरी वाला वोटर नहीं है। वह अनेक निर्णायक विविधताओं और गुणात्मक भिन्नताओं वाला मनुष्य है। यूरोप में एडविन या लिओन, एडविन या लिओन ही होते हैं, इसके अलावा अपनी वर्गीय स्थिति के मुताबिक़ वे गरीब, अमीर या मध्यमवर्गी हो सकते हैं। जम्बूद्वीपे भारतखंडे में रामप्रसाद और श्यामप्रसाद सिर्फ रामप्रसाद या श्यामप्रसाद नहीं होते। उनकी पहचान वर्गीय आर्थिक पृष्ठभूमि के अलावा बल्कि उससे ज्यादा - अपवादों को छोड़ दें तो - नियमतः उनके नाम के पहले या बाद में लगे शब्द संबोधन, उनके वर्ण और जाति से तय होती है। यह पहचान उनकी सामाजिक हैसियत को ही नहीं, खुलकर बोलने या न बोलने की उनकी स्थिति को भी निर्धारित करती है। भारतीय समाज जिस रूढ़ और घुटन भरी अवस्था में है, वह एग्जिट पोल में दिए जाने वाले जवाब, यदि दिए जाते हैं तो, की प्रामाणिकता को प्रभावित करती है। सिर्फ यूपी, बिहार, बुन्देलखण्ड, रूहेलखंड ही नहीं देश के बहुमत गाँवों का गरीब दलित आदिवासी या ओबीसी समुदाय का मतदाता, किसको वोट देकर आया है यह पूछे जाने पर, खरा खरा सच बोल देगा यह गलतफहमी वे ही पाल सकते हैं जिन्होंने भारत के गाँव मोहल्ले देखे नहीं है। यही, बल्कि इससे भी ज्यादा खराब स्थिति महिलाओं की है - इनका विराट हिस्सा वोट देने की अपनी पसंद तय नहीं कर सकता, जो छोटा सा हिस्सा अपनी पसंद से वोट डालने का साहस कर भी लेता है वह उसके बारे में अपने परिवार तक में कह नहीं सकता।

फिर क्यों बजाया जा रहा है एग्जिट पोल का ढोल? इस बहाने मीडिया और कंपनियों द्वारा हजारों करोड़ रुपयों की कमाई के अलावा भी इस ढोल के शोर में कुछ है। चुनाव एक राजनीतिक संग्राम है और युद्ध शास्त्र में एक मोर्चा मनोविज्ञानिक युद्ध का भी होता है। वोट डाले जाने के बाद असली खबर के लिए धीरे धीरे अनुकूलन करने की आवश्यकता होती है; पिछली वर्षों में यह काम इन एग्जिट पोल्स ने किया है। इस बार ख़ास यह है कि जनता के बड़े हिस्से के मन में निर्वाचन प्रक्रिया को लेकर सन्देह और अविश्वास पैदा हुआ है। ईवीएम को लेकर जो था सो था ही, केंचुआ की सत्ता पार्टी के प्रति खुल्लमखुला और निर्लज्ज पक्षधरता, डाले गए वोटों की संख्या बताने से इनकार और अनावश्यक देरी ने आशंकाओं की आग में घी डाला है। सही या गलत जो हो, नागरिकों का एक बड़ा हिस्सा यह मान रहा है कि इस बार बड़े पैमाने पर परिणामों में धांधली की जा सकती है। इस धांधली की पूर्वतैयारी के लिए एग्जिट पोल्स के जरिये वातावरण बनाया जा रहा है ताकि दीवार पर मोटे मोटे हरूफों में लिखी जनभावनाओं की इबारत से उलट फैसला आने पर उसे 'एग्जिट पोल्स ने भी तो यही कहा था' कहकर गले उतारा जा सके।

यदि ऐसा हुआ तो यह भारत के लोकतंत्र की कपाल क्रिया ही नहीं होगी, यह डेढ़ अरब पहुँचती आबादी वाले देश को अनिश्चितता के घोर अँधेरे में धकेलने का कुकर्म भी होगा। इतिहास गवाह है कि जब जब संवैधानिक संस्थाओं ने भरोसा खोया है तब तब इस देश की जनता ने उन्हें और उनसे ऐसा करवाने वालों को सजा सुनाई है; उम्मीद है इस बार भी हम भारत के लोग- इन्ही चार शब्दों से शुरू होने वाले संविधान की रक्षा के लिए सजग रहेंगे; जरूरी हुआ तो सड़क पर उतरेंगे ताकि संसद आवारा होने से बचाई जा सके।

वक्रोक्ति

मृदुल कश्यप

लेखक व्यंग्यकार हैं।

ऊंट की दुविधा...

ऊँटनी चारे की खोज में गांव में दूर तक चली गई। वहां जब उसने चौपाल पर लोगो की बातों में बार बार 'ऊँट' का जिक्र आया तो वह हैरान और परेशान हो गई। सभी लोग कह रहे थे- 'देखते है इस बार ऊँट किस करवट बैठेगा'। थोड़ी देर तक वह चुपचाप सुनती रही फिर वह चिंतित हो उठी और बड़े बड़े कदम उठाती तेजी से डेरे की तरफ चल पड़ी; जहाँऊँट- ऊँटनी का परिवार रहता था।

लोगो की बात सच थी। ऊंट बहुत समय से डेरे पर खड़ा हुआ था। उसने सोचा- हाय राम,मेरा तो ध्यान ही नही गया। यह कब से खड़े है। कैसी पत्नी हूँ - वह अपराध बोध से भर उठी।

' हे प्राणनाथ। आप कब से खड़े हो। बैठ भी जाओ। थक गए होगें'- ऊँटनीविनम्रता से बोलो।

'अच्छा। फुर्सद मिल गई तुझे मेरा हाल पूछने की। मतलब तू आज पूरे गांव का चक्कर लगा आई। जरुर चौपाल भी गई थी '- ऊंट व्यंग्य से बोला।

ऊँटनी समझ गई कि प्राणनाथ नाराज है। वह धीरे से बोली- ' हाँ। स्वामी। पर आपको कैसे मालुम पड़ा कि मैं गांव गई थी। क्या करूँ। माँ जो हूँ। बच्चों की भूख मेरे से बर्दाश्त नही हो रही थी। यहाँ कहीं चारा मिल नहीं रहा था। इसलिए गांव चली गई।'

'तो फिर कुछ रोटी - शोटी गांव में मिली।'

'यही तो दुख है। सभी ग्रामवासी सारे काम धंधा छोड़ कर इसी बहस में लगे हैं।'

'क्या बहस कर रहे है?'

सभी एक ही बात कर रहे है कि-'देखे। इस बार ऊँट किस करवट बैठेगा। तुझे कैसे मालुम?'

'मैं भी वहीं गया था जहाँ तू गई थी। वही सुना जो तूने सुना। तब से ही खड़ा हुआ हूँ। समझ में नही आ रहा कि क्या करूँ।'

थोड़ी देर चुप रहने के बाद चिंतिंत स्वर में ऊँटनी बोली- 'स्वामी! ऐसे कब तक खड़े रहेगें। कभी न कभी तो बैठना पड़ेगा। फिर किस करवट बैठेंगे।'

'वही तो चिंता हो रही है। दो - चार साल गुजरते नही कि यह चक्कर शुरू हो जाता है कि ऊँट किस करवट बैठेगा।'

'कई फरक पड़ेगा। कोई भी करवट बैठ जा।'ऊँटनी बोली।

'कई बार तो यह लगता है कि कोई भी करवट बैठ जाऊं कई फर्क पड़े! पर मेरी प्राणप्यारी तुझे तो मालूम ही है कि मैं हरे चारे की तरफ करवट लेता हूँ। अब पहली जैसी दो करवटकहाँ रही ? आजकल तो दायें, बाएं, ऊपर, नीचे, आगे, पीछे सब तरफ देखना पड़ता है। इसलिए म्हारे को समझ सूझ कोनी पड़ रही। काश मेरे हाथ में होता तो हमेशा खड़ा ही रहता। जिससे सभी खुश रहते।' फिर आकाश की तरफ गर्दन उठा कर ऊँटबोला - 'हे प्रभु! अगले जनम मोहे ऊंट न कीजो..!'

स्वामी को गर्दन उठाते देख कर ऊँटनी ने भी गर्दन उठाई और ऊँट के सुर में सुर मिलाने लगी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

राजेंद्र बज

लेखक व्यंग्यकार हैं।

सोशल मीडिया में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बनाम पत्थरबाजी

लोकतंत्र की छत्रछाया में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भरपूर दोहन हो रहा है। आम आदमी तो अपनी निजी जिंदगी की उलझनो को ही सुलझाने में लगा हुआ है। लेकिन सबकी ऐसी किस्मत नहीं है कि आए दिन गले पड़ती उलझनों से पार पा सके। ऐसे में यदि उसे हल्का-फुल्का मनोरंजन करने वाला दृश्य नजर आ जाए या उसके कानों में कोई मनोरंजक शब्दों का संचार हो जाए, तो उसका कुछ हद तक गम गलत हो सकता है। वैसे तो जमाने में संताप ही संताप है, लेकिन हमारे यहां राजनीति भी ऐसी की जाती है जिसके चलते आम आदमी का अच्छा-खासा मनोरंजन हो जाता है। इस नाते वर्तमान दौर की राजनीति का मनोरंजक तत्व प्रबल है।

अन्यथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के रसास्वादन का अन्य कोई ठौर-ठिकाना भी तो नहीं! अब यदि आम आदमी यह कहे कि बिजली-पानी नहीं है, रोजगार का साधन नहीं है, महंगाई बढ़ रही है और भ्रष्टाचार निरंतर पैर पसार रहा है - तो भला क्या ऐसी बयानबाजी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता करार दिया जाएगा! नहीं न! दरअसल ऐसी अभिव्यक्ति को दर्द का इजहार जरूर कह सकते हैं, मनोरंजन का चित्रहार नहीं। तो भैया, जब राजनीति से सरोकार रखने वाले अपनी ही बिरादरी के प्रतिस्पर्धियों के खिलाफ जो कुछ ऊलजुलूल कहासुनी करते हैं, उसे अपने मनोरंजन का साधन मानकर चलना चाहिए। उनको गंभीरता से लेने की जरा भी आवश्यकता नहीं है।

बीते दौर में पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले राजनीतिक कार्टून ही मुख्य रूप से आम आदमी का 'राजनीतिक मनोरंज' किया करते थे। इसके अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली व्यंग्य रचनाएं भी आम आदमी का भरपूर मनोरंजन करते हुए व्यवस्था के विरुद्ध गंभीर सवाल खड़े करती थी। लेकिन अब इसका दायरा भी सिमटता जा रहा है। ऐसे में ले-देकर अब सोशल मीडिया का ही सहारा है कि आम आदमी के दर्द भरे नगमों के गीत गाकर व्यवस्था को ऐसी 'सुई' लगाई जाए कि रोते-गाते लोग खिलखिलाने लगे और अराजकता की बीमारी दूर भाग जाए। यदि गहराई से सर्वेक्षण किया जाए तो अखबारों में चाहे व्यंग्य सिमटकर रह जाए लेकिन सोशल मीडिया का विकल्प तो है ही।

आजकल सोशल मीडिया के चबूतरे पर राजनेताओं के बहकते बोलवचन के वीडियो-ऑडियो भी जमकर धूम मचाने लगे हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि मूल वीडियो में कोई 'कलाकारी' कर दी गई हो, लेकिन आम आदमी को मजा आता है। अब भैया, लोकतंत्र की राजनीति में यदि आम आदमी को मजा नहीं आए तो आखिर वह गम गलत करने हेतु निरंतर बढ़ती महंगाई में साधन-संसाधन भला कैसे जुटाए? राजनीति से परोक्ष रूप से सरोकार रखने वाले कुछ दिलजले लोग तो चार - छह पंक्तियों में ऐसी टिप्पणी जड़ते रहा करते हैं कि जिस किसी पर निशान साधा गया हो, उसकी तो जमीन हीं खिसक जाए। एक प्रकार से हमारे जुकरबर्ग देव की कृपा से इन दिनों अभिव्यक्ति का खुला खेल देखा जा रहा है।

हालांकि जो गणमान्य है, उनकी मान्यता को खंडित करते हुए अनर्गल प्रलाप को भी विस्तार दिया जा रहा हैं। जम्मू-कश्मीर में अब पत्थरबाजी बंद हो गई। लेकिन सोशल मीडिया में शाब्दिक पत्थरबाजी का दौर तो आम चुनाव के परिणाम आने तक लगातार विस्तार पाए जा रहा है। कभी-कभी आश्चर्य होता है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के यह मायने भी हो सकते हैं कि जिन्हें जनमत के बहुमत ने दो बार चुना हो, तीसरी बार के परिणाम आने के पूर्व उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को तार-तार करने की दिशा में नैतिक अनैतिक के अंतर को ही विस्मृत कर दिया जाए। यदि यही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, तो जंगल राज की परिभाषा क्या होना चाहिए?

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

भारत में विकसित किशोर न्याय प्रणाली और पुणे प्रकरण

हाल ही में दो लोगों की जान लेने वाली कार दुर्घटना में शामिल एक किशोर को 'किशोर न्याय बोर्ड' ने दुर्घटना पर निबंध लिखने तथा सामुदायिक सेवा करने की शर्तों पर पालकों की निगरानी में सुपुर्द कर दिया। इस कार्यवाही ने पूरे देश को झझकोर दिया। इसकी तीव्र प्रतिक्रिया ने संबंधित अधिकारियों को भी हिला दिया। अंततः इस किशोर के पिता-माता तथा दादा को भी गिरफ्तार किया गया। इस किशोर पर वयस्क आरोपी के रूप में मुकदमा चलाने के लिए भी न्यायालय की अनुमति भी मांगी गई।

यह मामला पालकों की घोर लापरवाही का भी माना जाएगा। इनके द्वारा अपने अल्पवयस्क बच्चे को जर्मन पोर्श गाड़ी चलाने को दी, उस बच्चे ने शराब पीकर दो व्यक्तियों को इस कार से कुचल दिया। इस 17 वर्षीय रईसजादे ने सुबह लगभग सवा तीन बजे पुणे के कल्याणी नगर इलाके में मोटर सायकल पर सवार दो लोगों को कुचला। इस दुर्घटना में दोनों (युवक और एक युवती) की मृत्यु हो गई। किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत इस नाबालिग को कुछ घंटों में ही जमानत दे दी गई। उसे इसके लिए मात्र एक दुर्घटना पर तीन सौ शब्दों का निबंध लिखना था। साथ ही क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय जाकर यातायात के नियमों का अध्ययन कर पंद्रह दिनों में बोर्ड के समक्ष एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना थी। बोर्ड ने उसे शराब निषेध केंद्र भेजने का भी निर्देश दिया था।

बोर्ड के इस आदेश ने पूरे देश को झंझोड़ दिया। इस त्वरित जमानत की तीव्र आलोचना व प्रतिक्रिया हुई। बाद में पुलिस ने लीपापोती करते हुए इस युवक के विरूद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 304 (गैर इरादतन हत्या) तथा मोटर वाहन अधिनियम के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया। युवक शराब के नशे में था। बाद में इस किशोर के पिता तथा दादा को भी गिरफ्तार किया गया। इसके बाद उसकी मां को आरोपी बेटे का ब्लड सैंपल बदलने का आरोपी पाया गया और गिरफ्तार किया गया। लेकिन, किशोर अपराधियों द्वारा किए अपराध का निराकरण भारत में कैसे होता है तथा इसके क्या प्रभाव एवं प्रावधान है, यह जानना निश्चित ही दिलचस्प होगा।

भारत में विकसित किशोर न्याय प्रणाली भी विचारणीय है। इस न्याय प्रणाली की परिभाषा में किशोर न्याय प्रणाली उन बच्चों से संबंधित है जिन्होंने किसी प्रकार से कानून का उल्लंघन किया है और जिन्हें देखभाल एवं संरक्षण की आवश्यकता है, ये उससे संबंधित है। भारत में 18 वर्ष से कम उम्र के व्यक्ति को किशोर माना जाता है। अवयस्क वह व्यक्ति है, जिसने पूर्ण कानूनी उत्तरदायित्व संबंधी आयु प्राप्त नहीं की है। इस कानून में किशोर एक ऐसा अवयस्क है जिसने कोई अपराध किया है और उसे देखभाल एवं सुरक्षा की आवश्यकता है। भारत में 7 वर्ष से कम उम्र के किसी भी बच्चे को लैटिन शब्द डॉक्ट्रिन ऑफ़ डोली इनकैपैक्स अर्थात ऐसा किशोर जिसकी अपराध करने की मंशा न हो और किसी कारण हो तो उसे अपराध के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

इसका अर्थ है कि अपराध करने का इरादा रखने में असमर्थ अथवा किशोर न्याय प्रणाली का मुख्य उद्देश्य युवा अपराधियों का पुनर्वास और उन्हें जीवन में दूसरा अवसर प्रदान करना है। इस सुरक्षा का मुख्य कारण यह है कि बच्चों/किशोर का मस्तिष्क पूरी तरह से विकसित नहीं होता और उनमें गलत एवं सही की पूरी समझ नहीं होती है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब माता-पिता उचित पालन-पोषण करने में असमर्थ होते हैं और घरों में हिंसा की घटनाएं होती हैं या एकल पेरेंट जो अपने बच्चों को लंबे समय तक असुरक्षित छोड़ देते हैं। समाचार, फिल्मे, वेब सीरीज, सोशल मीडिया और शिक्षा की कमी का प्रभाव भी बच्चों के आपराधिक गतिविधियों में लिप्त होने का कारण है।

भारत की स्वतंत्रता के बाद संविधान ने बच्चों की सुरक्षा और विकास के लिये मौलिक अधिकारों एवं राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों के तहत कुछ प्रावधान किए हैं। बाल अधिनियम-1960 इस अधिनियम ने किसी भी परिस्थिति में बच्चों के कारावास को प्रतिबंधित किया और देखभाल, कल्याण, प्रशिक्षण, शिक्षा, रखरखाव, सुरक्षा और पुनर्वास प्रदान किया है। किशोर न्याय अधिनियम, 1986 बाल अधिनियम को एकरूपता प्रदान करने हेतु किशोर न्याय अधिनियम, 1986 लागू किया गया। साथ ही संयुक्त राष्ट्र घोषणा, 1959 के अनुसार, किशोंरों की सुरक्षा के लिये मानक भी निर्धारित किये गए।

सन् 1959 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने बाल अधिकारों की घोषणा को अपनाया गया। किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2000 भारत सरकार द्वारा किशोर न्याय अधिनियम को निरस्त कर एक नया अधिनियम, किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2000 लाया गया। इसमें कानून के साथ विवाद और देखभाल एवं सुरक्षा की आवश्यकता जैसी बेहतर शब्दावली थी। जिन किशोरों का कानून के साथ टकराव होता है, उन्हें किशोर न्याय बोर्ड द्वारा नियंत्रित किया जाता है। जिन किशोरों को देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता होती है, उन्हें बाल कल्याण समिति द्वारा नियंत्रित किया जाता है। वर्ष 2006 में किशोर अधिनियम में किशोरावस्था को अपराध करने की तिथि से माने जाने के लिए संशोधन किया गया था।

किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015 के स्थान पर किशोर अधिनियम, 2000 को प्रतिस्थापित किया है। इस अधिनियम को संसद में काफी विवाद और विरोध के बाद पारित किया गया था। इसके द्वारा मौजूदा कानून में कई बदलाव किये गए हैं। इस अधिनियम के तहत जघन्य अपराधों में शामिल 16-18 आयु वर्ग के किशोरों को वयस्कों के रूप में माना गया है। इस प्रावधान के अनुसार एक ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट को एक किशोर द्वारा किये गये कार्य और उसकी मानसिक स्थिति को देखते हुए यह फैसला करना होता है कि उसे एक वयस्क की तरह देखा जाए या उसे जुवेनाईल जस्टिस बोर्ड के समक्ष भेजा जाए। किशोर न्याय प्रणाली को अधिक उत्तरदायी और समाज की बदलती परिस्थितियों के अनुसार बनाया गया है। अधिनियम अनाथ, परित्यक्त, आत्मसमर्पण करने वाले बच्चों की स्पष्ट परिभाषा देने के साथ उनके लिये एक संगठित प्रणाली प्रदान करता है।

हाल ही में किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल एवं संरक्षण) संशोधन विधेयक, 2021 राज्यसभा में पारित किया गया है। यह अधिनियम बच्चों की सुरक्षा और उन्हें गोद लेने के प्रावधानों को मजबूत करने तथा कारगर बनाने का प्रयास करता है। न्यायालय के समक्ष गोद लेने के कई मामले लंबित हैं तथा न्यायालय की कार्यवाही में तीव्रता लाने हेतु अब शक्तियों को जिला मजिस्ट्रेट को हस्तांतरित कर दिया गया है। संशोधन में प्रावधान है कि इस तरह के गोद लेने के आदेश जारी करने का अधिकार अब जिला मजिस्ट्रेट के पास है।

महाराष्ट्र की डायरी

नवीन कुमार

(मुंबई के वरिष्ठ पत्रकार और विश्लेषक)

महाराष्ट्र में 'एनडीए' को नुकसान के आसार क्यों?

'इंडिया' गठबंधन का दावा है कि इस बार एनडीए 2019 को नहीं दोहरा पाएगा। इसके पीछे यह तर्क दिया जा रहा है कि महाराष्ट्र की जनता को शिवसेना और एनसीपी में विभाजन नागवार गुजरा। अजित गुट के दिलीप वलसे पाटील और छगन भुजबल जैसे वरिष्ठ नेता मान चुके हैं कि उद्धव और शरद के साथ सहानुभूति की लहर है। यही लहर नरेंद्र मोदी के 400 सीटों के दावे में सेंध लगाती दिखाई दे रही है।

पूरे देश में 400 के पार और महाराष्ट्र को लेकर चर्चा है। एनडीए का दावा है कि इस बार लोकसभा चुनाव में वह 400 के पार जाने वाला है जबकि इंडिया आघाड़ी (इंडिया गठबंधन) को विश्वास है कि एनडीए 400 के पार नहीं जा पाएगा। इस नंबर गेम के अलावा एनडीए के लिए महाराष्ट्र बहुत महत्वपूर्ण राज्य है। यह राज्य उत्तर प्रदेश के बाद दूसरा सबसे बड़ा राज्य है जहां लोकसभा की 48 सीटें हैं। यहां नंबर गेम में अगर एनडीए पीछे रह जाता है तो उसके 400 पार के सपने को झटका लग सकता है। इसलिए महाराष्ट्र में बीजेपी ने ऐसे काम किए जो भारतीय राजनीति में बिल्कुल अनोखा है। बीजेपी ने राज्य की ताकतवर पार्टी बाल ठाकरे की शिवसेना और शरद पवार की एनसीपी में विभाजन करा दिया। सत्ता की खातिर शरद की पार्टी के साथ पवार परिवार में भी विभाजन की रेखा खिंच गई।

विभाजन के बाद बीजेपी ने एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और अजित पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी को साथ करके राज्य में अपनी सरकार बना ली और इस गठबंधन के साथ 2024 का लोकसभा का चुनाव भी लड़ लिया। नतीजे तो 4 जून को आएंगे। लेकिन उससे पहले एनडीए और इंडिया आघाडी के नेताओं के अलावा राजनीतिक पंडित जिस तरह से आंकलन कर रहे हैं उससे महाराष्ट्र के परिणाम चौंकाने वाले आ सकते हैं। महाराष्ट्र क्यों चौका सकता है उसके पीछे कुछ तथ्य सामने आए हैं। कहा जाता है कि एनडीए और इंडिया आघाडी ने जिस तरह से गठबंधन बनाया है उसमें खासकर एनडीए में विश्वास, धोखा और सहानुभूति का असर ज्यादा दिख रहा है।

यह स्थिति इंडिया आघाड़ी में कम है। क्योंकि, इंडिया आघाडी ने जिस तरह से सीटों का बंटवारा किया और बाद में जिस तरह से चुनाव प्रचार किया उसमें एनडीए वाली स्थिति नहीं है। एनडीए में सीटों के बंटवारे में काफी खींचतान हुई थी और बीजेपी के साथ शिंदे गुट की शिवसेना और अजित गुट की एनसीपी में विश्वास की कमी देखी गई और चुनाव प्रचार में धोखा की भी परछाई देखी गई है। लेकिन इंडिया आघाडी में यह सब नहीं रहा है। इससे इंडिया आघाड़ी में एकजुटता ज्यादा रही है और एनडीए में अंतर्विरोध ज्यादा रहा है। इस अंतर्विरोध ने ही धोखे को बढ़ावा दिया है और उसका असर नतीजे पर दिख सकता है। इसलिए महाराष्ट्र से एनडीए को खतरा ज्यादा है। इस खतरे का आभास तो एनडीए को होगा। इसलिए बीजेपी अपने दावे पर अटल है और कह रही है कि एनडीए को 45 सीटें मिलने वाली है। हालांकि, इंडिया आघाडी एनडीए के इस दावे को गलत बताते हुए कह रहा है कि इस बार बाजी इंडिया आघाडी के पास है। इंडिया आघाड़ी को 30-35 सीटें मिलने वाली हैं।

एनडीए और इंडिया आघाड़ी सीटों को लेकर जो भी दावे कर रहे हों लेकिन एनडीए के पक्ष में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस तरह से महाराष्ट्र में 18 रैलियां की उससे तो यह स्पष्ट है कि एनडीए के लिए महाराष्ट्र कितना महत्वपूर्ण है। दूसरी तरफ इंडिया आघाडी के पक्ष में शरद और उद्धव ठाकरे ने भी चुनौतीपूर्ण रैलियां की। इससे इंडिया आघाडी में कांग्रेस को भी फायदा दिख रहा है। इसके आधार पर इंडिया आघाड़ी दावा कर रहा है कि इस बार एनडीए 2019 को नहीं दोहरा पाएगा। इसके पीछे यह तर्क दिया जा रहा है कि महाराष्ट्र की जनता को शिवसेना और एनसीपी में विभाजन नागवार गुजरा है। अजित गुट के दिलीप वलसे पाटील और छगन भुजबल जैसे वरिष्ठ नेता मान चुके हैं कि उद्धव और शरद के साथ सहानुभूति की लहर है।

इन नेताओं के अलावा राजनीतिक विश्लेषक और मैक्स महाराष्ट्र डिजिटल चैनल के कार्यकारी संपादक मनोज भोयर का कहना है कि बीजेपी ने शिंदे गुट और अजित गुट को एनडीए-महायुति में शामिल करके अपनी स्थिति जरूर मजबूत कर ली थी। लेकिन उद्धव और शरद ने जब रैलियां की तो उनसे लोग जुड़ने लगे यह मानकर कि ये लोग कमजोर हैं और इनकी मदद करनी चाहिए। इनके साथ इस तरह से सहानुभूति जुड़ी और चुनाव प्रचार के लिए जब 83 साल के शरद मैदान में उतरे तो यह सहानुभूति लहर की तरह दिखी। राजनीतिक विश्लेषक राजेंद्र थोरात मानते हैं कि जिस उद्धव को बीजेपी कमजोर मान रही थी वही अब बीजेपी के लिए चुनौती के रूप में खडे हो गए। राजनीतिक विश्लेषक अभिमन्यु शितोले कहते हैं कि इंडिया-महा विकास आघाड़ी ने जिस रणनीति के तहत चुनाव प्रचार को अंजाम दिया उससे एनडीए को महाराष्ट्र में झटका लगने वाला है।

चुनाव प्रचार के दौरान की एक महत्वपूर्ण बात पर ध्यान देने की जरूरत है। शिवसेना और एनसीपी के विभाजन के बाद यह कहा जा रहा था कि इन्हें अपने नए चुनाव चिन्ह मशाल (शिवसेना उद्धव गुट) और तुतारी (एनसीपी शरद गुट) पर लड़ना आसान नहीं होगा। लेकिन मोदी ने अपनी हरेक रैली में नकली शिवसेना और नकली एनसीपी कहने के साथ ही इसके चुनाव चिन्ह भी बताते रहे हैं। उद्धव और शरद ने भी अपने विरोधी को जवाब देते हुए अपने चिन्ह का भी प्रचार किया। इससे यह हुआ कि मतदाताओं के बीच चुनाव चिन्ह को लेकर किसी तरह का भ्रम नहीं रहा। सहानुभूति बढ़ाने में उद्धव का नरम हिंदुत्व काम आया।

अल्पसंख्यक समुदाय के लोग उद्धव के जरिए इंडिया आघाड़ी की ओर झुके दिखे। इसके पीछे एक और बात बतायी जा रही है कि मोदी और एनडीए के नेताओं ने अपने कट्टर हिंदुत्व की वजह से अल्पसंख्यकों के आरक्षण के खिलाफ ही आवाज उठाई। यह सब सोशल मीडिया पर भी खूब छाया रहा। इसका भी मनोवैज्ञानिक असर मतदाताओं पर पड़ा है। तभी तो शिंदे गुट के सांसद गजानन कीर्तिकर ने यह कहकर हलचल पैदा कर दी कि महाराष्ट्र में इंडिया आघाडी को एनडीए से ज्यादा सीटें मिलेगी। उद्धव और शरद के उम्मीदवारों ने एनडीए को अच्छी टक्कर दी है। यह सच कहने पर बीजेपी और शिंदे गुट के नेताओं ने गजानन की आलोचना की और उन पर कार्रवाई करने की भी मांग की है। लेकिन शिंदे चुनाव नतीजे का इंतजार कर रहे हैं।

शिंदे गुट के अलावा अजित गुट से भी कुछ सच्चाई बयान हो रहे हैं। अजित गुट के वरिष्ठ नेता छगन भुजबल ने कहा कि 400 पार के नारे से एनडीए को नुकसान होगा। क्योंकि, इस नारे से दलित-आदिवासी डरे हुए हैं। ध्यान रहे कि इंडिया आघाडी ने 400 पार के नारे के पीछे का राज यह बताया कि मोदी संविधान बदलना चाहते हैं और देश के लोकतंत्र को खतरा है। भुजबल ने कहा कि महाराष्ट्र में उद्धव और शरद के प्रति सहानुभूति है। इससे एनडीए की राह आसान नहीं है। राजनीतिक विश्लेषक भोयर का कहना है कि इस बार सबसे ज्यादा मतदान आदिवासी इलाकों में हुआ है। यह भुजबल के 400 पार के नारे के बारे में दिए बयान को पुख्ता करता है। एक बात का और जिक्र करना जरूरी है कि एनडीए के घटक दलों के बीच धोखा की भी स्थिति रही है। वह भी उजागर होने लगा है।

शिंदे गुट के नेताओं ने अजित गुट के नेताओं पर खुले तौर पर आरोप लगाया कि उनके उम्मीदवारों के लिए प्रचार नहीं किया है। वैसे, वोट खरीदने के लिए धन बल का भी भरपूर प्रयोग हुआ है। ऐसी स्थिति में यह कहना मुश्किल है कि इंडिया आघाडी से ज्यादा सीटें एनडीए को मिल पाएगा क्या। अब जमीनी स्तर पर राजनीतिक विश्लेषकों ने जिस तरह से अध्ययन किया है उसमें भी मतदाताओं के मूड के आधार पर उनकी राय अलग-अलग है। एक और बात है कि मोदी और एनडीए मुद्दा विहीन रहे हैं जबकि इंडिया आघाडी ने संविधान बदलने और लोकतंत्र के खतरे के साथ किसानों, महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी के मुद्दे को उठाया।

ऐसे में भोयर का आकलन है कि इंडिया आघाडी को 20 से अधिक सीटें और एनडीए को 28 सीटें मिल सकती हैं। थोरात का दावा है कि आघाडी को 30-35 सीटें मिल सकती है और बीजेपी को भारी नुकसान हो सकता है। राजनीतिक विश्लेषक विवेक भावसार का भी कहना है कि बीजेपी और शिंदे गुट मिलकर 20 सीटें हासिल कर सकती है और इंडिया आघाडी को फायदा दिख रहा है। उसके हिस्से में 28 सीटें आ सकती हैं। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इन राजनीतिक विश्लेषकों ने यह दावा किया है कि अजित गुट का खाता नहीं खुल पाएगा। आकलन जो भी हो सही नतीजे के लिए 4 जून का इंतजार तो करना ही पड़ेगा।

विश्व साइकिल दिवस पर विशेष

रमेश सर्राफ धमोरा

लेखक पत्रकार हैं।

पर्यावरण हितैषी वाहन है साइकिल

भारत की आर्थिक तरक्की में साइकिल ने बहुत अहम भूमिका निभाई है। आजादी के बाद से ही साइकिल देश में यातायात व्यवस्था का अनिवार्य हिस्सा रही है। खासतौर पर 1960 से लेकर 1990 तक भारत में ज्यादातर परिवारों के पास साइकिल थी। यह व्यक्तिगत यातायात का सबसे ताकतवर और किफायती साधन था। गांवों में किसान साप्ताहिक मंडियों तक सब्जी और दूसरी फसलों को साइकिल से ही ले जाते थे। दूध की सप्लाई गांवों से पास से कस्बाई बाजारों तक साइकिल के जरिये ही होती थी। डाक विभाग का तो पूरा तंत्र ही साइकिल के बूते चलता था। आज भी पोस्टमैन साइकिल से चिट्ठियां बांटते हैं। चीन के बाद आज भी भारत दुनिया में सबसे ज्यादा साइकिल बनाने वाला देश है।

दो सौ साल पहले 12 जून 1817 को जर्मनी के मैनहेम में बैरन कार्ल वॉन ड्रैस ने दुनिया की पहली साइकिल पेश की थी। यह लकड़ी से बना था और इसमें पैडल, गियर या जंजीर नहीं थी। उसने खुद को पहले एक पैर से और फिर दूसरे पैर से धकेला। उन्होंने इसे लॉफमाशाइन (जर्मन में चलने वाली मशीन) कहा। अब तो जापान के फुकुकोआ शहर में छात्रों ने एक ऐसी साइकिल बनाई है जो हवा से चलती है। इसकी अधिकतम रफ्तार 64 किलोमीटर प्रति घंटा है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड ने इसे कंप्रेस्ड हवा से चलने वाली दुनिया में सबसे तेज साइकिल का सर्टिफिकेट दिया है।

3 जून 2018 को विश्व में पहला विश्व साइकिल दिवस मनाया गया। तब से दुनिया में प्रतिवर्ष साइकिल दिवस मनाया जाने लगा है। इस बार हम छठवां विश्व साइकिल दिवस मना रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने परिवहन के सामान्य, सस्ते, विश्वसनीय, स्वच्छ और पर्यावरण अनुकूल साधन के रूप में इसे बढ़ावा देने के लिए विश्व साइकिल दिवस को मनाने की घोषणा की थी।

भारत में भी विकसित की जा रही ज्यादातर आधारभूत आधुनिक संरचनाएं मोटर-वाहनों को ही सुविधा प्रदान करने के लिए बन रही हैं। साइकिल जैसे पर्यावरण-हितैषी वाहन को नजरअंदाज किया जा रहा है। जबकि शहरी व ग्रामीण परिवहन में भी साइकिल का महत्वपूर्ण स्थान है। खासतौर से कम आय-वर्ग के लोगों के लिए साइकिल उनके जीविकोपार्जन का एक सस्ता, सुलभ और जरूरी साधन है। यह इसलिए भी कि भारत का कम आय-वर्ग के लोग अपनी कमाई से प्रतिदिन सौ-पचास रुपये परिवहन पर खर्च करने में सक्षम नहीं हैं।

भारत सरकार अपनी साइकिल परिवहन व्यवस्था में कुछ जरूरी मूलभूत सुधार करके आम और खास लोगों को साइकिल चलाने के लिए प्रेरित कर सकती है। सरकार के इस कदम से ऐसे सभी लोग प्रेरणा पा सकते हैं। जिनकी प्रतिदिन औसत यातायात दूरी पांच-सात किलोमीटर के आसपास बैठती हैं। हमारे देश की कई राज्य सरकारें अपने स्कूली छात्र-छात्राओं को बड़ी संख्या में साइकिल वितरण कर रही हैं। जिससे साइकिल सवारों की संख्या में वृद्धि हुई है। 'द एनर्जी ऐंड रिसर्च इंस्टीट्यूट' के अनुसार पिछले एक दशक में साइकिल चालकों की संख्या ग्रामीण क्षेत्रों में 43 फीसदी से बढ़कर 46 फीसदी हुई है। जबकि शहरी क्षेत्रों में यह संख्या 46 फीसदी से घटकर 42 फीसदी पर आ गई है। इसकी मुख्य वजह साइकिल सवारी का असुरक्षित होना ही पाया गया है।

बच्चे सबसे पहले साइकिल चलाना ही सीखते है। इसलिये बचपन में हम सभी ने साइकिल चलाई है। पहले के जमाने में जिसके पास साइकिल होती थी वह बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता था। गांव के लोग जब कभी शहरों में जाते थे। तब लोगों को साइकिल चलाते हुए देखते थे और फिर वे खुद भी धीरे-धीरे साइकिल चलाना सीख जाते थे। पहले शहरों में किराए पर भी साइकिले मिलती थी।

देश की युवा पीढ़ी को अब साइकिल के बजाय मोटरसाइकिल ज्यादा अच्छी लगने लगी है। शहरों में मोटरसाइकिल का शौक बढ़ रहा था। गांवों में भी इस मामले में बदलाव की शुरुआत हो चुकी थी। इसके बावजूद भारत में साइकिल की अहमियत खत्म नहीं हुई है। 1990 के बाद से साइकिलों की बिक्री में बढ़ोतरी आई है। लेकिन ग्रामीण इलाकों में इसकी बिक्री में गिरावट आई है। दरअसल 1990 से पहले जो भूमिका साइकिल की थी। उसकी जगह गांवों में मोटरसाइकिल ने ले ली है। इसके उपरांत भी साइकिल आज भी हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं।

देश में लॉकडाउन के दौरान दूसरे प्रदेशों में कमाने गए लाखों लोग साइकिल पर 1000-1500 किलोमीटर की दूरी तय कर अपने घर पहुंचे थे। संकट के समय साइकिल ही उनके घर पहुंचने का एकमात्र साधन बनी थी। लॉकडाउन के दौरान लाखों लोगों के घर पहुंचने का सबसे उपयोगी साधन बनने से लोगों को यह बात अच्छी तरह समझ में आ गयी की साइकिल आज भी आम लोगों का सबसे सस्ता व सुलभ साधन है। अब तो विभिन्न प्रकार के फीचर से लैस गियर वाली कीमती साइकिले बाजार में आ गई है। पहले लोगों के पास सामान्य साइकिले ही हुआ करती थी। जिनके पीछे एक कैरियर लगा रहता था। जिस पर व्यक्ति अपना सामान रख लेता था व जरूरत पड़ने पर दूसरे व्यक्ति को बैठा लेता था। कई बार तो साइकिल सवार आगे लगे डंडे पर भी अपने साथी को बिठाकर 3-3 लोग साइकिल पर सवारी करते थे। साइकिल से वातावरण में किसी तरह का प्रदूषण नहीं होता था। पेट्रोल डलवाने का झंझट भी नहीं था। साइकिल उठाई पैडल मारे और पहुंच गए अगले स्थान पर। पहले के जमाने में साइकिल के आगे एक छोटी सी लाइट भी लगी रहती थी। जिसका डायनुमा पीछे के टायर से जुड़ा रहता था। साइकिल सवार जितनी तेजी से साइकिल चलाता उतनी ही अधिक लाइट की रोशनी होती थी।

तीन साल पहले विश्व साइकिल दिवस के दिन ही भारत की सबसे बड़ी साइकिल निर्माता कम्पनी एटलस बंद हो गयी थी। प्रतिवर्ष 40 लाख साइकिल का उत्पादन करने वाली भारत की सबसे बड़ी व दुनिया की जानी मानी कम्पनी एटलस के बंद होने से साइकिल उद्योग को बड़ा धक्का लगा है। एटलस की फैक्ट्री बंद होने से वहां काम करने वाले करीबन एक हजार लोग बेरोजगार हो गये। एटलस साइकिल कम्पनी की स्थापना 1951 में हुई थी। इसका कई विदेशी साइकिल निर्माता कंपनियों के साथ गठबंधन था। जिस कारण एटलस कम्पनी की साइकिल दुनिया भर की श्रेष्ठ साइकिलों में शुमार होती थी। अमेरिका के बड़े-बड़े डिपार्टमेंट स्टोर में भी एटलस की साइकिले बेची जाती थी।

अब समय आ गया है कि शहर एवं गांवो में साइकिल चालन को एक बड़े स्तर पर प्रोत्साहन देने का। ताकि बढ़ते प्रदूषण को कुछ हद तक रोका जा सके। शहरों में समर्पित साइकिल मार्गों का निर्माण किया जाना चाहिये। हमें विश्व साइकिल दिवस को महज एक सांकेतिक कवायद के रूप में नहीं देखना चाहिये। आज के दिन हमें मन ही मन इस बात का संकल्प लेना चाहिये कि हम हमारे रोजमर्रा के काम साईकिल से पूरा करेगें। तभी सही मायने में साइकिल दिवस मनाना सफल हो पायेगा।

बढ़ते प्रदूषण की वजह से दुनिया के बहुत से देशों में साइकिल चलाने को बढ़ावा दिया जा रहा है। नीदरलैंड की राजधानी एम्सटर्डम में सिर्फ साइकिल चलाने की ही अनुमति है। भारत में भी दिल्ली, मुंबई, पुणे, अहमदाबाद और चंडीगढ़ में सुरक्षित साइकिल लेन का निर्माण किया गया है। उत्तर प्रदेश में भी 200 किलोमीटर लम्बा एशिया का सबसे लंबा साइकिल हाई वे बना है। अभी देश में साइकिल चालकों के अनुपात में साइकिल रोड़ विकसित किए जाने की प्रबल आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से देखा जाए तो दुनिया के देशों में साइकिल की वापसी पर्यावरण की दृष्टि से एक शुभ संकेत माना जा सकता है।

बंटाधार योजना बनकर रह गई है हरदौली जल आवर्धन योजना

बगैर भौतिक सत्यापन के हो गया करोड़ का भुगतान, जांच के लिए अधीक्षण यंत्री भोपाल को पालिका लिखेगी पत्र

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर की पेयजल समस्या के स्थाई समाधान के लिए बनाई गई हरदौली जल आवर्धन योजना बंटाधार योजना बनाकर रह गई है । बीते डेढ़ दशक में करोड़ों रुपए खर्च के बावजूद भी इसका लाभ नगर की जनता को नहीं मिल रहा है। जब हरदोली से पानी मुलताई आना प्रारंभ हुआ था माना जा रहा था कि अब प्रतिदिन नहीं तो कम से कम एक दिन आड़ में नगर वासियों को पेयजल मिल सकेगा। किंतु अब नगर पालिका का कहना है की अमृत 2.0 योजना के तहत बनाई गई नई 7 करोड़ की योजना के बाद नगर को पानी मिल सकेगा। चौका देने वाला तथ्य यह है की हरदोली योजना के पेयजल घटक के ठेकेदारों को नगर पालिका अब तक करोड़ों रुपए का भुगतान कर चुकी है और अब भी कर रही है किंतु जब यह पूछो कि दोनों ठेकेदारों में से किस कार्य का भुगतान किस ठेकेदार को कितना किया , क्या किए गए कार्य का भौतिक सत्यापन हुआ है। इस संपूर्ण योजना के रोडमैप की जानकारी किसे है तो सभी का जवाब आता है इसकी जानकारी नहीं है। एक सामान्य व्यक्ति अगर घर के लिए रू. 100 का सामान लेता है तो 10 बार जाचता, सोचता ,परखता है किंतु रोचक तथ्य है कि नगर पालिका ने दो ठेकेदारों को करोड़ों रुपए का भुगतान कर डाला और किसी को मालूम ही नहीं है कि जिस पाइपलाइन या जिस सामग्री का भुगतान किया गया है वह कहां है। इन 12 वर्षों में चार परिषद हो गई है हरदौल योजना आज भी बंटाधार योजना बन कर रह गई है और लोग आज भी पेयजल समस्या से जूझ रहे हैं।

किस को हुआ कितना भुगतान कहां गई करोड़ों की राशि- हरदौली पेयजल घटक में अब तक हुई बंदरबाट और नदारद हुई राशि को लेकर अनेक प्रश्न ऐसे हैं जिसका जवाब किसी के पास नहीं है। काम अधर में है राशि गायब, नगर पालिका भुगतान करते जा रही है उसे यह नहीं मालूम कि किस डिजाइन ड्राइंग पर कार्य हो रहा है। जो कार्य हो रहा है वह गुणवत्ता पूर्ण है अथवा नहीं। माह में एक बार बैतूल से उपयंत्री मुलताई आते हैं ठेकेदार की जानकारी के आधार पर (एमबी) माप पुस्तिका कार्य रिकॉर्ड करके बिल आगे बढ़ा दिया जाता है। यह सिलसिला लंबे समय से चल रहा है। पहली बार हरदोली पेयजल घटक का ठेका 11 करोड़ का हुआ था यह राशि शासन से नगर पालिका प्राप्त हुई थी। नगर पालिका के सूत्रों का कहना है कि अब तक लगभग 8 करोड़ का भुगतान दोनों ठेकेदारों को मिलाकर कर दिया गया है और अब योजना की राशि समाप्त हो गई है तो बड़ा प्रश्न यह है कि योजना की शेष राशि कहां गई इसकी संपूर्ण जांच की जानी चाहिए।

पुराने ठेकेदार द्वारा किए गए कार्य- हमने यह जानने का प्रयास किया की हरदौली पेयजल घटक के दो ठेकेदारों में से मोटा माटी किसने कितना कार्य किया और किसको कितना अनुमानित भुगतान हुआ। हरदौली पेयजल घटक का ठेका आज से 12 वर्ष पूर्व एस के लोखंडे को दिया गया था। योजना की राशि थी लगभग 11 करोड़, लोखंडे ने दो पानी की टंकियों का निर्माण किया, एक हरदौली मार्ग पर और दूसरी सिविल लाइन में ,हरदौली साइट पर फिल्टर प्लांट स्ट्रक्चर निर्माण एवं समवेल निर्माण किया गया, लोखंडे के अनुसार लगभग 25 किलोमीटर की पाइपलाइन डाली गई । इन सब कार्यों का भुगतान लोखंडे को एक अनुमान के आधार पर नगर पालिका द्वारा 3 करोड़ से 4 करोड़ बताया जाता है। किंतु कार्यों का भी भौतिक सत्यापन नहीं किया गया था । लोखंडे का कहना था कि उसे पेयजल घटक का 3 करोड़ का भी भुगतान नहीं किया गया।

कम दिख रहे है काम फिर भी हो गया 4 करोड़ का भुगतान- तत्कालीन नगर पालिका ने एसके लोखंडे का ठेका निरस्त कर फिर नया टेंडर 4 करोड़ 75 लाख रुपए का ठेका आदि एक्का कंपनी को दिया। नगर पालिका से मीली जानकारी के अनुसार आदि एक्का ठेकेदार को अब तक 4 करोड़ से अधिक का भुगतान किया गया है। किंतु जानकारो का मानना है कि लोखंडे की तुलना में इतने कम कार्य का 4 करोड़ भुगतान आम आदमी के गले नहीं उतर रहा है। और इस बार भी वही गलती हो रही है बगैर जांच एवं भौतिक सत्यापन के भुगतान किया जा रहा है।

वर्तमान ठेकेदार के कार्य देख तो..- ठेकेदार ने हरदौली बांध पर इंटेकवेल का निर्माण किया, हरदौली बांध पर 2 लाख की लागत से विद्युत डीपी लगाई। और कहां जा रहा है कि फिल्टर प्लांट की मोटर खरीद कर लगाई गई। 12 किमी पाइप लाइन का विस्तार किया। अगर दोनों ठेकेदारों के कार्यों की तुलना करें तो यह कार्य कम दिखाई देते हैं किंतु उसके बावजूद भी वर्तमान ठेकेदार को पूर्व ठेकेदार की तुलना में अधिक भुगतान किया गया और आज भी ठेकेदारों को निरंतर भुगतान किया जा रहा है । तो यह प्रश्न उठना वाजिब है कि वर्तमान ठेकेदार को भुगतान क्या अपने ही कार्यों का किया गया अथवा पिछले ठेकेदार के कार्यों का इसकी भी जानकारी किसी के पास में नहीं है । दोनों ठेकेदारों के कार्यों का किए गए भुगतान के आधार पर बहुत टीम बनाकर के भौतिक सत्यापन किया जाना चाहिए और संपूर्ण मामले की जांच और विशेष तौर से दोनों ठेकेदार की डीपीआर और किए गए कार्य का मिलान किया जाना चाहिए ।

इनका कहना

हरदौली जलावर्धन योजना की जांच और किस ठेकेदार को कितना भुगतान हुआ इसके भौतिक सत्यापन के लिए अधीक्षण यंत्री भोपाल को पत्र लिख रहे हैं।

-आर के इवनाती,
मुख्य नगरपालिका अधिकारी मुलताई

चापड़ा रैयत में खनिज मुरूम के अवैध उत्खनन पर प्रकरण दर्ज

बैतूल। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, पुलिस अधीक्षक श्री निश्चल झारिया के निर्देशन में अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भंडारण करने वाले माफियाओं के विरुद्ध पुलिस, खनिज एवं राजस्व अधिकारियों द्वारा प्रशासनिक कार्यवाही की जा रही है।

उप संचालक (खनिज प्रशासन) मनीष पालेवार ने बताया कि शाहपुर क्षेत्र अंतर्गत ग्राम चापड़ा रैयत में खनिज मुरूम का अवैध उत्खनन का मामला सामने आने पर अनुविभागीय अधिकारी (रा.) एवं तहसीलदार शाहपुर द्वारा जांच की गई। जांच के दौरान ग्राम चापड़ा रैयत तहसील शाहपुर स्थित भूमि ख.न. 20/1 रकबा 2.925 हे0 क्षेत्र पर खनिज मुरूम का अवैध उत्खनन होना पाया गया। उक्त भूमि गोपाल वल्द मुन्ना अहीर वगैरह के नाम से राजस्व रिकार्ड में दर्ज है, जिसमें मौके पर 12 मीटर लंबाई, 9 मीटर चौड़ाई, 2 मीटर गहराई कुल मिलाकर 216 घनमीटर का मुरूम का गड्ढा पाया गया। इस गड्ढे में से मुरुम निकालकर उक्त मुरुम को भूमि स्वामी शरद कुमार जैन के निर्माणाधीन नवीन मकान/ दुकान के लिए डाला गया था। जिसका ख.न. 6/2/2 रकबा 0.500 हे. राजस्व रिकार्ड में दर्ज है।

खनिज मुरूम का अवैध परिवहन करते ट्राली जब्त- श्री पालेवार ने बताया कि मौके पर बिना नंबर की एक ट्राली खड़ी पाई गई, जिसमें मुरूम भरी हुई थी। जांच के दौरान पाया गया कि उक्त मुरुम का अवैध उत्खनन कर शरद कुमार जैन द्वारा अपने निर्माणाधीन स्थल पर ले जाया जा रहा था। मौके पर उपस्थित राजस्व अमला द्वारा पंचनामा बनाया गया। उक्त प्रकरण पर मध्यप्रदेश अवैध खनन, परिवहन और भण्डारण नियम 2022 के प्रावधानों के तहत प्रकरण न्यायालय कलेक्टर बैतूल में प्रस्तुत कर कार्यवाही की जा रही है।

जाम के पेड़ पर फांसी के फंदे से लटका मिला युवक का शव

शराब के नशे में मोटरसाइकिल से गिरा युवक घायल

बैतूल/मुलताई। मुलताई क्षेत्र के ग्राम बिरोली झिल्पा में एक युवक का शव उसके घर के पास ही अमरूद के पेड़ पर लटका मिला जिससे ग्राम में सनसनि का माहौल है। प्राप्त जानकारी अनुसार बिरोली झिल्पा निवासी सुनील पुत्र भिखारी बारंगे जो को गांव में अपनी मां के साथ रहता था। उसका शव उसके घर के पास ही लगे अमरूद के पेड़ पर एक गमछे से बने फांसी के फंदे पर झूलता हुआ मिला। प्रभात पट्टन पुलिस चौकी प्रभारी रघु कोकोड़े ने बताया की जानकारी मिलने के बाद वे मौके पर पहुंचे और शव को नीचे उतरवाकर पंचनामा बनाया गया। जिसके बाद शव को पीएम के लिए प्रभात पट्टन भेज दिया गया। बताया जा रहा है कि मृतक सुनील की शादी हो चुकी थी लेकिन उसकी पत्नी उसके मायके में ही रह रही थी। दो भाई खेत में रहते है, जबकि उसकी मां उसके पास गांव में ही रहती थी। उसकी मां ने बताया की जब वह सुबह उठी तो उसे सुनील घर में दिखाई नहीं दिया, बाहर निकल कर देखा तो वह फांसी पर झूलता दिखाई दिया। जिसके बाद वह घबरा गई और उसने आस पास के लोगों को बुलाया और जानकारी पुलिस को दी गई। फिलहाल पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले को जांच में लिया है।

मोटरसाइकिल दुर्घटना में युवक घायल- मुलताई नागपुर नेशनल हाईवे 47 पर स्थित खंबारा टोल प्लाजा के पास एक युवक की मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई जिसमें युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। बताया जा रहा है कि युवक नशे में था। प्राप्त जानकारी अनुसार मुलताई कामथ निवासी अभिषेक पुत्र उत्तम पद्माकर उम्र 25 वर्ष जो की नागपुर की ओर बाइक से जा रहा था। तभी अचानक खंबारा टोल प्लाजा के पास उसकी बाइक अनियंत्रित हुई और वह गिरकर घायल हो गया। उसके सड़क पर गिरने से सर में गंभीर रूप से चोट आई। जिसके बाद नेशनल हाईवे एंबुलेंस के माध्यम से मुलताई नगर के सरकारी अस्पताल लाकर भर्ती कराया गया युवक नशे की हालत में था और बिना हेलमेट लगाए ही बाइक चला रहा था। जिसके चलते गिरने से उसके सर में गंभीर रूप से चोट आई। जिसका मुलताई के सरकारी अस्पताल में प्राथमिक उपचार कराया गया।

अतिक्रमणकारियों पर नपा ने की चालानी कार्रवाई दुकानदार महिला ने फाड़ कर फेंकी रसीद

बोली 30 साल से बैठे है यही बैठेंगे

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर के तापी सरोवर के आसपास नगर पालिका द्वारा बीते 5 दिनों से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जा रही है। बावजूद इसके आरती द्वार पर तीन लोगों द्वारा नारियल की दुकान अभी तक भी नहीं हटाई गई है। पहले भी उनका चालान फाड़ दिया गया है। रविवार फिर से नगर पालिका के कर्मचारी दुकान हटाने मौके पर पहुंचे थे, दुकान लगी पाए जाने पर उनका चालान फाड़ा गया। चंदू लाल साहू, कृष्णा साहू और संजय जैन की 500 रुपए के चालान फाड़े गए। जिसमे से संजय जैन की पत्नी ने चालान की रसीद अधिकारियों और कर्मचारियों के सामने ही फाड़ कर फेंक दीं और कहा कि हम 30 साल से यहां पर बैठे हैं और यहीं पर बैठेंगे। हम यहां से नहीं हटेंगे, यही लेट जाएंगे। रसीद फाड़ कर फेकने और दुकान नहीं हटाने की बात पर नगर पालिका द्वारा कार्रवाई करने की बात कही गई है। तीनों दुकान संचालकों को अगले 12 घंटे में दुकान हटा लेने के लिए कहा गया है। अन्यथा नगर पालिका द्वारा दुकान का सामान जप्त करने की कार्रवाई की जाएगी।

घायल की फरियाद सुनी तो तीन बजे रात अस्पताल पहुंच गए कलेक्टर सूर्यवंशी, लगाई फटकार

बैतूल। कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी बीती रात एक घायल युवक के परिजन की शिकायत पर महज पांच मिनट में जिला अस्पताल पहुंच गए। उन्होंने उस घायल को देखा, जिसका सिटी स्कैन नहीं हो पा रहा था। मरीज भर्ती होने के बाद तीन घंटे से तड़प रहा था। यहां रात 12 बजे पट्टन सीएचसी से रेफर दुर्गेश (17) को भर्ती कराया गया था। रात को पट्टन से सांवरी जाते समय उसकी बाइक को पिकअप ने टक्कर मार दी थी। जिसमें उसका जबड़ा टूट गया था। वह रात 12 बजे रेफर होकर जिला अस्पताल आया। लेकिन रात तीन बजे तक भी उसका इलाज शुरू नहीं हो सका था। ऐसे में घायल के साथ आए बैतूल आईटीआई में पढ़ने वाले छात्र निलेश आहके ने रात 3 बजे कलेक्टर को जैसे ही फोन लगाया। इस फोन के महज 5 मिनट बाद कलेक्टर जिला अस्पताल पहुंच गए। उन्होंने यहां मौजूद स्टॉप को जमकर फटकार लगाई। मरीज को सिटी स्कैन की जरूरत थी। लेकिन स्कैन के लिए आधार कार्ड और रुपए मांगे जा रहे थे। जो उसके पास नहीं थे। जिसके बाद उसने रात तीन बजे कलेक्टर को काल कर दिया। कलेक्टर इस दौरान कहीं से लौट रहे थे। वे उतनी हीं रात जिला अस्पताल पहुंच गए।

कलेक्टर जिला चिकित्सालय पहुंचने के बाद अपनी गाड़ी से उतरते ही सीधे तीसरी मंजिल के पुरुष सर्जिकल वार्ड पहुंच गए और शिकायतकर्ता से मरीज की जानकारी ली और मरीज की हालत देख कलेक्टर ने नाराज होते हुए वहां मौजूद नसों को फटकार लगाई, वहीं ड्यूटी डॉक्टर और सीएमएचओ सहित सीएस को तत्काल जिला चिकित्सालय पहुंचने को कहा। आनन फानन में सीएमएचओ और सिविल सर्जन सहित जिला चिकित्सालय के अधिकारी जिला चिकित्सालय पहुंचे, जहां कलेक्टर ने नाराजगी व्यक्त करते हुए तत्काल मरीज का उपचार की व्यवस्था करने के आदेश दिए। इसके बाद कलेक्टर सीधे ट्रामा सेंटर स्थित सीटी स्कैन कार्यालय पहुंचे और वहां पर सिटी स्कैन केंद्र पर मौजूद कर्मचारियों को फटकार लगाते हुए निर्देश दिए कि सबसे पहले यदि किसी के पास डॉक्यूमेंट ना हो, तो उसका सीटी स्कैन करें। डॉक्यूमेंट के चलते सीटी स्कैन ना रोका जाए, कलेक्टर ने ट्रामा सेंटर के पास गंदगी देखकर स्टाफ को फटकार लगाई। उन्होंने शाम 5 बजे फिर दौरा करने तक व्यवस्था सुधारने के निर्देश दिए। वे करीब एक घंटे अस्पताल में रुके।

इनका कहना

सिविल सर्जन डॉक्टर अशोक बारंगा ने बताया कि मरीज का सिटी स्कैन किया जाना था। जिसके लिए राशि की मांग की गई थी। चूंकि स्कैन सेंटर प्राइवेट कंपनी चलाती है वहां शुल्क देना होता है। उसके रूपयो की व्यवस्था कर दी गई। मरीज को गंभीर होने के कारण उसे भोपाल रेफर किया गया है।

संदीप सोलंकी ने 35वीं बार किया रक्तदान

कलम क्रांति के साथ जगा रहे रक्त क्रांति की अलख

बैतूल। जिला रक्तकोष में सिलापटी, शाहपुर के रहने वाले शैलेंद्र चौरे को अति आवश्यकता होने पर जब ओ-पॉजिटिव रक्त के लिए परिजन घबरा गए और नम आंखों से इधर उधर रक्त के लिए परेशान होने लगे तो ऐसे में एक संदेश पर कलम के सिपाही पत्रकार व मां

शारदा साहयता समिति के मीडिया अधिकारी संदीप सोलंकी ने इतनी भीषण गर्मी में 35 वीं बार ओ पॉजिटिव रक्त का दान किया। सोलंकी कई आकस्मिक दुर्घनाओ वाले केस में भी रक्तदान कर चुके है। उनका कहना है कि मेरे रक्त की चंद बूंदो से किसी का जीवन बचता है तो इससे अच्छा और क्या हो सकता है? इस अवसर पर मां शारदा साहयता समिति के संस्थापक शैलेंद्र बिहारिया ने कहा की संदीप जैसे व्यक्तित्व जहां अपनी लेखनी से कलम क्रांति ला रहे है। वही अपने लहू से रक्त क्रांति में भी योगदान दे रहे है। उन्होंने संदीप सोलंकी को बधाई दी और कहा की संदीप निःस्वर्थ सेवा कार्य में अग्रसर रहते है। संदीप ने 14 जून रक्तक्रांति जागरूकता रैली में भी सभी से रेड कपड़ो में शामिल होने की अपील की है।

वन नाका दाबका में कच्ची महुआ शराब को ले जाते हुए वाहन सहित आरोपी को पकड़ा गया

बैतूल। दिनांक 01.06.2024 को सूचना प्राप्त हुई कि दाबका रोहना होते हुये भारी मात्रा में अवैध महुआ शराब वाहन वैन के माध्यम से महाराष्ट्र की ओर जाने वाली है , सूचना पर पांड्राघाटी वन नाका दाबका पर लगे वन विभाग के कर्मचारियों की सहायता से मारूती वैन क्रमांक एमएच 29 एन 9634 को रोककर चैक करने पर मारूती वैन में 10 रबर ट्युब में अवैध महुआ शराब भरी थी, जिसका मौके पर माप किया गया जो 600

लीटर हाथ भट्टी की महुआ शराब होना पायी गयी , आरोपी वाहन चालक दिपक पिता श्यामराव मोरे जाति भोई उम्र 40 साल निवासी वार्ड नंबर 2 बाजार चौक जरूड थाना वरूड जिला अमरावती (महा.) का कृत्य अपराध धारा 34(2) आबकारी अधिनियम का पाया जाने से आरोपी को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया एवं उक्त अपराध में संलिप्त अन्य आरोपीयान की तलाश की जा रही है। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी मुलताई राजेश सातनकर, चौकी प्रभारी मासोद उनि. बसंत अहके ,महेश धाकड, आर. 272 शिवराम, आर.201 गोपाल, वनरक्षक गणेश बारपेटे वन वृत आठनेर, वन सुरक्षा श्रमिक विकास परते ,सीताराम सिरसाम की भूमिका रही ।

ऐसा काम करो कि सब आपको याद करें : जीबी पाटनकर

- **जब तक जिंदा रहूंगा, शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय रहूंगा**
- **एमएलबी प्राचार्य जीबी पाटनकर हुए सेवानिवृत**

बैतूल। ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और निष्कलंक रूप से शिक्षा विभाग में अपनी 38 वर्ष एवं 6 माह की सेवा पूर्ण कर जीबी पाटनकर सर शुक्रवार 31 मई 2024 को सेवानिवृत्त हो गए। जीबी पाटनकर के सेवानिवृत्त होने पर शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या उ.मा. विद्यालय बैतूल में शुक्रवार एक संक्षिप्त विदाई समारोह किया गया। जिसमें एमएलबी स्कूल बैतूल से सेवानिवृत्त हुए जीबी पाटनकर सर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अपनी नौकरी के दौरान ऐसा काम करो कि लोग आपको हमेशा याद करें। उन्होंने कहा कि मैंने अपने स्कूल को हमेशा मंदिर माना है और हर कार्य को पूजा के रूप में किया है। श्री पाटनकर ने अपने सहयोगियों को बताया कि स्कूल में हमेशा मर्यादा बनाकर कार्य रखो, लेकिन काम का माहौल घर जैसा हो। अगर किसी प्रकार की कठिनाई है तो अधिकारियों को ईमानदारी और सच्चाई से हकीकत बयां करो। उन्होंने कहा कि आज मैं शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त जरूर हो रहा है, लेकिन जब तक जिंदा रहूंगा, तब तक एक शिक्षक होने के नाते आपके लिए, समाज के लिए इस क्षैत्र में सक्रिय रहूंगा। बहुमुखी प्रतिभा के धनी जीबी पाटनकर की सेवानिवृत्ति पर स्टाफ , परिजनों द्वारा कालेज रोड बैतूल स्थित केसर बाग में भी विदाई समारोह का आयोजित किया गया। इस अवसर पर सांसद डीडी उईके ने उनके कार्यकाल की सराहना की। बड़ी संख्या में उपस्थित शिक्षकों ने श्री पाटनकर से अपनेपन से मिलते हुए उनके साथ बिताए पलों को याद किया और उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया गया। श्री पाटनकर की विदाई समारोह में शिक्षा विभाग के शिक्षकगण सहित अन्य गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

पर्यावरण

श्रीराम माहेश्वरी

लेखक पर्यावरण और जैव विविधता पुस्तक के लेखक हैं।

प्रकृति मित्र जीवनशैली से घटेगा धरती का ताप

धरती पर बढ़ते तापमान से आज समूचा विश्व चिंतित है। तापमान के उतार चढ़ाव, बेमौसम बारिश और बाढ़ से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। अचानक आने वाले तूफान, सुनामी और चक्रवात की घटनाएं भी भयावह हैं। बीते वर्षों की तुलना में इस वर्ष तापमान अधिक बढ़ा है। इससे कई स्थानों पर गर्मी के कारण लोगों की मौतें हो गई।

जलवायु परिवर्तन से पारिस्थिति तंत्र में आ रहा यह बदलाव वाकई गंभीर और चिंताजनक है। बंगाल और उड़ीसा के तटीय इलाकों में तूफान आने की घटनाएं हुई हैं। इससे हजारों लोग बेघर हुए। सुनामी जैसी आपदा जल क्षेत्र से आती है। समुद्र में तीव्र तरंगे तेज वायु के साथ आती हैं। समुद्री तटीय क्षेत्रों में इस तरह की आपदा से भयावह तबाही होती है। समुद्र की गहराई में कभी-कभी भूकंप आता है। इस कारण सुनामी आती है। सुनामी और तूफान से बचाव के लिए प्रणाली विकसित करना होगी । विभिन्न क्षेत्रों के सूचना केंद्रों के बीच समय पर संवाद और सूचनाओं के आदान-प्रदान से बचाव के उपाय किए जा सकते हैं।

हम अच्छी तरह से जानते हैं कि पृथ्वी ऐसा ग्रह है जहां जीवन है और यह भी सत्य है कि हमारे पास पृथ्वी एक ही है। इसके बावजूद हमने विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया और अब भी कर रहे हैं। लाखों उद्योग लगाकर जंगल और पेड़ काटकर हम लाखों किलोमीटर सड़कों का जाल बना रहे हैं। नए नगरों का निर्माण पेड़ों की बलि देकर किया जा रहा है। शहरों की कोई सीमा निर्धारित नहीं है । बड़े नगर आसपास के गांव को निगलते जा रहे हैं। पहाड़ों को खोदा जा रहा है। रेत माफिया हर क्षेत्र में नदी तंत्र का आधार खत्म करने पर आमादा है । जंगल में वन्य प्राणियों के जीवन पर संकट है। नगरों में अंधाधुंध ट्यूबवेल खोदे जाने से भूमि का जलस्तर हर साल नीचे जा रहा है। भूमि, वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण की हालात बदतर है। इन सब कारणों से तापमान बढ़ रहा है।

वैज्ञानिकों ने समय-समय पर सरकारों और लोगों को आगाह किया है किंतु चिंता की बात यह है कि पर्यावरण संबंधी चेतावनी को गंभीरता से नहीं लिया गया। वायुमंडल और जलवायु परिवर्तन से भविष्य में जीवन पर पडने वाले दुष्प्रभावों पर गहन चिंतन की आवश्यकता है। हालांकि जनसंख्या वृद्धि को देखते हुए पिछले दशकों में लोगों की आवश्यकताये बढ़ी हैं। मांग की पूर्ति के लिए औद्योगिक विस्तार किया जाने लगा। नवाचार को बढ़ावा दिया गया। बिजली आपूर्ति के लिए थर्मल पावर स्टेशन स्थापित किए जाने लगे। तेल, गैस और कोयले की खपत बढ़ी। जीवाश्म ईंधन उपयोग बढा। इस बीच उपभोक्तावादी संस्कृति पनपी। वाहनों की संख्या बढ़ने और उद्योगों से होने वाले प्रदूषण ने गर्मी को बढ़ाया है। इसके अलावा गर्मी के दिनों में अनेक राज्यों में जंगल में आग लगने की घटनाएं होती हैं। उत्तराखंड का ताज़ा उदाहरण हमारे सामने है। हर साल इससे सैकड़ो पेड़ नष्ट हो जाते हैं। खेतों में नरवाई जलाने की घटनाएं हर साल होती है। इससे मिट्टी के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। उद्योगों से निकलने वाला अपशिष्ट और तरल रसायन जलाशयों, नदियों और आसपास की भूमि को प्रदूषित कर रहे हैं।

यह सत्य है की धरती सबका पेट पाल सकती है, लेकिन एक लालची का नहीं। मनुष्य की लालची प्रवृत्ति और दूषित मानसिकता ने समस्या को और गहरा कर दिया है। प्राकृतिक संसाधनों का हमने बेतहाशा दोहन किया। इसे विकास का मॉडल बताया, जबकि इससे प्रदूषण अधिक हुआ। हमें पर्या मित्र समावेशी विकास का रास्ता चुनना था, जबकि ऐसा नहीं हुआ। पर्यावरण को नुकसान पहुंचाये बिना उत्पादन के मॉडल को अपनाने के स्थान पर हमने असंतुलित उत्पादन को अपनाया। इसके दुष्प्रभाव हम सबके सामने हैं। नगरीय विकास के साथ-साथ दूरसंचार क्रांति आई है। हर जगह ऊष्मा उपयोग हो रहा है।

दूरसंचार के टावर लगने से कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल सभी में ऊष्मा का संचार हो रहा है। ऊष्मा का संचार करने वाली हर छोटी बड़ी इकाई वायुमंडल में ताप बढाती है। साथ ही एसी और रूम हीटर का उपयोग भी बढ़ रहा है। इसके साथ ही शहरों और ग्रामीण अंचलों में हरियाली लगातार काम हो रही है। इन सब कारणों से वायुमंडल में कार्बन डाई ऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ोतरी हो रही है।

विश्व में शांति होगी तो पर्यावरण शुद्ध होगा। युद्ध की स्थिति में हथियारों के असीमित निर्माण की होड़ बनी रहेगी। विश्व में जहां भी युद्ध हुए हैं, हो रहे हैं या भविष्य में होंगे, हथियारों, मिसाइलों और विस्फोटकों का प्रयोग होगा। इससे वायुमंडल प्रदूषित होगा। इस तरह देखा जाए तो वायु प्रदूषण बढ़ने की एक वजह है युद्ध भी है ।

विश्व के कई देशों के अनेक भागों में ग्लेशियर हैं। जब गर्मी बढ़ती है तो यह ग्लेशियर पिघलाकर जल बनाते हैं। यह जल नदियों के माध्यम से समुद्र में जाता है। ग्लोबल वार्मिंग की वजह से इन ग्लेशियर के पिघलने में तेजी देखी जा रही है। यह छोटे द्वीपों और समुद्र किनारे पर बसे देशो के लिए खतरे की घंटी है। समुद्र का जलस्तर बढ़ता है तो सुंदरबन जैसे क्षेत्र और उड़ीसा के तटीय समुद्री क्षेत्र की बसाहट पर भी खतरा आ सकता है। मुंबई महानगर के बारे में तो वैज्ञानिकों ने पूर्व में कई बार चेताया है। ध्यान देने वाली बात यह है कि हिमालय से जुड़ी कई नदियों के जलस्त्रोत यह ग्लेशियर ही हैं। यदि ग्लेशियर कम हुये या खत्म हुए तो इन सदानीरा नदियों के प्रवाह पर भी असर पड़ेगा। नदियां सूखीं तो मनुष्य सहित अनेक जीव जंतुओं का जीवन खतरे में होगा।

यह सत्य है कि पृथ्वी के ताप को कम किए बिना समाधान संभव नहीं है। समाधान की दिशा में आगे बढ़ने के लिए हमें कार्बन उत्सर्जन में कटौती करना ही होगी। हमें अपनी जीवनशैली प्रकृति मित्र बनाना होगी। ग्रीन टेक्नोलॉजी को अपनाना होगा। हालांकि कई सर्वेक्षण में सामने आया है कि लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। यह अच्छी बात है कि व्यापक स्तर पर कदम उठाए जा रहे हैं। इसके बावजूद हमें बड़े स्तर पर काम करने की आवश्यकता है। इस विषय में केवल सरकारों पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। पर्यावरण संरक्षण के लिए जनभागीदारी और मीडिया की जिम्मेदारी भी बनती है। यह समझने की आवश्यकता है कि धरती मात्र एक भूभाग नहीं, अपितु हमारी मातृभूमि है। इसकी रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

आम आदमी पार्टी आरटीआई विंग जिलाध्यक्ष सीताशरण पाण्डेय पालकों के साथ सीईओ से आज मुलाकात करेंगे

नर्मदापुरम। शिक्षा को व्यापार बनाकर चांदी काटने वाले शैक्षणिक संस्थाओं पर जबलपुर कलेक्टर द्वारा की गई कार्रवाई का परिणामस्वरूप मध्यप्रदेश शासन द्वारा जारी गाईड लाईन प्रभाव में आते ही मुख्यालय स्थित प्रायः शैक्षणिक संस्थाओं में भगदड़ मच चुकी है। मुख्यालय पर पदस्थ कलेक्टर सोनिया मीना ने शासन द्वारा जारी गाइड लाइन के परिपालन हेतु जिला पंचायत सीईओ को अधिकृत कर दिया है, उसका असर नगर की शैक्षणिक संस्थाओं पर दिखाई देने लगा। फीस सहित कापी किताबों को लेकर वैसे तो नगर में शांतिनिकेतन मांटेसरी स्कूल की शिकायत यहां आम आदमी आरटीआई विंग जिलाध्यक्ष सीताशरण पाण्डेय के नेतृत्व में कई पालकों ने काफी पहले शिक्षा विभाग और कलेक्टर से शिकायतें कर रखी है। उसी परिप्रेक्ष्य में सुना जा रहा है कि सीताशरण पाण्डेय को मय सबूत के सोमवार को जिला पंचायत सीईओ के समक्ष प्रस्तुत होना है। उसकी तैयारी में पालकों सहित श्री पाण्डेय जुटे हुए हैं। इधर सुना ही नहीं देखा जा रहा है विद्या ददाति विनिमय का पाठ पढ़ाने वाली शैक्षणिक संस्थाएं स्वयं को बचाने के लिए भागम भाग कर रही कुछ संस्थानों के कर्ता-धर्ता अंडर ग्राउंड हो गये उसका कारण यहां पदस्थ कलेक्टर को जाता है जिनकी छवि तेज तर्रार वाली होने के कारण शिक्षा को माफिया की छवि में परिवर्तित कर चुकी शैक्षणिक संस्थाएं ज्यादा भयभीत हैं जिन्होंने अख़बारी विज्ञापनों के जरिए पालकों को भ्रमित किया, अखबार और अखबार वालों को उपकृत किया और आम नागरिकों तक शिक्षा माफियाओं की खबरें बाहर आने नहीं दी.. ताज्जुब तो इस बात को लेकर किया जाना चाहिए सीबीएसई पाठ्यक्रम संचालित कर रहे इन शैक्षणिक संस्थाओं में ली जा रही फीस के अनुसार पढ़ने वाले छात्र छात्राओं को क्या वास्तव में ली जा रही फीस के अनुसार शैक्षणिक संस्थाएं सुविधाएं उपलब्ध करा रही है या खानापूर्ति की जाती है। शिक्षक शिक्षिकाएं नार्मस के अनुसार डिग्री होल्डर वाले हैं या नहीं कौन देखता है। क्योंकि सीबीएसई पाठ्यक्रम संचालित करने वाली शांतिनिकेतन मांटेसरी स्कूल में एक दर्जन से उपर नियमित शिक्षक शिक्षिकाओं ने बीते सत्र में ही सामूहिक स्तीफा दिये थे।

स्वाहाकार से गूंजा शनि मंदिर परिसर

देवास। मीरा बावड़ी स्थित शनिदेवसत्यनारायण मंदिर में आयोजित शनैश्चर जयंती के प्रथम दिवस पर सैकड़ों भक्तों ने श्री शनिदेव को आहूति समर्पित की, स्वाहाकार से श्री शनि मंदिर परिसर गुंजायमान हुआ। रात्रि में देवास के स्थानीय कलाकारों द्वारा शनिदेव के समक्ष समक्ष सुमधुर भजनों से समा बांधा। सर्वप्रथम राजेश बैरागी ने गणेश वंदिना म्हारा कीर्तन में रस बरसाओ, राम आयेंगे राम आयेंगे, सावरे से मिलनक का सतसंग ही बहाना है। अभिषेक व्यास ने अपनी सुमधुर वाणी में राधा रानी के भजनों से भक्ति को सराबोर किया। अभिषेक नागर द्वारा माता की स्तुति पर उपस्थित बहनों ने जमकर नृत्य किया। अशोक शर्मा ने नरेन्द्र चंचल की तर्ज पर शानदार प्रस्तुति दी। अनूप जैन द्वारा राज तिल्लंग पर आधारित अरदास हमारी हे से कार्यक्रम का समापन किया। आक्टोपेड पर प्रवीण बैरागी, की बोर्ड पर अरविंद बैरागी एवं ढोलक पर तन्मय ढोंगे ने संगत की। मंदिर पुजारी ने सभी कलाकारों का स्वागत किया एवं आभार व्यक्त किया। तृतीय दिवस रात्रि 8 बजे से मंदिर में कवि सम्मेलन का आयोजन रखा गया है। जिसके सूत्रधार वीर रस के कवि शशिकांत यादव शशि होंगे।

मतगणना स्थल पर सुरक्षा के माकूल इंतजाम

नरसिंहपुर। लोकसभा निर्वाचन-2024 के संदर्भ में 04 जून 2024 को कृषि उपज मण्डी नरसिंहपुर में होने वाली मतगणना में किसी भी प्रकार का व्यवधान न हो इसके लिए जिला प्रशासन द्वारा सभी माकूल इंतजाम किये जा रहे है। मतगणना स्थल में सुरक्षा के दृष्टिकोण से त्रिचक्रीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है। प्रथम सुरक्षा चक्र के अंतर्गत गणना परिसर/ अहाते से 100 मीटर दूरी की पेरीफेरी से प्रारंभ होगा, जिसे पैदल क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया जायेगा। इस पेरीफेरी में वाहनों के प्रवेश की अनुमति नहीं होगी। यहाँ पर बेरीकेडींग व परिसर में प्रवेश द्वार की व्यवस्था होगी। यहाँ पर प्रवेश पाने के इच्छुक व्यक्ति के पहचान की जाँच होगी। अभ्यर्थी, उनके अभिकर्ता, गणना स्टॉफ तथा मीडिया पर्सन के एण्ट्रीपास/आई-कार्ड की जाँच कर प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेश द्वार पर भीड़ को नियंत्रित एवं विनियमित करने के लिए कार्यपालिक मजिस्ट्रेट की नियुक्ति की गई है। डिप्टी कलेक्टर श्री मनोज कुमार चौरसिया की ड्यूटी कृषि उपज मंडी नरसिंहपुर के मेन गेट क्रमांक एक पर लगाई गई है। डिप्टी कलेक्टर श्री महेन्द्र कुमार पटेल की ड्यूटी कृषि उपज मंडी जाने वाले रास्ते मंडी तिराहे पर लगाई गई है। द्वितीय सुरक्षा चक्र परिसर के प्रवेश द्वार पर होगा। यहाँ पर एण्ट्री पूर्व फ्रिस्किंग की जायेगी। माचिस, शस्त्र, अन्य ज्वलनशील पदार्थ ले जाने की अनुमति नहीं होगी।

शिशुगृह संस्था सूर्यासखी सामाजिक विकास समिति की सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया

देवास। महिला बाल विकास अधिकारी श्रीमती रेलम बघेल ने बताया कि किशोर न्याय (बालकों की देखरेख एवं संरक्षण) अधिनियम 2015 (संशोधन 2021) के प्रावधानों के तहत देवास जिले में संचालित शिशुगृह संस्था सूर्या सखी सामाजिक विकास समिति देवास की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किये जाने के लिए सुरक्षा अंकेक्षण करने समिति गठित की गयी है। समिति द्वारा शनिवार को शिशु गृह की जांच की गयी एवं बच्चों के संरक्षण हेतु समस्त सुरक्षा व्यवस्था का निरिक्षण कर सुरक्षा अंकेषण की रिपोर्ट तैयार की गई।

महिला बाल विकास अधिकारी श्रीमती रेलम बघेल ने बताया की समिति में अनुविभागीय अधिकारी देवास श्री बिहारी सिंह, पी.डब्लू.डी. अधकारी श्री मनीष मरकाम, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्रीमती रेलम बघेल, एसडीओपी सोनकच्छ सुश्री दीपा मांडवे, शिशु गृह संस्था अधीक्षक श्रीमती जैमिनी वर्मा एवं बाल संरक्षण विशेषज्ञ श्री महिपत सिंह भदौरिया शामिल है।

महिला बाल विकास अधिकारी श्रीमती रेलम बघेल ने बताया कि गृह पिछले 6 माह से संचालित हो रहा है एवं भविष्य में जो भी दंपत्ति किसी बच्चे को गोद लेना चाहता हो या फिर अपने बच्चे का पालन पोषण करने में समर्थ नही होने से बच्चो को समर्पण करना चाहता हो वे यहाँ आकर संपर्क कर सकते है। बच्चे एवं माता-पिता की सम्पूर्ण जानकारी गोपनीय रखी जायेंगी। देवास जिले में संस्था के संचालित होने से एडॉप्शन की संपूर्ण प्रक्रिया अब इसी संस्था द्वारा महिला बाल विकास के सहयोग से की जायेंगी।

विधानसभावार मतगणना टेबल एवं राउंडों की जानकारी

नरसिंहपुर। लोकसभा निर्वाचन-2024 के अंतर्गत 4 जून 2024 को मतगणना कृषि उपज मंडी नरसिंहपुर में सम्पन्न होगी। मतगणना का कार्य प्रातः 8.00 बजे से प्रारंभ होगा। जिला निर्वाचन कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार संसदीय क्षेत्र 14- मंडला के अंतर्गत आने वाली जिले की एक विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 118- गोटेगांव की मतगणना के कुल 17 टेबलें लगाई जायेगी। गोटेगांव विधानसभा के अंतर्गत कुल 254 मतदान केन्द्रों के मतों की गणना की जायेगी। इसी तरह संसदीय क्षेत्र 17- होशंगाबाद के अंतर्गत आने वाली जिले की तीन विधानसभा क्षेत्र 119- नरसिंहपुर, 120- तेंदूखेड़ा व 121- गाडरवारा की मतगणना के लिए मतगणना स्थलों पर कुल 66 टेबलें लगाई जायेंगी। इन तीनों विधानसभा क्षेत्रों के अंतर्गत कुल 708 व 2 अतिरिक्त मतदान केन्द्रों के मतों की गणना की जायेगी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार नरसिंहपुर के कृषि उपज मंडी में होने वाली मतगणना के लिए संसदीय क्षेत्र 17 होशंगाबाद की विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 119- नरसिंहपुर के लिए 18, विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 120- तेंदूखेड़ा के लिए 15, तथा विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 121- गाडरवारा के लिए 16 टेबल लगाई जायेगी। इसी तरह संसदीय क्षेत्र 14 मण्डला की विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 118- गोटेगांव के लिए 17 टेबल लगाई जायेगी।

14 राउंड में होगी मतों की गणना– संसदीय क्षेत्र 17 होशंगाबाद एवं संसदीय क्षेत्र 14 मण्डला के लिए 04 जून 2024 को होने वाली मतगणना कुल 14- 14 राउंड में संपन्न होगी। मतगणना स्थल कृषि उपज मंडी नरसिंहपुर में संसदीय निर्वाचन क्षेत्र मण्डला की विधानसभा गोटेगांव क्षेत्र-118 शेड क्रमांक एक बाया भाग, संसदीय निर्वाचन क्षेत्र होशंगाबाद की विधानसभा क्षेत्र-119 नरसिंहपुर शेड क्रमांक 2 दाया भाग, विधानसभा क्षेत्र 120- तेंदूखेड़ा शेड क्रमांक 2 बाया भाग, विधानसभा क्षेत्र 121- गाडरवारा शेड क्रमांक 1 दाया भाग पर मतगणना स्थल बनाये गये है।

मतगणना पर्यवक्षेक, मतगणना सहायक व माईक्रो आब्जर्वर– जिले की गोटेगांव, नरसिंहपुर, तेंदूखेड़ा व गाडरवारा विधानसभा क्षेत्र के लिए कुल 66 मतगणना पर्यवेक्षक, 66 मतगणना सहायक व 66 माईक्रो आब्जर्वर नियुक्त किये गये हैं। गोटेगांव विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत 17 मतगणना पर्यवेक्षक, 17 मतगणना सहायक व 17 माईक्रो आब्जर्वर नियुक्ति किये गये हैं। इसी तरह विधानसभा क्षेत्र 119- नरसिंहपुर के अंतर्गत 18 मतगणना पर्यवेक्षक, 18 मतगणना सहायक व 18 माइक्रो आब्जर्वर, विधानसभा क्षेत्र 120- तेंदूखेड़ा के अंतर्गत कुल 15 मतगणना पर्यवेक्षक, 15 मतगणना सहायक व 15 माईक्रो आब्जर्वर, विधानसभा क्षेत्र 121- गाडरवारा के अंतर्गत 16 मतगणना पर्यवेक्षक, 16 मतगणना सहायक व 16 माईक्रो आब्जर्वर नियुक्त किये गये हैं।

गणना अभिकर्ता– जिले की विधानसभा क्षेत्र 118- गोटेगांव, 119- नरसिंहपुर, 120- तेंदूखेड़ा व 121- गाडरवारा के लिए 70 गणना अभिकर्ता नियुक्त किये गये हैं। विधानसभा क्षेत्र 118- गोटेगांव हेतु प्रत्येक टेबिल के लिए 18 गणना अभिकर्ता, 119- नरसिंहपुर हेतु प्रत्येक टेबिल के लिए 19 गणना अभिकर्ता, 120- तेंदूखेड़ा हेतु प्रत्येक टेबिल के लिए 16 गणना अभिकर्ता और 121- गाडरवारा हेतु प्रत्येक टेबिल के लिए 17 गणना अभिकर्ता नियुक्त हैं।

शासन आदेशों की अवमानना कर स्थापना शाखा और लेखा शाखा द्वारा कर्मचारियों का किया जा रहा है आर्थिक शोषण : कार्यकारी अध्यक्ष

नर्मदापुरम। भारतीय मजदूर संघ से संबंधित नगरपालिका कर्मचारी मजदूर संघ के कार्यकारी अध्यक्ष महेश वर्मा ने बताया है कि संचनालय नगरीय प्रशासन आदेश दिनांक - 18/01/2021 में स्पष्ट लिखा गया कि कर्मचारियों कि आर्थिक कठिनाइयां देखते हुए माह के प्रथम दिन यानि एक तारीख में मासिक वेतनों का भुगतान किया जावे जिसका पालन नगरपालिका में आज तक देखने को नहीं आया है जिससे नपा कर्मचारियों की दूध वाला, किराना दुकान, स्कूल फीस, दवाई दुकानों पर अलग-अलग डेढ़ माह कि उधारी चढ़ जाती हैं । फिर जिन कर्मचारियों ने बैंक से लोन लिये है उनकी डबल किश्त बैंक में कट जाने से उनके सामने हमेशा ही आर्थिक संकट बना रहता है। श्री वर्मा बताते हैं कि सूत्रों से जानकारी मिली है कि ग्रुप व श्रेणी के अनुसार सातवें वेतनमान कि अंतिम किश्त राशि का भुगतान करने का मन नगरपालिका सीएमओ ने बना लिया था किन्तु चपरासी से बाबू बने प्रभारी लेखापाल के बहकावे आकर सातवें वेतनमान कि अंतिम किश्त राशि के भुगतान का मामला अधर में लटक गया है। श्री वर्मा ने बताया कि मंत्रालय आदेश दिनांक - 27/08/2018 में कार्यभारित, आकस्मिक सेवा, दैनिक वेतनभोगी, विनियमित कर्मचारियों के आर्थिक हित संरक्षण में सेवानिवृत्त अथवा सेवाकाल में मृत्यु होने पर उपादान भुगतान अधिनियम 1972 के प्रावधान के अनुसार (ग्रेच्युटी) के उपादान राशि का भुगतान किया जाने को लेकर नगरपालिका आवक-जावक शाखा में मजदूर संघ द्वारा पत्र दिये गये है जिसमें नगरपालिका कि पीआईसी बैठक दिनांक - 12/08/2005 के अनुसार दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों कि सेवाकाल में मृत्यु होने पर उनके आश्रितों को दाह-संस्कार अनुग्रह राशि का भुगतान किसी भी कर्मचारी को आज तक नहीं किया गया है, लेकिन मंत्रालय आदेश दिनांक - 30/05/2013 कि कंडिका क्रमांक - 6 (1) के पालन में सेवानिवृत्त के पश्चात सरकार अंशदान राशि का भुगतान भी किसी भी दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी को नहीं किया गया। इस संबंध में व मासिक वेतन भुगतान के संबंध में बारंबार ज्ञापन देने के बाद भी मासिक वेतन सही समय पर भुगतान नहीं किया जा रहा है उपादान राशि, दाह-संस्कार अनुग्रह राशि, सरकार अंशदान राशि का भुगतान न करके शासन के आदेशों की अवमानना तो स्थापना शाखा, लेखा शाखा के द्वारा कि जा रही हैं साथ कर्मचारी/ श्रमिकों को आर्थिक क्षति पहुंचाकर उनका शोषण भी किया जा रहा है। इसे लेकर कर्मचारियों में नाराजगी बनीं हुई है।

देवास पुलिस की प्रभावी नाईट कॉम्बिंग गश्त में सख्त कार्यवाही

देवास/मोहन वर्मा। पुलिस अधीक्षक श्री सम्पत उपाध्याय, के मार्गदर्शन में गुण्डा बदमाशों की आकस्मिक रात्रि चैकिंग,फरार आरोपियों स्थाई वारंटियों की धरपकड हेतु प्रत्येक माह में विशेष कार्यवाही के अंतर्गत थानों के लिए नाईट कॉम्बिंग गश्त किये जाने हेतु निर्देशित किया गया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (शहर) श्री जयवीर सिंह भदौरिया,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) श्री आकाश भूरिया एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यातायात श्री हरनारायण बाथम के निर्देशन में 8 छ्रस्क्र रक्षित निरीक्षक, 23 थाना प्रभारियों लगभग 800 अधिकारी/ कर्मचारियो के बल के साथ रहे मौजूद ।

जिले के थानावार टीमो का गठन कर दिनांक 01/02.06.2024 की रात्रि में जिले के थाना क्षेत्रों में नाईट कॉम्बिंग गश्त के दौरान समस्त थानों के द्वारा स्थाई वारंटी विवेचना में फरार आरोपियों की गिरफ्तारी,वारंटों की तामीली,गुण्डा, हिस्ट्रीशीटर एवं जेल रिहाई की चेकिंग कर निम्नलिखित शीर्षों पर विशेष कार्यवाही की जाकर कुल 26 स्थाई वांरटी,61 गिरफ्तार वांरटी,122 हिस्ट्रीशीटर बदमाशों,84 गुण्डों,14 जिलाबदर को काम्बिग गश्त के दौरान चैक किये गये । इसी क्रम 34(2) आबकारी एक्ट के कुल 08 प्रकरण बनाये गये जिसमे कुल अवैध शराब लीटर 827.5,कुल कीमत 2,51,760 एवं 02 चार पाहिया वाहन कीमत रू. 3,25,000 कुल मश्रुका रू. 5,76,760 जप्त किया गया एवं वाहन चैकिंग के दौरान लगभग 300 से अधिक छोटे बडे वाहनों को चैक किया गया । कुल 36 वाहन चालकों के विरूद्ध मोटर व्हीकल एक्ट एवं शराब पीकर वाहन चलाने के विरूद्ध चालानी कार्यवाही कर कुल रू. 13,200 समन शुल्क वसूल कर शासकीय कोष में जमा किया गया।

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

कांग्रेस के बेहतर प्रदर्शन पर विश्वास कम संदेह ज्यादा है

शनिवार को ही विभिन्न एजेंसी और निजी न्यूज चैनलों के एग्जिट पोल में मोदी 3.0 की प्रबल संभावना जताई जा रही है। भारतीय जनता पार्टी ने इस चुनाव में 370 सीट जीतने का लक्ष्य रखा है। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा को 303 सीटों के साथ स्पष्ट बहुमत मिला था। देश में लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार उसी स्थिति में स्पष्ट बहुमत के साथ बन सकती है, जब कांग्रेस का प्रदर्शन पहले से बेहतर रहता है। लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार उसी स्थिति में रुक सकती है जब कांग्रेस सौ सीटों का आंकड़ा पार कर जाए। अन्यथा, भाजपा आएगा तो मोदी की जन धारणा का लाभ उठाकर अपनी सरकार बना सकती है। भाजपा ने इस चुनाव में कुल 440 उम्मीदवार मैदान में उतारे हैं। कांग्रेस इस लोकसभा चुनाव में 327 सीटों पर चुनाव लड़ रही है।

सरकार बनाने 2009 को दोहराना होगा

2009 के लोकसभा चुनाव में अपने बेहतर प्रदर्शन के कारण ही कांग्रेस यूपीए -दो की सरकार बनाने में सफल रही थी। 2009 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने कुल 440 उम्मीदवार मैदान में उतारे थे। इस चुनाव में इतनी संख्या में सिर्फ भाजपा के ही उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं। 2009 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस 209 सीटें जीती थी। उसका यह प्रदर्शन लोकसभा में बहुमत के लिए ज़रूरी आंकड़े से काफी कम था। अन्य दलों का समर्थन मिला इसलिए संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) की सरकार दोबारा बनी। इससे पहले 2004 के लोकसभा के चुनाव में कांग्रेस को सिर्फ 145 सीटें ही मिलीं थीं,जबकि उसने 417 सीटों पर चुनाव लड़ा था। कांग्रेस ने सबसे ज्यादा 529 सीटों पर चुनाव 1996 में लड़ा था। दूसरी और 1984 से 2024 तक के चार दशक में भाजपा की सीटों में लगातार वृद्धि हुई। उसकी सीटों की संख्या 2 से बढ़कर 303 तक पहुँच गयी. लेकिन इसी अवधि में कांग्रेस की सीटों की संख्या 415 से घटकर पिछले लोकसभा चुनाव में 52 पर आ गई थी। कांग्रेस ने 2014 के चुनाव में 464 उम्मीदवार उतारे थे, वहीं 2019 के चुनाव में उसने 421 सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए थे। वर्ष 2019 में उसे 421 सीटों में से केवल 52 पर ही जीत मिली थी। 1951 से लेकर अब तक के चुनावी इतिहास में ऐसा पहली बार है कि कांग्रेस इतनी कम सीटों पर चुनाव लड़ी है। केरल, तेलंगाना, कर्नाटक तथा तमिलनाडु को मिलाकर 2019 के चुनाव में कांग्रेस ने दक्षिण भारत की लोकसभा की कुल 130 सीटों में 30 सीटें जीती थीं। पार्टी का मानना है कि केरल की 20 सीटों में से कम से कम 17 सीटें इस बार भी मिलनी तय हैं। तो तमिलनाडु की 39 में आठ से नौ सीटों और पुंडुचेरी की एक सीट के लक्ष्य को हासिल करना मुश्किल नहीं लगता है। दक्षिण के मिशन 50 में कर्नाटक में चुनौती कहीं ज्यादा बड़ी है। एक साल पहले विधानसभा चुनाव में बड़ी जीत हासिल करने के बाद लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के लिए इस प्रदर्शन के आस-पास टिके रहना कठिन बताया जा रहा है। इसका अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि राज्य की 28 लोकसभा सीटों में पार्टी अंदरूनी तौर पर 12-13 सीटों के अलावा ज्यादा संभावनाएं नहीं देख रही ।

तमिलनाडु में द्रमुक के साथ मजबूत गठबंधन का कांग्रेस को पिछले चुनाव में भी फायदा मिला था और इस चुनाव में भी अन्नाद्रमुक के बिखराव का इस गठबंधन को फायदा मिल सकता है। कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, बिहार और तमिलनाडु में ज्यादा से ज्यादा सीटें गठबंधन में शामिल क्षेत्रीय दलों को दी हैं। इसमें अकेले उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार और तमिलनाडु में कुल 201 सीटें हैं। महाराष्ट्र में लोकसभा की कुल 48 सीटें

हैं। इनमें सबसे ज्यादा 21 सीटें शिवसेना के उद्धव ठाकरे गुट को मिली हैं। इसके अलावा कांग्रेस 17 और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार) 10 सीटों पर लोकसभा चुनाव लड़ रही है। उत्तर प्रदेश में भी कांग्रेस 17 सीटों पर ही चुनाव लड़ रही है। 63 सीटों पर समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र में शिवसेना और भाजपा ने मिलकर चुनाव लड़ा था। इस गठबंधन में भाजपा ने 23 और शिवसेना 18 सीटें जीती थीं। महाराष्ट्र में शिवसेना और एनसीपी में हुए विभाजन के बाद सीटों की हिस्सेदारी भी बढ़ गई है। भाजपा को एनसीपी अजित पवार गुट को भी चार सीटें देना पड़ी हैं। जबकि शरद पवार अभी भी लाभ में हैं। उन्हें दस सीट गठबंधन में मिली हैं।

अखिलेश और तेजस्वी पर निर्भर है अगली सरकार

यूपी में भारतीय जनता पार्टी ने कुल 75 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे है। पांच सीटों पर एनडीए के सहयोगी दल चुनाव लड़ रहे हैं। जहां बागपत और बिजनौर सीट से आरएलडी के उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। मिर्जापुर और राबर्ट्सगंज सीट अपना दल के खाते में है। घोसी सीट सुभासपा के खाते में गई है। इसके अलावा निषाद पार्टी के दो नेता बीजेपी के सिंबल पर चुनाव लड़ रहे हैं। भाजपा घोसी सीट पर अपने सहयोगी सुभासपा अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर के पुत्र अरविंद राजभर को चुनाव लड़ा रही है। वहीं, सपा ने राजीव राय को उम्मीदवार बनाया है। 2014 में उन्हें यहां 15.96 फीसदी वोट मिले थे। बसपा ने यहां से दो बार सांसद रह चुके बालकृष्ण चौहान पर दांव लगाया है। हालांकि बदले समीकरणों में राय और राजभर के बीच सिमटी इस जंग में ओम प्रकाश राजभर की साख दांव पर है।

2017 के विधानसभा चुनाव में मऊ सदर से 88 हजार से अधिक वोट पाने वाले महेंद्र ओपी राजभर से मनमुटाव के चलते सुभासपा का दामन छोड़ सपा के साथ खड़े हो गए हैं। इस क्षेत्र में महेंद्र का अपनी बिरादरी पर बड़ा प्रभाव माना जाता है। इससे भी सुभासपा की चुनौती बढ़ गई है। मुख्तार अंसारी की मौत में आरोपों के एंगल ने भी यहां की राजनीति गरमा दी है। मऊ और घोसी विधानसभा क्षेत्र में मुख्तार अंसारी के परिवार का असर है। मऊ से बेटा अब्बास अंसारी सुभासपा के सिंबल पर विधायक है। वहीं 2017 में अब्बास ने घोसी से चुनाव लड़ा था और 81 हजार से अधिक वोट हासिल किए थे।

बिहार में भारतीय जनता पार्टी सत्रह सीटों पर चुनाव लड़ रही है। जेडीयू 16 और लोजपा पांच सीटों पर चुनाव लड़ रही है। बिहार में कांग्रेस सिर्फ नौ सीटों पर चुनाव लड़ रही है। आरजेडी सबसे ज्यादा 26 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। लेफ्ट को पांच सीटें दी गई हैं। बहार की राजनीति में इस वक्त आरजेडी एकमात्र दल है जो सबसे ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ रही है। बिहार में पिछले दो लोकसभा चुनाव में तो कांग्रेस को 40 में से 10 से नीचे ही सीटें मिल रही हैं। कहा जा रहा है कि कांग्रेस ने जब से गठबंधन की राजनीति शुरू की तब से ग्राफ गिरा है। वर्ष 1998 में संयुक्त बिहार (झारखंड के साथ) में 54 सीटों में से 21 सीटें कांग्रेस के खाते में आई थी, लेकिन कांग्रेस 5 सीट ही जीत सकी थी। 1999 में कांग्रेस के खाते में सीटों की संख्या घटकर 16 हो गई और कांग्रेस के चार उम्मीदवार ही जीत सके।

2004 में 40 में से कांग्रेस ने 3 सीटों पर जीत दर्ज की थी। 2009 में कांग्रेस ने गठबंधन से अलग होकर सभी 40 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे और दो सीटों पर जीत दर्ज की। कांग्रेस 2014 में एक बार फिर गठबंधन के तहत चुनाव मैदान में उतरी और 11 सीटों पर चुनाव लड़ी, जिसमें दो सीट पर जीत दर्ज की। 2019 में 9 सीटों पर कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार उतारे और सिर्फ एक सीट पर जीत दर्ज कर सकी। यहां भाजपा और जेडीयू को घेरने की जिम्मेदारी लालू यादव और उनके पुत्र तेजस्वी यादव पर ही है।

तीसरे चरण की सीटों का रुझान

मध्य प्रदेश में तीसरे चरण में कुल नौ सीटों पर वोट डाले गए थे। इनमें चार सीट ग्वालियर एवं चंबल संभाग की थीं। मुरैना,भिंड, ग्वालियर और गुना। इस अंचल की दो सीट मुरैना और ग्वालियर में बड़े उलटफेर की संभावना प्रकट की जा रही है। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि यदि वोटर ने कैंडिडेट को देखकर वोट किया होगा तो जीत कांग्रेस की होगी। यदि वोटर नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने निकला होगा तो जीत भाजपा की होगी। मुरैना में इस बार कुल 58.97 प्रतिशत मतदान हुआ है। कुल वोट 11 लाख 82 हजार 282 डाले गए हैं। यहां त्रिकोणी मुकाबला होने से भाजपा मुश्किल में दिख रही है। बहुजन समाज पार्टी ने इस सीट पर पहली बार वैश्य वर्ग को मौका दिया है। रमेश गर्ग उम्मीदवार हैं। इस कारण यह माना जा रहा है कि भाजपा का परंपरागत वोट इस बार बसपा के खाते में चला जाएगा। इसका लाभ कांग्रेस को मिल सकता है। कांग्रेस से सतपाल सिकरवार उम्मीदवार हैं। भाजपा ने शिवमंगल सिंह तोमर को उम्मीदवार बनाया है। कांग्रेस और भाजपा दोनों के ही उम्मीदवार ठाकुर होने से अन्य जातियों का रुख हार-जीत में महत्वपूर्ण होगा। पिछले लोकसभा चुनाव में इस सीट पर नरेंद्र सिंह तोमर चुनाव लड़े थे। जीतने के बाद वे केन्द्र में मंत्री भी बने। कुल वोट 11 लाख 38 हजार 734 थे। कुल प्रतिशत 61.96 प्रतिशत रहा था। इस बार मतदान प्रतिशत गिरा है। लेकिन, कुल डाले गए वोटों में बड़ा बदलाव नहीं है। नरेन्द्र सिंह तोमर एक लाख तेरह हजार से अधिक वोटों से चुनाव जीते थे। रामनिवास रावत से उनका मुकाबला हुआ था। रावत को चुनाव के बीच भाजपा ने कांग्रेस से तोड़ लिया। वे विजयपुर से विधायक हैं। इसके बाद भी भाजपा की जीत सुनिश्चित नहीं मानी जा रही।

ग्वालियर में कांग्रेस के प्रवीण पाठक का मुकाबला भाजपा के भारत सिंह कुशवाहा से है। इस संसदीय सीट के शहरी क्षेत्र में भारत सिंह कुशवाहा की पहचान न होने से भाजपा मुश्किल में हैं। वहीं प्रवीण पाठक का शहरी क्षेत्र में मजबूत नेटवर्क है। इसका फायदा उन्हें मिल सकता है। यहां मतदान प्रतिशत पिछले चुनाव की तुलना में अधिक हुआ है। पिछले चुनाव में मतदान का प्रतिशत 59.82 प्रतिशत रहा था। कुल 11 लाख 96 हजार 888 वोट डाले गए थे। इस बार कुल 13 लाख 38 हजार 708 वोट डाले गए हैं । लगभग डेढ़ लाख वोट ज्यादा डाले हैं। इस कारण भी बदलाव की बात हो रही है। पिछले चुनाव में भाजपा के विवेक शेजवलकर लगभग डेढ़ लाख वोट से ही चुनाव जीत पाए थे। वो भी सर्जिकल स्ट्राइक के मुद्दे के बाद ।

ग्वालियर-चंबल अंचल के अलावा भोपाल संभाग की तीन लोकसभा सीटों पर भी तीसरे चरण में वोट डाले गए थे। ये सीट विदिशा,भोपाल और राजगढ़ हैं। विदिशा से शिवराज सिंह चौहान मैदान में हैं। राजगढ़ में दिग्विजय सिंह चुनाव लड़ रहे हैं। भोपाल, भाजपा की मजबूत सीट मानी जाती है। भाजपा ने इस सीट पर पूर्व महापौर आलोक शर्मा को टिकट दी थी। टिकट मिलते ही उन्होंने अपनी दिल्ली जाने की तैयारी शुरू कर दी थी। कांग्रेस से अरुण श्रीवास्तव उम्मीदवार है। उनका संपर्क ग्रामीण क्षेत्र में मजबूत माना जाता है। भोपाल में परिणाम तय होने का असर मतदान के प्रतिशत पर पड़ा है। यहां 14 लाख 98 हजार से अधिक वोट डाले गए हैं। कुल प्रतिशत 64.06 रहा। पिछले चुनाव में 65.74 प्रतिशत वोट डाले गए थे। तीसरे चरण में सागर और बैतूल सीट पर भी वोट डाले गए थे।

एग्जिट पोल पर सीएम-वीडी बोले

रुझान आनंददायक हैं, रिजल्ट और बेहतर होगा

भोपाल (नप्र)। लोकसभा चुनाव के एग्जिट पोल को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा ने आशा के अनुरूप बताया है।

म.प्र. में हम सभी 29 सीटें जीत रहे हैं: डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री- प्रधानमंत्री के नेतृत्व में हमारा अभियान चला था फिर एक बार मोदी सरकार। जो रुझान आ रहे हैं, वो अत्यंत आनंददायी हैं। यद्यपि रिजल्ट के बाद जो आनंद आता है, उसकी अलग बात रहती है। हम सभी 29 सीटें जीत रहे हैं। हमने जो कहा था, करके दिखा दिया है।

लोग कहेंगे- एक थी कांग्रेस: वीडी शर्मा, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष- एग्जिट पोल में चुनाव परिणाम की झलक दिख रही है। एग्जिट पोल से भी बेहतर एक्जेक्ट पोल आएंगे। 4 जून के बाद जनता कहेगी - एक थी कांग्रेस। भाजपा सभी 29 सीटों पर विजय हासिल करेगी। लोगों ने मोदी को पीएम बनाने के लिए वोट दिया है।

गुपचुप जमा करा रहे थे महंगी किताबें, स्कूल पर छापा

जबलपुर में पेरेंट्स को मैसेज कर बुलाया ; एसडीएम बोले- ये सबूतों से छेड़छाड़

जबलपुर (नप्र)। कॉपी-किताब पर कमीशन और स्कूल फीस बढ़ाने पर घिरे जबलपुर के स्टेमफील्ड स्कूल मैनेजमेंट का नया कारनामा पकड़ा गया है। स्कूल मैनेजमेंट रविवार को स्कूल खोलकर हिंदी ग्रामर बुक जमा करा रहा था। पेरेंट्स को बकायदा मैसेज कर सुबह 10 से दोपहर 12 बजे तक बुक के साथ आने को कहा गया था।

कलेक्टर दीपक कुमार सक्सेना तक इस बात की शिकायत पहुंची। उन्होंने शिक्षा विभाग और पुलिस की टीम गठित कर मौके पर भेज दी। अधारताल एसडीएम शिवाली सिंह ने स्कूल में रेड की। टीम को देखकर स्कूल मैनेजमेंट के होश उड़ गए। मौके से 6वीं, 7वीं और 8वीं क्लास की 35 बुक जब्त की गई हैं।

एसडीएम का कहना है कि मामला कोर्ट में है, इसके बाद भी स्टेमफील्ड स्कूल मैनेजमेंट ने पेरेंट्स को बुक्स जमा कराने के मैसेज किए। यह बताता है कि स्कूल मैनेजमेंट जांच के दौरान सबूत के साथ छेड़खानी की कोशिश कर रहा है।

स्कूल का संचालक फरार

जबलपुर शहर के 11 स्कूलों के खिलाफ अधिक फीस वसूली और बिना आईएसबीएन नंबर की किताब चलाने की जांच चल रही है। जांच के दायरे में स्टेमफील्ड स्कूल भी है। जिला प्रशासन ने स्कूल पर 2 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया था। स्टेमफील्ड स्कूल के संचालक अभी भी फरार हैं। पुलिस उनकी तलाश कर रही है।

पेरेंट्स पर दबाव बनाकर बुलाया गया

एसडीएम के मुताबिक, पूछताछ के दौरान अभिभावकों ने बताया कि पिछले दो दिन से स्कूल मैनेजमेंट मैसेज और कॉल कर उन्हें स्कूल आने का कह रहा था। पेरेंट्स ने मैसेज और स्कूल के जरिए किए गए कॉल की जानकारी दी है। हिंदी ग्रामर की किताबें जब्त की गई हैं, कलेक्टर को रिपोर्ट दी जाएगी, इसके बाद वे आगे की कार्रवाई करेंगे।

अभिभावक ने बताया कि शनिवार की रात उन्हें स्कूल की ओर से कॉल आया था। हिंदी ग्रामर की बुक की कीमत साढ़े चार सौ रुपए से ज्यादा है।

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के हाथी कैंप का हाथी प्यास बुझाने हैंडपंप के पास पहुंचा

सूंड में भरकर पीया पानी

नर्मदापुरम (नप्र)। भीषण गर्मी से इंसान ही नहीं, जानवर, वन प्राणी भी बेहाल हैं। गर्मी से निजात पाने तमाम प्रयास कर रहे हैं। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढ़ई से हाथी का हैंडपंप पर पानी पीने वाला वीडियो सामने आया है।

भीषण गर्मी में नल के पानी से हाथी अपने कंठ को गीला करते हुए वीडियो में दिखाई दे रहा है। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में गार्ड द्वारा हैंडपंप को चलाकर हाथी को पानी पिलाया गया। सूंड में पानी भरकर हाथी ने अपनी प्यास को बुझाया। हाथी का ये वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। एसडीओ अंकित जामोद ने बताया हाथी कैंप का वीडियो है। कैंप के पास ही एक हैंडपंप है। जहां हाथी को पानी पिलाने के लिए लाया गया था।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

साय सरकार का अनूठा प्रयोग

कहते हैं ज्ञान कहीं से भी प्राप्त हो लेना चाहिए। इसी का अनुसरण करते हुए छत्तीसगढ़ की साय सरकार ने 31 मई और एक जून को रायपुर के भारतीय प्रबंध संस्थान में जाकर कई तरह के ज्ञान अर्जित किए। साय सरकार ने भारतीय प्रबंध संस्थान में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम को चिंतन शिविर का नाम दिया। वैसे तो पिछली सरकारों ने भी चिंतन शिविर जैसे आयोजन किए, पर तब बाहर से कोई विशेषज्ञ नहीं बुलाए गए थे। साय सरकार द्वारा आयोजित चिंतन शिविर में बाहर से विद्वान आए। नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रमण्यम, नीति आयोग के पूर्व सीईओ अमिताभ कांत, आईआईएम अहमदाबाद के विशेषज्ञों ने मुख्यमंत्री और राज्य के मंत्रियों का ज्ञानवर्धन किया। छत्तीसगढ़ को नई दिशा देने के लिए दिमागी कसरत चली तो मुख्यमंत्री और राज्य के मंत्रियों ने सेहत के लिए योगाभ्यास भी किया। दो दिन के इस आयोजन में छत्तीसगढ़ में विकास की संभावनाओं पर तो बात हुई ही, साथ में विकसित छत्तीसगढ़ के विजन को समाज के सभी वर्गों तक ले जाने के मुद्दे पर भी मनन हुआ। सुशासन पर भी बात हुई। सबसे बड़ी बात रही कि निर्णय लेने वाले छात्रों जैसे विशेषज्ञों की बातें सुनते रहे। नीति निर्धारकों के विद्वानों से ज्ञान अर्जन के प्रयोग को अनूठा माना जा रहा है। अब इसका लाभ आने वाले समय में जनता को किस तरह और कैसा मिलता है, यह तो आने वाले समय में ही पता चलेगा।

चार जून का इंतजार

लोकसभा चुनाव के नतीजे चार जून को आने शुरू हो जाएंगे। इस कारण सभी को चार जून का इंतजार है। चार जून को सुबह आठ बजे से मतगणना शुरू हो जाएगी। वैसे एक जून की शाम से एक्जिट पोल भी आने लग गए। कांग्रेस ने एक्जिट पोल के दौरान होने वाले डिबेट का राष्ट्रीय स्तर पर बहिष्कार कर दिया है। एक्जिट पोल के जो भी नतीजे हो, लोगों को मतगणना के बाद के नतीजों का ज्यादा इंतजार है। छत्तीसगढ़ के 11 सीटों के नतीजों को लेकर लोगों में जिज्ञासा है। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस और भाजपा जीत को लेकर अपना-अपना दावा कर रहे हैं। भाजपा सभी 11 सीटें जीतने का दावा कर रही है तो कांग्रेस भी 4-5 सीटों पर टकटकी लगाए हुए है। परिणाम चाहे जो भी हो, शुभचिंतकों ने तो रायपुर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल को जीत की अग्रिम बधाई देनी शुरू कर दी है। एक शुभचिंतक ने तो बृजमोहन अग्रवाल को अग्रिम बधाई देते होर्डिंग्स भी लगा दिया है।

एक्टिव गृहमंत्री

छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा को एक्टिव गृहमंत्री कहा जा रहा है। वैसे भी विजय शर्मा ने जब से गृह विभाग संभाला है, लोगों की जुबान पर गृह विभाग की चर्चा होने लगी है और लोगों को गृह विभाग की अहमियत भी समझ में आने लगी है। गृह मंत्री के नाते विजय शर्मा किसी भी घटनास्थल पर पहुंच जाते हैं। नक्सलियों से बातचीत का प्रस्ताव और उनसे ही बातचीत का आधार तय करने की पेशकश भी चर्चा में है। विजय शर्मा मीडिया के लिए भी आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। आमतौर पर वे मीडिया में अपनी बात कहते रहते हैं।

अनिल साहू का कद बढ़ा

1990 बैच के आईएफएस अनिल साहू को सरकार ने छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ का प्रबंध संचालक बनाया है। श्री साहू अब तक राज्य अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं जलवायु परिवर्तन में प्रधान मुख्य वन संरक्षक की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। यहां कोई खास काम था नहीं, लेकिन राज्य लघु वनोपज संघ के प्रबंध संचालक के दायित्व को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस नाते देखें तो अनिल साहू का कद अब बढ़ गया है। कहा जा रहा है कि भाजपा सरकार में तेंदूपत्ता संग्राहकों का मानदेय बढ़ने के साथ वनवासियों के हित में कई काम होने हैं। यह काम लघु वनोपज संघ के मार्फ़त होने हैं। इसमें अनिल साहू की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। पहले माना जा रहा था कि माना जा रहा है आचार सहिंता खत्म होने के बाद लघु वनोपज संघ में प्रबंध संचालक की नियमित पोस्टिंग होगी। तब तक किसी को प्रभार सौंप दिया जाएगा, लेकिन सरकार आचार सहिंता खत्म होने से पहले ही अनिल साहू को नियमित प्रबंध संचालक बना दिया।

क्या होगा भगवाधारी कांग्रेसियों का

लोकसभा चुनाव के कुछ पहले और चुनाव के दौरान कई कांग्रेसी दलबदल कर भाजपा में चले गए। मजेदार बात तो यह है कि 2018 से 2023 तक जोगी कांग्रेस के विधायक रहे एक नेता विधानसभा चुनाव के वक्त जोगी कांग्रेस छोड़कर कांग्रेस में गए थे और लोकसभा चुनाव के वक्त भाजपा में आ गए। सवाल उठाया जा रहा है कि लोकसभा चुनाव बाद दलबदल कर भाजपा में आए पुराने कांग्रेसियों का क्या होगा? भगवा गमछा पहनने वाले कुछ पुराने कांग्रेसी हरियाणा जाकर कांग्रेस की प्रत्याशी के खिलाफ ढ़ोल बजा आए हैं। पुराने कांग्रेसियों के चुनावी राग से कांग्रेस की प्रत्याशी को नुकसान होता है या फायदा यह तो चार जून को पता चल जाएगा, पर भगवाधारी कांग्रेसियों का भविष्य तो समय के साथ ही पता चलेगा। कांग्रेस के एक पूर्व मंत्री ने भगवाधारी कांग्रेसियों को इलेक्शन मटेरियल तक कह दिया, हालांकि इस पर भाजपा ने पटलवार कर कांग्रेसियों को आगे वार करने नहीं दिया।

चुनाव बाद प्रशासनिक हेरफेर के कयास

माना जा रहा है कि लोकसभा चुनाव खत्म होने के बाद जून के दूसरे हफ्ते में व्यापक प्रशासनिक फेरबदल हो सकता है। कई जिलों के एसपी और कलेक्टर के साथ मंत्रालय में तैनात अफसर इधर से उधर हो सकते हैं। मंत्रालय में पदस्थ कुछ अफसरों के विभाग बदल सकते हैं। कहा जा रहा है कि मंत्रालय के पदस्थ कुछ अफसरों के विभाग कम किए जा सकते हैं। चर्चा है कि कुछ अफसरों से विभागीय मंत्रियों की पटरी बैठ नहीं पा रही है , उनका विभाग बदला जा सकता है। कहते हैं छोटे और बड़े दोनों स्तर के जिलों के कलेक्टर और एसपी के जिले बदल सकते हैं या मंत्रालय-पुलिस मुख्यालय में आ सकते हैं।

ईडी की जाल में फंसे कारोबारी

बड़े दिनों से एक कारोबारी ईडी और आयकर विभाग के जाल से बच रहे थे, लेकिन पिछले दिनों आखिरकार ईडी के फेर में फंस ही गए। कहते हैं ईडी ने कारोबारी की जमकर क्लास ली। कारोबारी को गिरगिट की तरह रंग बदलने में माहिर माना जाता है। चर्चा है कि भाजपा शासन के 15 साल के कार्यकाल में कारोबारी खेल संघों के मार्फ़त सरकार के नजदीक रहे। कांग्रेस की सरकार आई तो झट से पाला बदल कर कांग्रेस के करीबी हो गए। एक अफसर को पकड़कर सत्ता में तैरते रहे। फिर जब 2023 में भाजपा की सरकार आई तो पलटी खाने की कोशिश की, पर बात बन नहीं पाई और ईडी के जाल में फंस ही गए।